एक कम्युनिस्ट का जन्म
(नाटक)

पात्र-परिचय

१ परमुपिल्ला : उम्र ५०-६० के बीच।
एक बर्बाद नायर-परिवार का मुखिया।

२ गोपालन उम्र प्राय २५ वर्ष।
परमुपिल्ला का पुत्र, किसान का नेता।

३ कल्याणी उम्र ४५ वर्ष।
परमुपिल्ला की पत्नी।

४ मीना . उम्र १० वरस।
परमुपिल्ला की पुत्री।

५ माथ्यू मध्यवयस्क, कम्युनिष्ट पार्टी का स्थानीय नेता।

६ करम्बन ५० वरस।
हरिजन खेत मजदूर।

७ माला १८ वरस।
करम्बन की पुत्री।

८ केशवन नायर ४५ वरस।
इलाके का जमीदार।

९ सुमम १७ वरस।
केशवन नायर का करिन्दा।

१० येलु : ५० बरस।
केशवन नायर का करिन्दा।

११ पप्पु : ४५ बरस।
कास्तकार।

मलयालम का अत्यन्त प्रसिद्ध नाटक

एक कम्युनिस्ट का जन्म

तोप्पिल भासी

अनुवादक श्री लक्ष्मन शास्त्री

१९७१

मूल्य ५.५०

प्रकाशक
अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
२/३६, अन्सारी रोड, दरियागज, दिल्ली-६

मुद्रक न्यू इण्डिया प्रेस,
कनाट प्लेस,
नई दिल्ली।

[धरवाद परिवार के बुजुर्ग परमुपिल्ला के घर के सामने का भाग। गोबर से लीपापोता चबूतरा। एक किनारे एक पुरानी बिना बुनी कुर्सी पडी है। कुर्सी मे बैठने की जगह लकडी का पट्टा रखा है। कई जगह से रस्सी बंधी होने के कारण वह अब भी बैठने के काम मे आती है। सामने एक किनारे, जमीन से ऊपर मिट्टी के एक छोटे बर्तन मे अग लेपन का भस्म रखा हुआ है। उसके पास ही उनके स्वर्गवासी बडे मामा के चरण से लिये चरण-चिह्नो वाला लकडी का एक टुकडा स्मारक के तौर पर लटकाया हुआ है। पूर्व-पश्चिम के कोने मे, कपडे सुखाने के लिए लगाये बेंत पर एक कौपीन सूखने के लिए फैला हुआ है।

पक कर गिरे नारियल का पत्ता खींच कर लाते हुए परमुपिल्ला आगन मे प्रवेश करते हैं। उनकी आयु ५०–६० के बीच होगी। दुबला शरीर। जिस तरह किसी बोरे में बन्द गीले बीज की जडें उस बोरे से बाहर दिखाई देती हैं, उसी तरह करीब-करीब समूचे गजे सिर और चेहरे पर छोटे-छोटे पके बाल निकले हुए हैं। चेहरे पर असतोष के निशान दिखाई देते हैं। एक सफेद लुगी और गमछा पहने हुए हैं। गमछा लुंगी से भी मैला है। समय ८ बजे सुबह।]

परमु: अरी...अरी...(अपनी पत्नी को लम्बी आवाज मे बुलाते हैं)।
(पत्नी, कल्याणी अन्दर से सविनय आवाज देती है—क्या है?)

परमु: (नीरस भाव से) तुम कर क्या रही हो वहाँ? तुम्हें रसोई से बाहर आने की फुर्सत ही नहीं है क्या? (नारियल का पत्ता आगन मे छोड़ कर, अगोछे से मुँह और माथा पोछकर चबूतरे पर चढते हुए) हाते में कहीं नारियल का पत्ता गिरा हो, तो उसे उठा ले आने के लिए एक भी आदमी नहीं है। मकान की छत पारसाल भी नहीं बनवाई गई। हालत उसकी कुछ ऐसी हो रही है कि अगर कौए ऊपर से बीट कर दें तो गिरेगी आकर मुँह पर ही, इसकी चिन्ता है तुम्हें? (कुर्सी पर

बैठने की लकड़ी यथास्थान रखकर और उस पर बैठते हुए) ।
(अन्दर से पत्नी आवाज देती है--आ रही हूँ।)

परमु : (गुस्से मे आकर) तुम अन्दर इतना चक्कर क्या लगा
तुम्हारे ही लच्छनों से यह सब हो रहा है। देख नहीं
(कल्याणी प्रवेश करती है। शरीर उसका फाकाकशी मे
बिना सवारे हुए बाल। कुछ ऐसा लगता है कि
बुढापा आ गया है। बदन पर एक मैली-कुचैली लुगी औ
ढग का ब्लाउज है। पत्नी के आने पर भी, बिना गौर किये
कहते जाते है) कहते भी है न कि "जैसा चाहा वैसा भया" !
एक प्राणी भी सीधा-साधा है ! मैं यो क्यो फिजूल बक
अगर मैं बात साफ कहूँ तो उसे न माँ पसन्द करती है, न

कल्याणी : आपने मुझे क्यों बुलाया था ?

परमु : (गुस्से से उसकी ओर ताकते हुए) जाओ उस तरफ। तुम्हें
अरी, तुमसे कुछ कहने से क्या लाभ ?

(पडोस के घर का पप्पु प्रवेश करता है। मेहनत से काला बदन, लेकिन पर्याप्त भोजन न मिलने से कमजोर। पैंतालीस वर्ष की आयु। सिर्फ एक लुंगी पहना हुआ है। छाती पर कमकर बाँधे हुए हैं। धीरे-धीरे चलकर आगन करता है मानो यो ही ठाले बैठे पडोस मे कुछ बातचीत ह अकारण आ गया हो।)

परमु : बरबाद हो गया, बरबाद हो गया ! अब इससे ज्यादा
होना बाकी है ? जैसे तुम्हारा मन है वैसी करनी भी है। ।
अच्छा खासा चलता रहा है यह परिवार--यह किसी को
को जरूरत नहीं। (पप्पु आगन मे एक किनारे हटकर इस प्र
है, मानो कोई व्याख्यान सुन रहा है। कल्याणी चेहरे पर
प्रकार का असाधारण भाव प्रकट किये खडी है।) जो
सब भोग लो। जिन्हें भोगना है, उनसे खास तौर पर कहने

. बार गौर से

ही बेवकूफ हूँ,

मे देखते हुए)

हो ? कुछ और

कल्याणी आंगन में

।)

जानते हो न कि यह

अष्टमुखी (आठ-

है कि सिर्फ एक

। में यही बात

क्यों नहीं रहे

से ही इस ओर

से बचा-

गोशाला में कई-

जैसे वे कल

) हाँ, उन दिनों

हमारे ताकाब

गौएँ गोशाला

गोशाला

से उत्तरवाले

में सिर्फ

) अरी

[illegible]

[illegible]

घोड़े को तुमने देखा है क्या ?

पप्पु : मुझे याद नहीं है, लेकिन पिताजी को कहते सुना है।

परम् : हां, देखने लायक घोड़ा था वह ! उन दिनों एकदम छोटा था। ये कार-वार वगैरह तब नहीं थी। फिर, (परमुपिल्ला की बेटी मीना प्रवेश करती है। दस बरस की कोमल लडकी। एकाएक लडकी को देखकर जो बात कहना चाहते थे, उसे रोक कर,लडकी से—)क्या है बेटी ?

मीना : पिता जी मुझे क्यों बुलाया था ?

परम् : (याद करते हुए) हां, मैंने बुलाया था। जाकर जरा पानदान तो इधर उठा ला बेटी !

परम् : (फिर अपने विषय पर लौट आने की कोशिश करते हुए) हां, अब *(मीना जाती है)* फिर *(अपनी बात भूल जाने से फिर उसका स्मरण* करते हुए) पप्पु, हम लोग क्या बात कर रहे थे ?

पप्पु : घोड़े की बात, मालिक !

परम् : (मानो एकाएक कोई बात याद आ गई हो) हां, घोड़े की बात ! फिर हमारे दक्खिन के बड़े कारिन्दे, आजकल के नहीं, उनसे भी पहले वाले कारिन्दे ने कचहरी या और कहीं जाने के लिए घोड़ा मांगा। वह भी अजीब आदमी थे ! शानदार सवारी करने वाले आदमी। बड़े मामा ने कहा, तुम मेरे घोड़े पर सवार हो जाओगे तो वापस घर नहीं पहुँच पाओगे ! आखिर हुआ क्या ? थोड़ी भी दूर जाने नहीं पाये थे कि घोड़े ने उन्हें नीचे गिरा दिया। (ऐसे जोर से हँसते हैं मानों उस दृश्य को आँखों के सामने देख रहे हो) यह बात किसी ने बतायी थी मुझे। वह बहुत ही भाग्यशाली व्यक्ति थे !

(मीना बिना ढक्कन का और चूना लगा पानदान लेकर आती है और उसे अपने पिता के सामने रख देती है।)

मीना : तम्बाकू तो नहीं है, पिताजी।

परम् : (गुस्से में आकर) फिर यह यहां क्यों उठा लायी ? उसके (कल्याणी

से अभिप्राय) सिर पर ले जाकर रख !

पप्पु : बच्ची वहाँ (अपने के घर से अभिप्राय) जाकर नाणो से कहना कि कुछ तम्बाकू दे दो। कहना कि मैंने कहला भेजा है।

(मीना मुँह फुलाकर चली जाती है।)

परम् : (मानो कही हुई बात को आगे कह रहे हों) वह जमाना सब गुजर गया पप्पु ! सच्चाई और दान-धर्म सब संसार से उठ गया है। अब छुआ-छूत, आदर-सम्मान कुछ भी बाकी नहीं है। इससे भी खराब जमाना आनेवाला है।

पप्पु : ये सब बातें किसी एक घर में ही नहीं हो रही हैं। बड़े परिवारों में से ऐसा कौन परिवार है, जो बरबाद नहीं हुआ है ?

परम् : बात तो ठीक है। इसीलिए तो मैंने कहा कि दान-धर्म वगैरह का ससार से उठ जाना ही उसका कारण है। फिर कलियुग भी तो आ गया है। सब कुछ खत्म हो ही जाना है।

पप्पु : कुछ तो होकर ही रहेगा। इन्सान के लिए जीने का कोई जरिया ही नहीं रह गया है। किसानों में कोई जागृति नहीं है। खेती करो, कर्ज से तबाह हो जाओ। क्या यह सब खत्म हुए बिना काम चलेगा ? क्या कहते हैं आप ?

परम् : ऐसी कौन-सी चीज है, जो बरबाद नहीं हुई है, पप्पु ? जमाना ही ऐसा आ गया है कि पैसे वालों की बात को कोई सुनने वाला ही नहीं रह गया है। अब तो सब मालिक ही मालिक हो गये हैं। पप्पु, तुम ही सोच के देखो, अब राजा भी कोई है ? यदि कोई कुछ कहे, तो उसका विरोध करने के लिए सौ लोग मौजूद हैं। पुराने जमाने में कोई ऐसी बात थी ? हमारे यहाँ के ग्यारह इलाकों के स्वामी बड़े मामा थे। उन दिनों जो बात वह कहते, वही चलती थी। और अब ! मेरी बात (चारों ओर इस अभिप्राय से देख कर कि कोई सुन रहा हो) मेरी पत्नी और बच्चे तक नहीं सुनते ! जमाना ऐसा आ गया है कि "मुर्गी से बड़ी अक्ल है उसके बच्चों की !" आपस में लड़कर सिर फोड़ कर

बरबाद होंगे। (स्वयं सान्त्वना पाने के अभिप्राय से), हाँ, गीता में कहा भी है कि कलियुग में यह सब होकर ही रहेगा।

पप्पु अभी हाल ही में एक सज्जन ने हमारे मैदान में भाषण करते हुए कहा था कि किसानों को फायदा होने वाला है।

परमु इसी से बरबादी है। ये भाषण और जत्थेबन्दी जब से शुरू हुए, तभी से बरबादी भी शुरू हो गयी। अरे, तुम्हारे, हमारे जमाने में यह कुछ था? क्या यह कांग्रेस थी! या कम्युनिस्ट? (अन्दर की ओर देख कर पत्नी को बुलाने से तात्पर्य) अरी! मीना अभी आई या नहीं?

कल्याणी (अन्दर से) नहीं! (जोर की आवाज में मीना को बुलाती है) अरी मीनाक्षी!

परमु (उसकी आवाज को बिगाड़ कर नकल करते हुए) ऊँ, तुम्हारी बेटी है न? (मुड़ कर पप्पु से) जिनके पास थोड़ी कुछ सम्पत्ति है, उनकी खुशामद करना ही आजकल रिवाज हो गया है न? (हमदर्दी के साथ) अरे पप्पु! तुम्हारे पास कुछ न होना और मेरे पास जो कुछ था, वह सब बरबाद हो जाना, और दूसरे किसी के पास सम्पत्ति इकट्ठी हो जाना, इस सब का क्या कारण है? (ईश्वर का ध्यान करते हुए) यह सब उसकी मर्जी है। (भक्तिपूर्वक आँख ऊपर करके) सब उसकी मर्जी के मुताबिक होगा!

पप्पु सब चीजों के लिए ईश्वर की कृपा चाहिए।

परमु हाँ, भाई!

पप्पु लेकिन फिर भी ये पैसेवाले ही सब गड़बड़ करते हैं।

(परमुपिल्ला को यह बात जँची नहीं।)

पप्पु काश कि अपनी भी थोड़ी सी जमीन होती। यह बात मैं हमेशा से खुद सोचता आया हूँ। औरों की जमीन में दिल लगाकर मेहनत नहीं की जा सकती। जमीन ठीक करने पर वे ज्यादा लगान की माँग करने लगेंगे, और नहीं दिया तो जमीन छिन जायेगी। (लम्बी साँस लेकर) हमारी मेलेपाड़ वाली जमीन कैसी उमदा बन गई थी!—

कितना पैसा उसने फूक दिया ?

परम् यह तो ठीक है। यह सारी जमीन किसी जमाने में घोंडू मामा के कब्जे थी, यह तुम जानते हो ?

(मीना तम्बाकू लेकर प्रवेश करती है। परमुपिल्ला पान हाथ में लेते हैं।)

मीना पिताजी, माँ कहती है कि कञ्जी[1] खा लेने के बाद पान खा लीजिये।

परम् एँ !

मीना कञ्जी खा लेने के बाद पान खाना।

परम् (पान पानदान में डालकर) तो, यह दें बेटी कि दे दे। तुम्हें भी दे दें। (पप्पु से) पप्पु तुमने कुछ नाश्ता-वाश्ता किया ?

पप्पु कल रात की बची कुछ कञ्जी थी। उसीको खा डाला, कुछ सहारा नहीं है। भूख से तडपकर मर जायेंगे। किसी की जमीन में मेहनत करने से फाके से थोडे ही छुटकारा मिलने वाला है। फिर क्या है ? बात यह है कि बेकार हाथ पर हाथ धरे बैठना पप्पु से नहीं बन पडता। इसीलिए मेहनत करता जाता हूँ। कम-से-कम पुआल तो मिलेगा !

परम् आगे आनेवाले जमाने में जमीन लगान पर लेकर काम नहीं चला सकता, पप्पु। ऐसा कौन है, जिसके पास मन दो मन धान की जमीन है ? एक दो घरवाले ही हैं। ईश्वर की कृपा से वे लोग नयी-नयी जायदाद खरीद कर इकट्ठी करते जाते हैं।

(कल्याणी चेपी लगे हुए अलूमिनियम के एक लोटे में पानी लाकर चबूतरे पर एक ओर रखकर अन्दर चली जाती है।)

पप्पु (नाराजगी प्रकट करके) पैसेवालों को तो और भी दौलत बटोर कर इकट्ठी करने की ही रहती है। यों तो कम्युनिस्टों की बात सही है।

---

1 कञ्जी खूब पानी डालकर पकाये पानीदार चावल को कहते हैं। इसे चावल का दलिया भी कह सकते हैं।

परम् (इस अभिप्राय से कि बात जची नही) इन सबों के मत का आ जाना ही बरबादी का कारण है। (काफी गम्भीरतापूर्वक पप्पु को बात समझाने के अभिप्राय से) दस रुपये रखने वाले को उसे ग्यारह बनाने की फिक्र होगी। इसमें उसका कसूर भी तो नहीं है। (उठकर हाथ धोने के लिए लोटा हाथ मे ले लेते है। लोटे मे चेपी लगी देख कर) वाह! इसमें भी चेपी कर दो! जिस घर में ऐसी औरतें रहती हैं, वहाँ फिर बरकत कैसे होगी। कितने बर्तन थे इस घर में! सुबह होते ही दीदी उन्हें मांज-पोंछ कर कतार में रख देती थीं! (पिछले जमाने का स्मरण कर खुशी का अनुभव करते हुए) सोने के जैसे चमकते बर्तन! पप्पु, तुमने दीदी को देखा है?

(कल्याणी थाली मे कजी लेकर प्रवेश करती हुई मीना से कहती "अरी वह पीठ उठा कर ले आ" मीना कुर्सी मे रखी लकडी उठाकर बैठने के लिए जमीन पर रख देती है। कल्याणी इस अभिप्राय से कजी का बर्तन हाथ मे पकडे खडी है मानो पति के बैठने से पूर्व ही उसे जमीन पर रखना अनुचित है।)

पप्पु: धुन्धली-सी याद है।

(मीना पान लेकर पप्पु को देती है। पप्पु दोनो हाथ फैला कर बिना छुए पान ले लेता है।)

परम्: (हाथ धोकर वापिस आकर) कितनी भाग्यवती देवी थी वह! वह चल बसी और बस बरबादी भी शुरू हो गई। उसके हाथ का पकाया कितना चावल मैंने खाया है, पप्पु! उसीके फलस्वरूप कम-से-कम इस तरह से भी गुजारा कर रहे हैं। किसी घर की खुशहाली उस घर की देवियाँ ही होती हैं। कहते भी हैं न कि "गृहलक्ष्मी"।

पप्पु· (यह समझकर कि बात खतम करने का इरादा नहीं है, बात मे दखल देते हुए) कजी खा लीजिये न? फिर बात कर सकते हैं।

परम्. हां,—लायीं? (पीठ पर जाकर बैठने लगते हैं। रस्मी तौर पर पप्पु से) तो, तुम्हें कजी नहीं खाना है?

(कल्याणी कंजी और चटनी सामने रखती है।)

पप्पु : नहीं। मैं जरा बाहर निकलता हूँ। गाय को जरा दूसरे खूंटे पर बांध दूं।

परमु : तो खाना शुरू करने से पहले चले जाओ न।

(पप्पु पान खाकर चला जाता है। परमुपिल्ला पीठ कर बैठकर कंजी खाना शुरू करते है।)

परमु : (मीना से) तुमने खा लिया, बेटी ?

मीना : खा लिया, पिताजी।

परमु : थोडी और खा लो बेटी।

मीना : नहीं पिताजी, मैं खा चुकी।

परमु : नहीं, नहीं, तुम खेलने-कूदने वाली लड़की हो न ? थोड़ी और खा लो। (कटहल के पत्ते को मोड कर उससे खाना शुरू करके)—यह क्या चीज है ? कुटा गेहूँ है क्या ?

कल्याणी : दूकान में यही मिला है !

परमु : (नफ़रत के साथ) तुम्हारे जाने पर और कोई अच्छी चीज भी मिलेगी ! (खाना शुरू करते हैं। कुछ खाने के बाद चटनी चाट कर) तुम्हारा लड़का कहाँ है ? सबेरे ही घूमने निकल गया क्या ?

मीना : भैया आज उठे ही नहीं, पिताजी।

(कल्याणी इस अभिप्राय से मीना की ओर देखती है कि उसने यह बात क्यो कही। मीना चेहरे पर अपराधी भाव लिये खडी है।)

परमु : (एकदम गुस्से मे आकर) यो ही बरबाद थोडे ही हो रहे हैं ! सूरज चढ़ जाने पर भी उठेगा नहीं। उसे कौन-सा ऐसा बडा भारी काम है ? तीनो वक्त यदि खाने के लिए मिले, तो और किसी काम के लिए भी कभी वह घर पर दिखाई देगा ? पौ फटने तक किसी चौवन या पुलयन[1] के घर चक्कर काटता रहेगा और घर आने पर दिन

---

१ पुलयन, कारवन आदि केरल की अस्पृश्य जातियाँ हैं। ये लाग आम तौर पर खेत-मजदूर होते हैं। चौवन इनसे कुछ ऊँचे होते है।

चढ़ने तक सोया करेगा। उसकी भी एक जमात है! उसके जमात बनाने ही पर सबको खाना नसीब होने वाला है! (मानो कटु बात कह रहे हो) बच्चे अच्छे वक्त पर पैदा होने चाहिए। (गुस्से मे आकर कजी खाते हैं और चटनी चाटते हं।)

कल्याणी (कुछ विषाद और दु ख के साथ) मुझ से क्या करने के लिए कह रहे हं आप? हर चीज की दोषी मैं ही हूँ क्या?

परमु. (उल्टे अर्थ मे) नहीं, मैं हूँ।

कल्याणी: (उसी अर्थ मे) नहीं, मैं हूँ।

परमु (उसी अर्थ मे दृढतापूर्वक) नहीं, नहीं, गुनाहगार मैं हूँ। यह सब मेरी ही गलती है। उसे जाकर जगाओ न और पेट भर के छोड़ दो। गाँव के जो अच्छे-खासे लोग हे, उन सबको गालियाँ देने दो उसको! मैं यह सब क्यो बक रहा हूँ! तुम्हें अभी और भुगतना बाकी ही है। (जोर देकर) मेरी बात का जहाँ तक ताल्लुक है, उसकी तो तुम लोगो को परवाह करने की जरूरत नहीं है। (फिर खाते हैं।)

कल्याणी: मैं उससे कहूँ ही क्या! घर में जो कुछ है, उसमें से एक हिस्सा उसे भी दिये बिना मेरा मन मानेगा? उसे बुलाकर जरा समझा-बुझा नहीं सकते?

परमु: (कजी खाने के बाद थाली नीचे रखकर उठते हुए) समझाना-बुझाना! वह तो मुझे समझाने-बुझाने पर तुला हुआ है! जमाना ही कुछ ऐसा हो गया है। (व्यग्य से) अपना ही लड़का क्यों न हो, बाप के बराबर होने पर उसे भी 'आप' कहकर बुलाना होता है!

(मीना थाली उठाकर ले जाती है। परमुपिल्ला हाथ धोते हैं। कल्याणी पानी छिड़क कर झाड़ा साफ करती है।)

कल्याणी: (अपने आप) सब चीजों के लिए मेरे ही ऊपर इशारे होते हं। राम-राम! मेरी मुसीबत कभी खतम नहीं होगी। आठ बरस की आयु में मुसीबत झेलनी शुरू की थी मैंने। (नाक सिकोड़ कर रोती है।)

परमु: (शान्त होकर कुर्सी पर बैठकर) मैं कहता मेरी ही गलती है। कल

जब मैं बड़े घर गया था, तो केशवन नायर ने गोपालन के बारे में कुछ बातें कहो। गांव में जो अच्छे खासे लोग हैं, उनके बारे में इस तरह कहना और काम करना ठीक बात है ? बड़े, भाग्यवान, आदमी हैं वह ! वह मुझसे कहते हैं—"भाई परमुपिल्ला का लड़का होने के कारण मैं लाचार हूँ ! कुछ भी हो, आखिरकार हम सब घर-बार वाले लोग ठहरे !" गोपालन ने ही यह बात उनसे कहलाई है न ? चार जनों से कुछ अच्छी बात कहलाना कुछ मश्किल होता है ?

कल्याणी : आखिरकार उसने किया ही क्या है ? लड़कों ने यदि कोई बात कही भी है तो उसकी परवाह क्यों की जाती है ? झूठमूठ की बातें करने और लोगों को आपस में भिड़ाने वाले सौ आदमी होंगे।

परमु : अरी ! क्या उसे यह बात सोचनी भी चाहिए ? क्या वह नहीं जानता कि उसके साथवाले लोग विश्वास-योग्य नहीं हैं और गांव के अच्छे लोगों को नाराज नहीं करना चाहिए। उसने क्या कहा ? उसने सभा में यह इलजाम लगाया कि केशवन नायर चोरबाजारी हैं, गरीबों की जमीन छीन लेते हैं, उन्हें पीटते हैं वगैरह। वह ऐसी बातें कर कैसे सकता है ? उसका क्या बिगड़ा है ? केशवन नायर भाग्यवान आदमी हैं ! उन पर जलने से क्या लाभ ? इसके पास दौलत क्यों नहीं है ? जब से इसका जन्म हुआ तभी से सब कुछ बरबाद हो गया है ! इसकी किस्मत में ही कुछ नहीं है।

कल्याणी : (ठोडी पर हाथ दिये, दुःख के साथ) केशवन नायर इससे नाराज है क्या ?

परमु : वह कौन आदमी ! भाग्यवान ! भरे घड़े का पानी कभी छलकता भी है ? उन्होंने कहा कि उन्हें इस पर कोई गुस्सा नहीं है। फिर, इसके दोस्त हैं न ? कभी-कभी यहाँ आने वाला वह ईसाई लड़का ? वही इन सब लड़कों को बहकाकर उन्हें कम्युनिस्ट बनाता है। यह बात उन्होंने कही। उस पर उनकी निगाहें हैं। वह चाहें तो क्या नहीं हो सकता ? मेरी वजह से ही उन्होंने इसे कुछ नहीं किया है। इस

चढ़ने तक सोया करेगा। उसकी भी एक जमात है! उसके जमात बनाने ही पर सबको खाना नसीब होने वाला है! (मानो कटु बात कह रहे हों) बच्चे अच्छे वक्त पर पैदा होने चाहिए। (गुस्से में आकर कढ़ी खाते हैं और चटनी चाटते हैं।)

कल्याणी : (कुछ विषाद और दुःख के साथ) मुझ से क्या करने के लिए कह रहे हैं आप? हर चीज की दोषी मैं ही हूँ क्या?

परमु : (उल्टे अर्थ में) नहीं, मैं हूँ।

कल्याणी : (उसी अर्थ में) नहीं, मैं हूँ।

परमु : (उसी अर्थ में दृढ़तापूर्वक) नहीं, नहीं, गुनाहगार मैं हूँ। यह सब मेरी ही गलती है। उसे जाकर जगाओ न और पेट भर के छोड़ दो। गाँव के जो अच्छे-खासे लोग हैं, उन सबको गालियाँ देने दो उसको! मैं यह सब क्यों बक रहा हूँ! तुम्हें अभी और भुगतना बाकी ही है। (जोर देकर) मेरी बात का जहाँ तक ताल्लुक है, उसकी तो तुम लोगों को परवाह करने की जरूरत नहीं है। (फिर खाते हैं।)

कल्याणी : मैं उससे कहूँ ही क्या! घर में जो कुछ है, उसमें से एक हिस्सा उसे भी दिये बिना मेरा मन मानेगा? उसे बुलाकर जरा समझा-बुझा नहीं सकते?

परमु : (कढ़ी खाने के बाद थाली नीचे रखकर उठते हुए) समझाना-बुझाना! वह तो मुझे समझाने-बुझाने पर तुला हुआ है! जमाना ही कुछ ऐसा हो गया है। (व्यंग्य से) अपना ही लड़का क्यों न हो, बाप के बराबर होने पर उसे भी 'आप' कहकर बुलाना होता है!

(मीना थाली उठाकर ले जाती है। परमुपिल्ला हाथ धोते हैं। कल्याणी पानी छिड़क कर झठा साफ करती है।)

कल्याणी : (अपने आप) सब चीजों के लिए मेरे ही ऊपर इशारे होते हैं। राम-राम! मेरी मुसीबत कभी खतम नहीं होगी। आठ बरस की आयु में मुसीबत झेलनी शुरू की थी मैंने। (नाक सिकोड कर रोती है।)

परमु : (शान्त होकर कुर्सी पर बैठकर) मैं कहता मेरी ही गलती है। कल

जब मैं बड़े घर गया था, तो केशवन नायर ने गोपालन के बारे में कुछ बातें कही। गांव में जो अच्छे खासे लोग हैं, उनके बारे में इस तरह कहना और काम करना ठीक बात है ? बड़, भाग्यवान, आदमी हैं वह ! वह मुझसे कहते हैं—"भाई परमुपिल्ला का लड़का होने के कारण मैं लाचार हूँ ! कुछ भी हो, आखिरकार हम सब घर-बार वाले लोग ठहरे !" गोपालन ने ही यह बात उनसे कहलाई है न ? चार जनो से कुछ अच्छी बात कहलाना कुछ मश्किल होता है ?

कल्याणी आखिरकार उसने किया ही क्या है ? लड़को ने यदि कोई बात कही भी है तो उसकी परवाह क्यों की जाती है ? झूठमूठ की बातें करने और लोगों को आपस में भिड़ाने वाले सौ आदमी होंगे।

परमु अरी ! क्या उसे यह बात सोचनी भी चाहिए ? क्या वह नहीं जानता कि उसके साथवाले लोग विश्वास योग्य नहीं हैं और गाव के अच्छे लोगों को नाराज नहीं करना चाहिए। उसने क्या कहा ? उसने सभा में यह इलजाम लगाया कि केशवन नायर चोरबाजारी है, गरीबों की जमीन छीन लेते हैं, उन्हें पीटते हैं वगैरह। वह ऐसी बातें कर कैसे सकता है ? उसका क्या बिगड़ा है ? केशवन नायर भाग्यवान आदमी हैं! उन पर जलने से क्या लाभ ? इसके पास दौलत क्यों नहीं है ? जब से इसका जन्म हुआ तभी से सब कुछ बरबाद हो गया है ! इसकी किस्मत में ही कुछ नहीं है।

कल्याणी (ठोड़ी पर हाथ दिये, दुःख के साथ) केशवन नायर इससे नाराज है क्या ?

परमु वह कौन आदमी ! भाग्यवान ! भरे घड़े का पानी कभी छलकता भी है ? उन्होंने कहा कि उन्हें इस पर कोई गुस्सा नहीं है। फिर, इसके दोस्त है न ? कभी कभी यहा आने वाला वह ईसाई लड़का ? वही इन सब लड़कों को बहकाकर उन्हें कम्युनिस्ट बनाता है। यह बात उन्होंने कही। उस पर उनकी निगाहें हैं। वह चाहें तो क्या नहीं हो सकता ? मेरी वजह से ही उन्होंने इसे कुछ नहीं किया है। इस

लिए अपने लड़के को जरा समझाओ। इस वक्त की यह दोस्ती सब खत्म करने के लिए कहो, वरना जो कुछ होगा, सब बरदाश्त करना पड़ेगा। मैं किसी का साथ नहीं दे सकता। (पान खाने लगते हैं)

कल्याणी राम-राम! न जाने लड़का अब क्या-क्या मुसीबतें मोल लेगा? (अन्दर की ओर ध्यान देकर) वहां कौन बात कर रहा है, बेटी?

मीना (अन्दर से) भैया, मां।

कल्याणी गोपालन, जरा इधर आ बेटा!

परमु (चेहरे पर कड़वाहट लाकर) ऊँ, क्यों बुला रही हो! तुम जाकर उसे कुछ खिलापिला कर छोड़ दो। मुझे अपना काम है। (दूसरी ओर मुड़कर कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

(गोपालन का प्रवेश। करीब २५ वर्ष की आयु का सुन्दर युवक। कुछ मैली-कुचैली लुंगी और कमीज पहना है। चेहरे से नम्रता और धीरज प्रकट होता है। ऐसा लगता है मानो सोकर उठा ही है।)

कल्याणी (पुत्र को देखते ही) तुमने बड़े घर के बारे में क्या बात कही बेटा?

गोपालन मैंने कुछ नहीं कहा मां। हां, एक बात मैंने कही है। मैंने उन बड़े लोगों के बारे में कुछ बातें कही हैं, जो यहां की किसान सभा का विरोध करते हैं और गरीबों को सताते हैं। यदि केशवन नायर भी यह सब करते हों, तो हो सकता है कि ये बातें उन पर भी लागू हों।

(परमुपिल्ला कुर्सी पर बैठे बिना मुड़कर देख ही बातचीत में अपनी लाचारी को प्रकट करते हैं।)

कल्याणी बेटा, तुम बड़े लोगों के बारे में यह सब क्यों कहने जाते हो? यदि वे चाहें तो क्या कुछ नहीं कर सकते?

(कल्याणी की ये ऊपरी-ऊपरी बातें करने का ढंग पसन्द न आने से परमुपिल्ला के चेहरे पर और भी ज्यादा गुस्सा और कड़वाहट आ जाती है।)

गोपालन यदि वे चाहें जो कर सकते हैं, तो फिर हममें से किसी के लिए भी जीना दूभर हो जायेगा, मां।

कल्याणी उन्हें नाराज नहीं करना चाहिए। (उपदेश देने के अभिप्राय से) तुमने कांग्रेस में शरीक होकर मुसीबतें झेलीं, मजदूर जमात में मुसीबतें झेलीं, इस तरह तकलीफें और मुसीबतें उठाकर और पुलिसवालों की मार खाने के बाद अब अच्छे लोगों को क्यों नाराज कर रहे हो, बेटा ?

(परमुपिल्ला असह्य भाव का भाव प्रकट करते हैं।)

गोपालन मां, यह कोई अच्छे लोगों को नाराज करने का सवाल नहीं है। इस देश में काफी तकलीफें उठाकर काम करके गुजर-बसर करने वाले कितने ही लोग हैं। वे ही अच्छे लोग होते हैं! जिन्हें मां अच्छे लोग कह रही हो, वे वास्तव में गन्दे और नीच लोग हैं।

परमु (अभी तक दबाये हुए गुस्से को प्रकट कर एकाएक कुर्सी से उठते हुए) निकल जा उस तरफ! (कल्याणी की ओर मुड़कर) तुम भी जाओ उस तरफ! मां और बेटा खड़े व्याख्यान सुना रहे हैं। जाओ, हटो मेरे सामने से दोनों। (दोनों बिना कुछ कहे खड़े हैं) मेरे घर में ऐसे किसी के लिए जगह नहीं है जो मर्दों की बेइज्जती करते हैं। यह ठीक है कि मैं अब कंगाल हो गया हूं, फिर भी मैं मर्दों की तरह गुजर-बसर कर चुका हूं। बेटा! मेरे घर में तुम्हारा कम्युनिज्म कुछ नहीं चलेगा! आज तक मैंने माफ किया। (धीरे धीरे शांत होते हैं) मुझे मर्दों के सामने जाना है। मुसीबत उठाकर तुम्हें चार-पांच दर्जे तक पढ़ाया है मैंने। यह सब उसीका नतीजा है। आज अपने पिता की बात न मान कर छुआछूत की परवाह न करके तुम इधर-उधर खाते-पीते फिर रहे हो! कहते भी हैं कि "जिस रास्ते हांका, उस रास्ते नहीं गया तो जिस रास्ते गया उसी रास्ते हांकना चाहिए।" नहीं, यहां यह सब कुछ नहीं चलेगा।

गोपालन (बहुत ही विनीत भाव से) मैंने तो कुछ नहीं कहा, पिताजी!

परमु न तो तुम्हें मुझसे कोई बात ही करनी है और न मुझे पिताजी ही कहकर पुकारना है।

कल्याणी : (बहुत ही आदरपूर्वक, आपस में समझौता कराने के अभिप्राय से) आप ही बताइये न कि इसको क्या करना चाहिए। आपके कहे मुताबिक ही यह करेगा न ! यों...

परमु : (बात काट कर) तुम जाओ उस तरफ। बस तुम्हारे उपदेश की ही कसर है ! अरी, यदि यह बाप की बात सुनने वाला और समझदार होता, तो इस काम के लिए नहीं जाता ! (अचानक गोपालन की छोटी मूंछे देखकर उसके मुंह पर उंगली दिखाकर) देखो जी, यह अगर तनिक भी नेकनियत होता, तो क्या मेरे सामने छोटी मूंछें रखकर आने की हिम्मत करता ? मैं कितनी ही बार उसे बुराभला कह चुका हूं।

गोपालन : (और भी ज्यादा विनयपूर्वक) मैं ऐसे किसी काम के लिए नहीं जाता, जो गांववालों की भलाई के लिए नहीं, पिताजी।

परमु : तुम्हारे ये गांववाले होते ही कौन हैं ? इधर-उधर के मल्लाह-मोची वगैरह ही तुम्हारे गांववाले हैं न ! मैं मर्दों की कही हुई बात सुनता हूँ।

गोपालन : एक जमाने में खुशहाल जिन्दगी बिताने वाले हम लोग आज इस हालत में पहुँच गये हैं, तब भी बात नहीं समझते हैं, तो...

परमु : तुम सबकी तकदीर के ही फलस्वरूप यह हालत आ गयी है। तकदीर की बात हमारे मिटाने से थोड़े ही मिटती है ?

गोपालन : अगर बात ऐसी है पिताजी, तो मुझे दोष देने की जरूरत नहीं है। समझ लिया जाय कि मेरी तकदीर की ही वजह से मैं ऐसा हो गया हूँ !

परमु : (निरुत्तर होकर, दबाये गुस्से भरे स्वर में) तुम मुझे सिखाने चले हो, गोपालन ? और कुछ नहीं सही, मैं तुम्हारा बाप तो हूँ ! तुमने उसका भी खयाल किया !

गोपालन : उसकी मैं हमेशा से कदर करता आया हूँ।

परमु : (स्वर बदल कर, मजाक में) नहीं, नहीं, मुझे तुम्हारी कदर की कोई जरूरत नहीं है। इसकी कदर से ही इस बुढ़ापे में मेरा गुजरा होगा !

कल्याणी (गापानन स) पिताजी के कहे मुताबिक तुम क्यो नहीं चलते, बेटा ?

गोपालन माँ, मैं पिताजी की मर्जी के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर रहा हूँ।

परमु इसीलिए तो तुम इस कम्युनिज्म के चक्कर में पड़े हो ! मेरा और केशवन नायर का जैसा रिश्ता है, उसको देखते हुए तुम्हारा उन्हें गाली देना ठीक है ?

गोपालन अफसोस ! पैसे वाले उस केशवन नायर और हम गरीबो के बीच में कैसा रिश्ता है पिताजी ! हमारे पास जो कुछ बचा है, उसे भी वह लिखवाकर हड़पने की कोशिश करेंगे। उसी के साथ उनके स्नेह की भी इति हो जायगी। पड़ोस का पप्पु पिताजी से स्नेह करेगा, लेकिन उस शैतान केशवन नायर से यह बात नामुमकिन है।

परमु (भर हुए गुस्स का दबाकर) अरे, मैं कहता हूँ, तुम जाओ यहाँ से।

गोपालन पिताजी—मैं

परमु तुमसे कहा कि जाओ उस तरफ ! मैं तुम्हारा व्याख्यान नहीं सुनना चाहता।

गोपालन पिताजी

परमु (गुस्स और खद के साथ) नहीं, मैं निकल जाऊँगा (कुर्सी से उठ कर जाते हुए) इस बुढ़ापे में एक जगह बैठने भी नहीं दोगे ! काशी की तरफ कहीं चला जाऊँगा।

(इस बीच कल्याणी गोपालन का धक्का देकर बाहर करने की कोशिश करती है। वह एकाएक चला जाता है।)

परमु (यह समझ कर कि बेटा चला गया घूम कर) चला गया ! जा, उसके पीछे जा, उसे कुछ खिलापिला कर छोड़। कहीं जाकर बरबाद होने दे। (कल्याणी के एकदम पास आकर) अरी ! भैंस की पीठ पर वेद पढ़ने से क्या लाभ ?

(पर्दा गिरता है)

दृश्य : २

[करम्बन की झोपड़ी। छोटे-से आगन म माला बैठी हुई है। एक सूप मे रखे तापियेका का छिलका निकालकर वह काट रही है। १८ बरस की उम्र की यह युवती एक हरिजन खेतिहर मजदूर की लडकी है। मैली-कुचैली और फटी-पुरानी लुगी और ब्लाउज पहने है। गले मे कांच की माला और हाथा म कांच की चूड़ियां हैं। उलझे बाल। लगता है कि खूब मेहनत किया हुआ बदन है। झुक कर तापियेका का छिलका निकालते समय उसके बाल कन्धे पर से लेकर छाती तक झूलते हैं। वह उन्हें अपने हाथो से पीछे की ओर फेंकती है और साथ ही चारो ओर नजर दौडाती है। नीरस भाव से एक ग्रामीण गाने की कुछ पक्तियाँ गुनगुनाती जाती है।

थोडी देर के बाद गाँव का मुखिया केशवन नायर और उसके पीछे उसका कारिन्दा वेलु बातें करते हुए प्रवेश करते हैं। केशवन नायर प्राय ४५ बरस की आयु का आदमी है। गोरा गठा हुआ बदन। एक बहुत ही सफेद मलमल की लुगी और फीता लगा हुआ दुपट्टा पहने हुए है। गले मे सोने की माला है। सिर गजा होना-सा प्रतीत होता है। वेलु की उम्र होगी पचास बरस। दुबला, लम्बा और आगे की ओर झुका हुआ बदन। सिर्फ लुगी और अगोछा पहने है।

बातचीत की आवाज अन्दर सुनाई देते ही माला तापियेका सूप मे डालकर चाकू हाथ मे ले एक किनारे आ खडी हो जाती है। समय शाम के साढ़े चार बजे।]

केशवन नायर • (हाथ मे पकडी छडी से एक ओर इशारा करते हुए) देखो, उधर दक्खिन-उत्तर की ओर एक बाडा बन जाना चाहिए। यदि उत्तर का हिस्सा ही मिलाना हो, तो नारायणन का अहाता भी लेकर उससे मिलाना होगा। तब उत्तर की ओर रास्ता भी हो जायेगा!

वेलु • यह एक मेनर दायित्व वाली जायदाद है। हमारे सोमन वकील की चिट-अर्ज में गिरवी रखी हुई जमीन है।

केशवन नायर : दायित्व की कोई परवाह नहीं। वह जमीन दे देगा : मेनर को दूसरी कोई जमीन दिखा देना काफी नहीं है ? इसके अलावा दस-पन्द्रह सेर धान की दूसरी जमीन भी है न उसके नाम ?

वेलु : जरा पता लगाने दीजिये। कोई ज्यादा मुसीबतवाला आदमी तो नहीं है। उसका एक लड़का किसी बागान में जाकर नौकरी करके पैसे घर भेज देता है।

केशवन नायर : जो भी हो, तुम जरा पता लगा लेना। ज्यादा दिलचस्पी दिखाने की जरूरत नहीं है। वह जमीन भी इसके साथ न मिलाई जाये, तो हमारी यह जमीन कुछ ढंग की न होगी। अच्छे नारियल के पेड़ भी हैं। (घूम कर माला की ओर देखता है। माला को सिर से पैर तक देखकर आश्चर्यचकित-सा हो जाता है।)

वेलु : कोई बात नहीं। उस जमीन को इसके साथ मिला दिया जायेगा। उस मुहम्मद की जमीन हमने जिस तरह से ले ली, उसके आगे यह कौन-सा मुश्किल काम है ? यदि वह उसे देने से इन्कार करे तो हम वकील की जमानत अपने नाम कर लेंगे ? उसके बाद उससे बेदखल करना भी नामुमकिन होगा। क्या कहते हैं ? (यह समझ कर कि केशवन नायर उसकी बात नहीं सुन रहा है, सिर हिलाता है।)

केशवन नायर : (एकाएक सजग होकर) ऐं-ऐं ! (फिर माला की ओर मुड़कर) कटहल के पेड़ में कटहल कुछ नहीं हुए हैं, री ?

माला : (विनीत भाव से) जी नहीं।

केशवन नायर : (भद्दी-सी हँसी हँसकर) यदि हुए भी हैं तो क्या तुम दे देती ? ऊँ, गिराकर खा लो ! लेकिन उसका खयाल रहना चाहिए। करम्बन कहाँ है ?

माला : घास काटने या और कहीं गये हैं, हुजूर।

केशवन नायर : ऐं ! घास काटने ! (एक तरफ ऊपर की ओर देखकर) वेलु !

वेलु : कहिये हुजूर !

केशवन नायर : उस उत्तर वाले छोटे नारियल के पेड़ के नारियल तोड लिये से लगते हैं न ?

वेलु : (उस ग्रोर देखकर सन्देह करते हुए) जी हाँ, तोड लिये हैं! (माला से) तोडे हैं छोकरी ?

(माला उस ग्रोर देखती है।)

केशवन नायर : (दृढतापूर्वक) तोड लिये हैं।

वेलु : तो मैं जरा जाकर देख आऊँ।

केशवन नायर : तो सिर्फ उसी एक पेड पर देख कर भाग मत आना ! उस सुपारी के पेड और कटहल के पेड वगैरह पर भी जरा अच्छी तरह से नजर मार आना, समझे ?

वेलु : समझा !

केशवन नायर : (खास अर्थ से वेलु की ओर देख कर) अरे, तुम समझे ?

वेलु : (केशवन नायर के चेहरे को ध्यान से देखता है और उसकी आँखो से उसका तात्पर्य समझ कर माला की ओर देखता है) जी-जी, समझ गया ! मैं सब देख कर कुछ देर बाद ही आऊँगा। (जाता है।)

केशवन नायर : (माला की ओर देख कर बेवकूफो-सी हँसी हँसते हुए) पिछली बार फसल के समय बहुत-से नारियल तोडने के निशान मिले थे। यह बात वेलु ने आकर मुझसे कही थी। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

माला : (कुछ बेचैनी के साथ) हममें से किसी ने नहीं तोडे !

केशवन नायर : (फिर पहले की तरह हँसते हुए) फिर कौन यहाँ आकर नारियल तोडता है ? यदि तुम एकाध नारियल तोड़ भी लो, तो क्या मैं तुम्हें मार डालने आऊँगा ? लेकिन उसका खयाल रहना चाहिए !

माला : (ग्रौर भी ज्यादा दृढतापूर्वक) हम में से किसी ने नहीं तोडे हैं।

केशवन नायर : (चालभरी आवाज में) जा री—तुझे दोष देने के लिए मैंने यह

नहीं कहा है। यदि तू एकाध नारियल किसी से तुड़वा भी ले, तो क्या मैं कुछ कहने आऊँगा? लेकिन उसका खयाल रहना चाहिए। (लुंगी की निचली छोर चढाते हुए कपट भाव से माला की छाती की ओर घूरता है।)

(माला गुस्से और घृणा का भाव प्रकट कर उसकी ओर बिना देखे ही खड़ी है।)

केशवन नायर: पहले की ही तरह परसों शाम को वेलु ने आकर तुझे कहा नहीं था कि पौधों को सींचने के लिए तुझे घर आना है?

(माला चुपचाप खड़ी है।)

केशवन नायर: (कुछ देर बाद, चारों ओर आँखें फेरकर) तुम बोल क्यों नहीं रही हो?

माला: (असन्तोष भरी आवाज़ में) कहा तो था।

केशवन नायर: फिर तुम क्यों नहीं आयीं? मेरे कहला भेजने पर कोई बिना आये नहीं रहा है। तुम्हें बुलाने के लिए मैंने कितनी बार आदमी भेजा? मेरी एक इच्छा है।

(माला क्या कहे यह न समझ कर चुपचाप खड़ी है।)

केशवन नायर: तुम क्यों नहीं आयीं?

माला: शाम हो जाने से।

केशवन नायर: (फिर बेवकूफी भरी हँसी हँसते हुए) बेवकूफ! ऊँ, जाने दो। आज शाम को तुम हमारे घर आ जाना। आज तुम्हें बुलाने के लिए मैं खुद आया हूँ।

माला: (एकाएक घूमकर खड़े होकर) ऊँ, किसलिए?

केशवन नायर: (भद्दी हँसी के साथ) किसलिए?

माला: ऊँ?

केशवन नायर: तुम आ जाना, बताऊँगा। (माला के पास जाता है।)

माला: (बढ़े हुए गुस्से में) छी! हट जाइये हुज़ूर। हम पुलय जाति के हैं, यह समझ कर । (दौड़कर झोपड़ी में जाती है।)

(केशवन नायर चारो तरफ आँखे फेरता है। क्रुद्ध हो उठता है।)

केशवन नायर : (घबराहट मे) अरे वेलु, इस छोकरी ने मेरा अपमान किया है।

वेलु : अकल नहीं है, हुजूर-अकल।

(माला का पिता, करम्बन प्रवेश करता है। ५० बरस की आयु। एकदम मैला-कुचैला अगोछा बाँधे हुए है। सिर पर छाल की टोपी पहने है। हाथ मे घास भरी एक टोकरी लटकी है।)

केशवन नायर : (करम्बन को देखते ही गभीर होकर) नारियल के पेड़ों पर कुछ है भी वेलु !

करम्बन : क्यों न होगा, हुजूर ! यहाँ लोगो को फाका भी करना पड़े तो भी हम लोग एक भी नारियल गिरा कर नहीं खायेंगे !

केशवन नायर : (गुस्से में) चल, हट यहाँ से। तुम्हारे अच्छे होने से ही हर महीने चालीस-पचास नारियल गिरे पाये जाते हैं !

करम्बन : (झूठी बात सुनने से हुए दुःख से) कौन गिराता है ? वेलु बाबू यहाँ ही खड़े हैं, पूछिये तो उनसे—गिराये हुए पाये गये कभी ?

वेलु : (अपने मालिकको अकेले पड जाने न देनेके लिए, लेकिन ढीले-ढाले ढग से) गिराने के निशान तो काफी थे, परन्तु मैंने तुम से कहा ही तो नहीं, बस यही बात है।

करम्बन : (कटुता का भाव प्रकट करके) हुजूर, इस तरह मौकापरस्ती पर न उतर आइये। क्या यहाँ नारियल गिराने के निशान मिले थे ?

केशवन नायर : हट, बदमाश ! एक तो नारियल गिरवा कर खा डाले, और उस पर झूठ भी बोलने पर तुला है !

करम्बन : मैंने हुजूर से झूठ क्या कहा ?

केशवन नायर : ऊँ—सब लोग बकवास करना सीख गये हैं। बदमाश !

(करम्बन अपने गुस्से को दबाकर चुपचाप खड़ा है।)

केशवन नायर : (करम्बन की ओर देख कर) तुम क्या समझते हो ? साफ साफ क्यों नहीं कहते—पाजी !

वेलु : (सान्त्वना देने के अभिप्राय से) जाने दीजियेगा।

केशवन नायर : क्या जाने दो ? तुम जैसे समझते हो वैसे नहीं है ये सब, नमक-हराम !

वेलु : यदि बिना समझे-बूझे यह कुछ कह जाये, तो ?

केशवन नायर : बेसमझी से नहीं है, देख तो लो न ? कैसे खड़ा है ! उसने मुझे तिनके के बराबर समझा है न ? वह सोच रहा है अपनी सभा में जाकर शिकायत कर दूंगा । वह समझता है, उसके नेता लोग आकर मुझे यहाँ से बरखास्त कर देंगे !

करम्बन : (गुस्से को दबाकर) मैंने कुछ कहा तो नहीं है ।

केशवन नायर : तुम्हारे कहने की जरूरत नहीं है । तुम्हारा चेहरा देखना ही काफी है ।

वेलु : ये लोग यों भी ऐसे ही हैं । इन लोगों के चेहरे पर कभी खुशी के लक्षण दिखलाई ही नहीं देंगे । यदि पूरा खजाना ही लुटा दें, तब भी कोई खुशी नहीं है । क्या कहते हैं ?

करम्बन : (पूरा गुस्सा प्रकट करते हुए वेलु से) चुप रहिये, बाबूजी ।

केशवन नायर : (एकाएक) यदि चुप नहीं रहा तो ? तुम लोगों को घमंड हो गया है । उसे मैं दूर कर दूंगा । तुम्हें रहने के लिए थोड़ी-सी जमीन देने के ही कारण यह सब घमंड है । मेरी जमीन में झोंपड़ी बनाकर तुम मेरे ही खिलाफ सभा-जमात बना रहे हो न ? तुम समझते हो, करम्बन कि मैं इन सब बातों को नहीं समझता ?

करम्बन : मालिक, मैं तो ऐसा कोई काम नहीं कर रहा हूँ जिसके बारे में हुजूर को पता न लगे ।

केशवन नायर : तो तुम समझते हो कि यदि मैं जान जाऊँ तो भी कोई बात नहीं है । इसका सब नतीजा तुम लोग भोगने जा रहे हो । तुम्हारे नेता लोगों का कम्युनिज्म वगैरह यहाँ नहीं चलेगा । कुछ समय से मैं इन चीजों को देख रहा हूँ, समझ गये—बदमाश !

वेलु : (करम्बन से) क्या तुम्हारी भलाई के लिए ये लोग सभा-सभा

चिल्लाते फिरते हैं ? (केशवन नायर की ओर देखकर) क्या कहते हैं ?

करम्बन : इस पर मालिक को क्या हुआ ?

केशवन नायर : मालिकों को कुछ नहीं। तुम जैसो की झोंपडी में रहने वाली छोकरियो को है। हाँ !

करम्बन : (असह्य गुस्से के साथ) मालिक ! (बढे हुए गुस्से को दाँतो तले दबाता है।)

केशवन नायर : (गुस्से के साथ आगे बढकर) क्या है, बोलो ! पाजी ! मैं तुम्हें अभी दिखा दूँगा, साले—बदमाश !—

करम्बन : (अपने गुस्से को दबाने की कोशिश करते हुए) क्या होगा, क्या न होगा, यह सब हम समझ लेंगे, मालिक।

वेलु : (केशवन नायर को रोक कर) जाने दीजियेगा, जाने दीजियेगा। बेसमझों से कहने से क्या लाभ ?

केशवन नायर : (शान्त होकर) इन सबो को बढने दें, तो खतरा है वेलु। ये सब पहले जैसे थोडे ही हैं ! हमारे आने-जाने पर रास्ते से हट जाना तक ये शरम की बात समझते हैं ! घमडी तो छोकरियाँ हैं ! पानी भरना वगैरह तो उनके लिए शरम की बात है। क्यों न मालिको के बराबर हो लें, यही उनका मशा है !

वेलु : उन्हें क्यों दोष देते हैं ? इन सब को झोपडी में आने-जाने और खाने-पीने वाले हमारे वर्ग से ही कुछ निकले हैं ! ऐसो को दूसरा कोई काम भी है ? क्या कहते हैं ?

केशवन नायर : कामरेड ! (विशेष अर्थ मे हुकार भरकर) ऊँ, सब खबरदार हो जाओ ! चलो, वेलु ! (धीरे चलता है। कुछ कदम चलने के बाद घूम कर जोर से) अरे करम्बन ?

करम्बन : (गुस्से के साथ) हुकुम कीजिये !

केशवन नायर : (शान्त भाव से) अरे तू अपने बाबा के वक्त से ही इस जमीन पर रहता आया है। पचास बरस से तुम लोगों को रहने के लिए मेरे

बुजुर्गों ने और मैंने तुम लोगों को जगह दी। लेकिन तुम और तुम्हारी बेटी एहसानमन्द नहीं हैं। इसलिए एक काम कर लेना। रहने के लिए कोई दूसरी जगह ढूढ़ लेना। मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मुझे बदतमीजी करना नहीं आता। अगर उसकी जरूरत पड़े तो वह भी कर सकता हूँ। (चला जाता है। वलु भी छाया की तरह उसके पीछे-पीछे चला जाता है।)

(करम्बन गुस्से से तिलमिलाकर उनकी ओर खड़ा देखता है। माला झोंपड़ी से बाहर आकर जिस दिशा में वे लोग गये थे उस ओर कुछ देर तक देखने के बाद अपनी पूरी घृणा प्रकट करती हुई थूकती है।)

करम्बन (कुछ देर के बाद) मेरा पूरा बदन थर्रा उठा।

माला (घृणा के साथ) ऐसों से ऐसे ही बात करने से काम चलेगा, बाबू। (बचे हुए तापियेका काटने लगती है।)

करम्बन (केशवन नायर के जाने की दिशा की ओर देख कर नकारात्मक भाव से सिर हिलाकर) 'निकल जाओ!' कहना आसान है! —(एक लम्बी सांस लेकर) मछली है बिटिया?

माला मछली के लिए पैसे कहां हैं, बाबू?

करम्बन (सूप के पास बैठकर तापियका का छिलका निकाल कर) बिना मछली के यह खाऊँ कैसे, बिटिया?

माला बाबू, किसी से चार पैसे उधार ले लो, हम कल दे देंगे।

करम्बन किससे ले लूं बेटी? नए घर के मालिक से यह कहकर तीन रुपये से ऊपर लिये थे कि काम करके चुकता कर देंगे। अब उनसे कैसे लेंगे?

माला तो बाबू एक नारियल उतारो। यदि हमने न भी लिया तो भी झूठा बनना ही पड़ता है न?

करम्बन नहीं बिटिया, नहीं। यदि भूखा भी रहना पड़े तो भी नहीं।

माला उनकी ये शरारत की बातें करने पर हमें नारियल उतार लेने चाहिये। हमने मेहनत भी तो की है।

करम्बन : (कुछ देर चुप रहने के बाद सिर उठाकर एक बार चारों तरफ देखकर लम्बी साँस लेकर) ये नारियल और कटहल के पेड़ सब जो हैं, मैंने और मेरे बाबा ने मिलकर लगाये थे ! यह सारा इलाका जंगल-ही-जंगल था। बाबू ने अकेले साफ करके इसे ऐसा बनाया था।

माला : इसीलिए तो अब निकल जाने के लिए कह रहे हैं !

करम्बन : (कुछ ताव में आकर) यों ही निकल जायेंगे बिटिया ! तू चुप रह। कल हमें ये बातें सभा में कहनी चाहिए, सभा में ! इस जमीन से आमदनी लेकर इससे बीस गुना ज्यादा कमा लिया, और हमारे लिए एक सूखा नारियल का पेड़ छोड़ दिया है।

माला : हाँ, बाबू। अभी थोड़े दिन हुए वेलु सरकार आकर कहते थे कि तापियेका का छिलका डालने से नारियल के पेड़ चौपट हो गये ! तापियेका का छिलका डालने से मना करके गये हैं। (किसी के सामने दिखाई देने से उत्साह के साथ) कामरेड आ रहे हैं, बाबू ! (माला और करम्बन उठ खड़े होते हैं। माला के चेहरे पर खुशी और परेशानी छा जाती है। गोपालन प्रवेश करता है। साफ-सुथरे कपड़े पहने हुआ है।)

करम्बन : (हँसते हुए) कामरेड के यहाँ आते-जाते रहने पर मालिक बकवास कर गये हैं।

गोपालन : (जमीन पर बैठकर हँसते हुए) वे यहाँ होकर ही गये हैं क्या ? मैंने उन्हें रास्ते में देखा था। मुझे देख कर मुँह फुला कर चले हैं।

माला : (झुक कर खड़ी होकर सूप से तापियेका लेकर काटती हुई) तो उन्होंने मन में सोच लिया होगा कि आप यहीं आ रहे हैं ! (उसी स्थिति में खड़ी होकर आँखें ऊपर करके गोपालन की ओर देखकर प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराती है।)

गोपालन : सोचने दो। तुम ऐसे झुककर क्यों खड़ी हो ? बैठ जाओ।

(बैठकर काम जारी रखती है।)

गोपालन : यहाँ बैठो करम्बन।

(करम्बन सूप के पास बैठकर तापियेका का छिलका निकालने लगता है।)

माला : मैंने सोचा था कि मालिक के यहाँ रहते वक्त आप आ झपटेंगे!

गोपालन : तो क्या होता?

माला : तो मामला काफी संगीन हो जाता। (हँसती है।)

गोपालन : यदि हम इस बात से डरें कि मामला संगीन हो जायेगा तो इससे अच्छा तो यही होगा न माला कि हम इस काम को करना ही छोड़ दें! (हँसते हुए मजाक में करम्बन से) माला मालिकों से काफ़ी डरती है, करम्बन!

करम्बन : (यह बात न समझ कर कि बात मज़ाक में कही थी) अरे राम! ऐसा मत कहिये, कामरेड! ऐसों पर नज़र पड़ते ही उसके सारे बदन में नफरत उमड़ आती है! यदि—आज करम्बन यहाँ न होता तो मामला कुछ गड़बड़ हो गया होता!

गोपालन : (मजाक में ही) क्या कोई इन्कलाब हो गया होता! (माला की ओर मुँह कर मजाक करने के अभिप्राय से) है, नेताजी! सम... आने से पहले ही जल्दबाजी में कोई इन्कलाब मत कर बैठना! (मजाक में करम्बन भी मजा लेता है।)

माला : मुझे उन लोगों की नज़रें और बातें बिलकुल पसन्द नहीं है। अब ऐसी शरारत की बातें लेकर यहाँ ज़रा फिर आने दो!

करम्बन : धत्! ज़रा धीरे से बात करो बिटिया।

गोपालन : बातें धीरे नहीं कहनी हैं, करम्बन। अब हम ज़ोर से कहने जा रहे हैं। उस गधे आदमी के बारे में शिकायत सिर्फ माला को ही नहीं है। इस गाँव की सब गरीब लड़कियों को उससे शिकायत है। काम सिर्फ शिकायत करने से ही नहीं होगा। खुलकर मुका-बला करना होगा।

माला : हां, कामरेड ! वरना ये लोग हम लोगों को रहने नहीं देंगे।

करम्बन : *(शिकायत करने के ढंग से)* कामरेड, ये कह गये हैं कि हम लोगों को यहां से निकल जाना होगा !

गोपालन : निकल जाना ?

करम्बन : हां !—

गोपालन : क्यों ?—

करम्बन : कौन जानता है क्यों ? बात पूरी करने के पहिले ये लोग काटने आते हैं, कामरेड !

माला : काटेंगे तो नहीं हैं। जमके खड़े होकर बात करनी चाहिए। इस हुजूर को देखते ही यदि सिर खुजलाने और फुसफुसाने लगें...

करम्बन : *(बात काटकर)* *जा बेटी...सिर खुजलाना !* *(गोपालन की* ओर मुडकर) कामरेड मौका आने दो, करम्बन अपनी जगह से टस से मस न होगा। जहां का तहां डटा रहेगा, हां।

गोपालन : (मजाक से) फिर भी आज सिर जरा खुजला गये !

करम्बन : (मजाक मे रस लेते हुए) नहीं कामरेड !

गोपालन : तो केशवन नायर झगड़ा करने पर उतर आये हैं ! जमीन से निकालने का इरादा है। उस दिन की हमारी सभा के बाद इन सब का दिमाग गरम हो उठा है।

माला : कोरवा और पुलय जाति के लोगों ने जब से जिन्दाबाद का नारा उठाना शुरू किया, तब से मालिकों के कान खड़े हो गये हैं।

करम्बन : हां, यही बात है।

गोपालन : यह बात सब के बारे में नहीं कही जा सकती, माला। केशवन नायर और उसके इर्दगिर्द के चन्द लोगों के बारे में ही कही जा सकती है। सच कहा जाये तो बाकी सब लोग हमसे खुश हैं।

करम्बन : यह बात तो सही है, कामरेड ! हमारी सभाओं में कितने हजार

हुजूर लोग आते रहते हैं। हमारी बात कहने पर तालियो की गडगडाहट होती है !

गोपालन हाँ, ठीक है। अब भी कितने ही लोग आने बाकी है, करम्बन ! नहीं, यह हालत और ज्यादा अर्से तक जारी रहने वाली नहीं है ! (माध्यु एक मासिक पत्र खोलकर उस पर आँखें गडाये हुए प्रवेश करते हैं। मजदूर वग के आग वढ हुए राजनीतिक नेता हैं वह। दुवले-पतले, लम्ब कद के बीच की उम्र के व्यक्ति हैं। प्रसन्न वदन।)

माध्यु (मासिक पत्र पर से दृष्टि बिना हटाये ही गोपालन की बात खत्म होते ही उसके जवाब मे) हाँ, यदि ऐसा ही हो तो यह हालत कुछ अर्से तक रहने हो जा रही है ! (गोपालन के चेहरे की ओर देख कर उसे दोषी ठहराने के अभिप्राय से) अरे, तुम्हारे लिए मैं कितनी देर से यहाँ इतजार कर रहा हूँ ! तुम्हारे आये बगैर स्कूल के आस-पास मैं कहीं जा सकता हूँ ? (मजाक करने के अभिप्राय से) ओ ! यहाँ आकर वह लेक्चर दे रहा है !

गोपालन शुरू कर दिया ! आते ही शुरू कर दिया !

माध्यु (दोष दने के ही अभिप्राय से ही) हाँ, शुरू कर दिया ! (मासिक पत्र के पृष्ठ ध्यान से देखते है।)

गोपालन अरे, छोडो इस बात को। हमने फैसला किया या न कि करम्बन को भी आज रात की कमेटी की बैठक में बुला लेना चाहिए। (करम्बन खुशी और लज्जा भरे भाव म सिर खुजलाता है।)

माध्यु इसलिए !

गोपालन मैं करम्बन को बुलाने के लिए ही यहा आया हूँ।

माध्यु यह बात !

गोपालन और बात तो यहाँ आने पर मालूम हुई न !

माध्यु क्या बात ?

गोपालन इन लोगों से वह केशवन नायर कह गये ह कि यहाँ से निकल जाओ !

माथ्यु : (गौर से) यहाँ से निकल जायें ?

गोपालन : हाँ, केशवन नायर यहाँ आकर कह गये हैं।

माथ्यु : उसकी शरारत बढ़ती जा रही है।

गोपालन : हाँ, बढ़ती जा रही है।

माथ्यु : उसकी करतूत देखें तो इसमें भी शक होने लगता है कि आखिर वह इन्सान है भी !

गोपालन : उससे बात करूँ तो फिर झूठा मुकदमा सिर पर थोप देगा, नेता से मिलने जायेगा और नेता जाकर थाने के फाटक पर पहरा देने लगेगा !

माला : यह मुकदमा और झगड़ा सब होता रहेगा। हमें अपना काम करना होगा ! (माथ्यु से) है कि नहीं, कामरेड ?

माथ्यु : माला ने जो बात कही, वही सही है। अब हम एक कदम भी हटेंगे तो पाताल में ही जाकर रहेंगे। उस बात को रहने दो। हमारा पप्पु कहाँ है ?

गोपालन : हाँ, अरे—हमारी उस सभा के बाद से उसमें काफी तबदीली आ गयी है।

माथ्यु : अच्छा फुर्तीला किसान है ! उस दिन की कमेटी की बैठक में आने के बाद उसका केशवन नायर के बारे में शिकायत करना, —जमीन हाथ से निकल जाने की बात से रोना—जुलूस में नारे लगाना—वाह—मैं उन सब बातों को भूल नहीं सकता। हमें पप्पु की जरूरत है। हमारे देशवासियों को पप्पु की जरूरत है, करम्बन !

करम्बन : कामरेड, कामरेड पप्पु ईमानदार है।

माथ्यु : क्यों, कैसे मालूम ?

करम्बन : कल उन्होंने उससे कहा कि यदि वह सभा में न जाये तो लगान कम कर देंगे।

माथ्यु : किसने ?

करम्बन : उन्होंने।

गोपालन : केशवन नायर ने ?

करम्बन : हाँ, तब कामरेड पप्पु ने भी कहा कि लगान कम करना रहने दो !

(माथ्यु, माला और गोपालन करम्बन का वर्णन सुनकर हँसते हैं।)

करम्बन : (माला से) अरी बिटिया, मैंने दो तापियेका के टुकड़े भुनने के लिए अंगीठी में डाल लिये थे ! कामरेड दोनो भूलो आये हैं न !

गोपालन : (माला से) तापियेका अंगीठी में डालकर यहाँ आकर खड़ी है ! जल्दी जा, उठा ला !

(माला हँसती हुई झोपडी मे चली जाती है।)

गोपालन : (माथ्यु से) अरे तापियेका वगैरह खाकर यहाँ लड़े रहोगे तो— समझ जाओ स्कूली लड़के हैं !

करम्बन : तब स्कूल में मामला गोलमाल है क्या, कामरेड ?

माथ्यु : सब जगह गड़बड़ है करम्बन ! कल लड़कों को पढ़ाने वाले मास्टर लोगों ने तनख्वाह माँगी। मैनेजर साहब ने कहा, निकल जाओ। मास्टर लोगों के निकल जाने के बाद फिर लड़के यों ही बैठने वाले थोड़े ही हैं ! हमारे केशवन नायर की लड़की है न—

करम्बन : सुमम ?

माथ्यु : हाँ, सुमम ! कलवाली लड़ाई में वही आगे थी।

गोपालन : केशवन नायर के घर में भी इन्कलाब आ गया !

करम्बन : हाँ, कितनी अच्छी हुजूरिन है...! मालिक ने कल उसे बहुत मारा-पीटा।

गोपालन : हो सकता है, स्कूल छोड़ देने के लिए कहा हो।

माथ्यु : स्कूल से तो निकल जाना ही है ! कल उसने जुलूस की अगुवाई की और सभा में बहुत बढ़िया गाना गाया !

करम्बन : उसी पर हुजूर बौखला उठे होंगे।

गोपालन : वह अब कुछ और बौखला उठेंगे। बेदखल करने आने पर उनकी बौखलाहट देखनी चाहिए !

करम्बन : (माध्यु से) कामरेड, —वह कैसे कहते हैं कि हम यहाँ से निकल जायें ?

माध्यु . (दिल की बात समझने के अभिप्राय से) यों ही निकल जाना चाहिए ! क्या कहते हो करम्बन—बड़े हुजूर ने तशरीफ लाकर फरमाया था न !

करम्बन : ठीक है—ऐसी बातें सुनने पर करम्बन की परेशानी ! नहीं कामरेड—यह सब जो है क्या उनका पैदा किया हुआ है ? कीड़े-मकोड़े की तरह उठाके हम फेंकने नहीं देंगे, कामरेड !

माध्यु : तो तुम्हें निकाल भी नहीं सकते, करम्बन।

माला : (तापियेका लेकर प्रवेश करती हुई) हाय, एक जल गया, बाबू।

गोपालन : (हाथ आगे बढ़ाकर) जला हुआ काफी है—जला हुआ काफी है !

(माध्यु पीछे से इशारा करते हैं कि मत देना और झट से अपना हाथ बढ़ा लेते हैं। माला तापियेका माध्यु के हाथ में फेंक देती है।)

गोपालन : (माध्यु से) एक टुकड़ा इधर दो, जी !

माध्यु : हूँ-हूँ, स्कूली लड़के मामला गोल कर देंगे।

(तापियेका गोपालन को दिये बिना माध्यु खाता हुआ जाता है। गोपालन "तू देख ले" कहकर माला की ओर उँगली दिखाता है। करम्बन यह तमाशा देखकर हँसता है। माला भी खड़ी हँस रही है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ३

[परमुपिल्ला का घर। शाम का समय। सामने वाले चबूतरे पर चिराग के सामने बैठकर मीना भजन-कीर्तन पाठ कर रही है। पाठ्य पुस्तकें पास ही ठिकाने रखी हुई हैं। एक कागज की नाव बनाने के साथ ही वह कीर्तन भी करती जाती है। ध्यान नाव बनाने में केन्द्रित है।

कुछ देर के बाद बिना आवाज़ किये, और इस अभिप्राय से सिर उठाकर चारों ओर देख कर कि पिताजी हैं या नहीं, गोपालन प्रवेश करता है।]

गोपालन : (मीना के पास जाकर उसे थपथपाकर धीरे से) पिताजी कहाँ हैं, मुन्नी ?

मीना : (एकाएक कीर्तन बन्द करके गोपालन की ही तरह धीमी आवाज में) रसोई घर में हैं।

(गोपालन एकाएक पीछे हटता है। मीना ठिठला कर हँसती है।)

गोपालन : (आगे बढकर हँसते हुए) शरारती लड़की ! (सन्देह दूर करने के लिए गंभीरता से) पिताजी कहाँ गये हैं, मुन्नी ?

मीना : (गंभीरतापूर्वक) मैंने कहा न कि रसोई घर में हैं।

गोपालन : (स्नेहपूर्वक) मार खायेगी, बताये देता हूँ।

मीना : (हँसती हुई) तो बड़े घर गये हैं।

गोपालन : यह बात तू पहले नहीं बता सकती थी क्या ? (जिस दिशा से आया था उस दिशा की ओर मुड़कर जोर से) आ जाओ, आ जाओ—नहीं हैं।

मीना : दोस्त को छिपाकर खड़ा कर आये हो, क्या ? (डराने के अभिप्राय से) पिताजी अभी आयेंगे—मैं कीर्तन कर रही हूँ। (पाठ करती है।)

"सांसारिक सुखों में—कृष्णा—कृष्णा
मुझे तनिक रुचि नहीं—कृष्णा—कृष्णा .."

गोपालन : (उंगली से उसके पाठ में बाधा डालते हुए) बहन—अरी बहन !—

मीना : (पाठ बन्द करके) यह भैया मुझे कीर्तन भी नहीं करने देता !

गोपालन : पिताजी तो यहाँ है नहीं—फिर किसको सुनाने के लिए यह पाठ कर रही है ?

माध्यु : (प्रवेश करके) इस भैया को ईश्वर पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं है।

(मीना जिद्द करके जोर से कीर्तन पाठ करने लगती है।— 'सांसारिक-सुखों में....')

(माध्यु और गोपालन हँसते हैं।)

गोपालन : अब्वल दर्जे के कपड़े का—अच्छा खासा—अव्वल दर्जे के कपड़े का! सुन रही हो—अब्वल दर्जे के कपड़े का—

(मीना कीर्तन बन्द करके गोपालन की बात गौर से सुनने लगती है।)

गोपालन : अच्छा खासा कपड़े का घाघरा और ब्लाउज सिला कर दर्जी के यहाँ रखा, लेना भूल गया!

मीना : (एकाएक हँसकर) हूँ भैया! सच ?

गोपालन : (ढीलेढाले ढग से) हाँ, लेकिन तुझे तो जरूरत नहीं न ?

मीना : (सन्देहपूर्वक) ऊँ यों ही! (माध्यु से) सही बात है, कामरेड ?

माध्यु : इसे उस कपड़े की दूकान के सामने से जाते हुए तो मैंने देखा था।

मीना : (और ज्यादा सन्देह करके) ऊँ यों ही ?

गोपालन : यों ही तो नहीं है। लेकिन तुझे तो नहीं चाहिए न!

मीना : (पाने की इच्छा से मुँह बनाकर हँसती हुई) हाँ, मुझे चाहिए!

गोपालन : फिर तूने, ईश्वर से जो कहा था कि 'सांसारिक—सुख' में तुम्हें कोई रुचि नहीं है।—अच्छा खासा ब्लाउज और घाघरा वगैरह पहन लेना सांसारिक सुख ही है, इसलिए सफेद कपड़े का एक घाघरा और ब्लाउज बनवाकर उसे पीले रंग से रंग कर तुझे दे दूंगा।

माध्यु : नहीं, नहीं, उतने से ही काम न चलेगा! (मीना के सिर की ओर इशारा करके) यह बाल सब बनवा कर रुद्राक्ष की माला पहना कर इसे एक बुढ़िया बनाकर बिठा दो। फिर उसे जपते रहने दो।

मीना : (चेहरे पर घृणा का भाव प्रकट करते हुए) हट ! पीले रंग में रंगा घाघरा तुम और कामरेड पहन लेना।

गोपालन : हम लोगों को तो सांसारिक सुखों में रुचि है।

मीना : (कोई जवाब न पाकर) सो तो मैं कीर्तन कर रही थी न, भैया !

गोपालन : तब तो तुम से ताल्लुक रखने वाली बात नहीं न। ठीक—तो उठो। एक काम करो—उस तरफ जाकर लिख, पढ लो। यह लो (माथ्यु के हाथ से साप्ताहिक 'नवयुगम'[1] लेकर) इस में एक बढिया गाना है। तुम हमेशा मुझसे गाना मांगती रहती हो न—जाकर गाओ। कल सुनाना।

मीना : क्या तुम्हारा लिखा हुआ गाना है? (उठ खडी होती है।)

माथ्यु : (उसी की आवाज़ बनाकर) ऊँह ! तुम्हारा भैया बडा लिखने वाला है न !

गोपालन : ऊँ—ले जाओ ('नवयुगम' हाथ मे देकर पीठ थपथपाता है।)

मीना : (उसमे देखकर और कुछ कदम चल कर) अरे, मुझे इसकी लय मालूम नहीं है ! (वापिस आकर) भैया जरा गा दो।

गोपालन : (उसे बाहर भेजने की चेष्टा करते हुए) तू जा, कल गाके सुना दूँगा।

मीना : यह नहीं होगा।

गोपालन : आफत हो गई ! तू जा। माँ से पूछ कि भैया के खाने के लिए कुछ है?

मीना : फिर खा लेना, भैया।

गोपालन : (चेहरे पर कटुता लाकर) जा उस तरफ, हट।

मीना : (हाथ बाँधे, निश्चल खडी-खडी) भैया गाके सुनाओगे तो चली जाऊँगी, नहीं तो नहीं जाऊँगी !

माथ्यु : (गोपालन से) अरे, तुम्हींने तो यह सब आफत मोल ली है न ! गाके सुना दो। ऊँ, गाओ भी। (मीना से, मजाक उडाते हुए) गाने के बाद भूख भी लग सकती है।

---

१ नवयुगम केरल का वामपक्षीय साप्ताहिक अखबार है।

गोपालन : ला इधर ! ('नवयुगम' उसके हाथ से लेकर) इसकी आदत ही कुछ ऐसी है।

(गोपालन रोशनी के पास बैठ जाता है। मीना उससे सटकर बैठ जाती है। गोपालन पत्रिका मे देखकर गाने लगता है।)

माध्यु : अरे-रे, (गोपालन गाना बन्द कर देता है) एक गंभीर समस्या है ! अगर पिताजी आ धमके, तो ?

गोपालन : बात तो सही है। एक काम कर, तुम देखते रहो। पिताजी रात को मशाल हाथ में लिये बिना नहीं चलते !

माध्यु : तब मे उस तरफ हट के खडा हो जाऊँ ! यह बढिया काम है ! (बायीं ओर हटकर खडा हो जाता है।)

(गोपालन गाना गाने लगता है। मीना अखबार मे देखकर साथ-साथ गाती है। कुछ देर के बाद माथ्यु धीरे-धीरे गोपालन के पास बैठकर गाना सुनने लगते है। कुछ देर के बाद कल्याणी दरवाजे पर आकर गाना सुनती है। गाना खतम होता है।)

कल्याणी : (दरवाजे से) मेरे लाल, तुम्हारा इस तरह जोर से गाना गाना पिताजी सुन लें तो मेरा यहाँ जीना मुश्किल हो जाये।

(सब लोग उठ खडे होते हैं।)

गोपालन : पिताजी आते हैं या नहीं, यह देखने के लिए ही तो कामरेड को.... (माथ्यु की तरफ इशारा करके) तुम वहाँ से चले आये हो क्या ?

माथ्यु : (हँसते हुए) पिताजी का मिजाज बदल जायेगा, माँ !

कल्याणी : जैसे आसान है !

माथ्यु : सुविधा मिलने पर सब माँ उनसे कहती रहो कि हमारी मुसीबतें दूर होने के लिए इन बच्चों के कहे मुताबिक ही सब होना चाहिए !

कल्याणी : मुझसे न होगा, मेरे बच्चे। तुम लोगों की बात सुनने पर मुझे लगता है कि यही बात ठीक है। बच्चो के बाप जब कहते हैं, तो वह भी मुझे जँचता है ! (गोपालन की ओर इशारा करके) कहीं इसी को कुछ हो जाय फिर ! मुझे जिन्दा रहना है, बच्चे।

गोपालन : मुझे अकेले क्या होना है माँ ! अब वैसा कुछ नहीं होगा।

माध्यु : (माँ के पास आकर) माताजी, तुम्हारे बेटे जैसे कितने ही सपूतों को उन्होंने जेल में बन्द करके, तरह-तरह की यन्त्रणाएं देकर मार डाला। आज भी कितने ही लोगों को जेल में बन्द कर रखा है। कितने ही लोग 'अण्डरग्राउण्ड' में पड़े सड़ रहे हैं। मां, यह सब खत्म करने के ही लिए हम लोग कोशिशें कर रहे हैं। अगर हम कुछ न *करके बैठ जायें, तो वे लोग हम सब को बरबाद कर देंगे !*

कल्याणी : (माध्यु की बात से दिल मे हुए दर्द से) मेरे बच्चे, यह मार-पीट की बात सुनते ही मेरे बदन में रोंगटे खड़े हो जाते हैं। गोपालन के लिए मेरे दिल में जो प्रेम है, वह वैसा ही है न जैसा सभी माताओं को अपने-आपने लालो के प्रति होता है ! मुझे जरा उस तरफ जाना है, बच्चे !

माध्यु : ऐं !

(कल्याणी जाने लगती है।)

गोपालन : कुछ खाने के लिए है मां, भूख लगी है।

कल्याणी : (घूमकर) हाँ, बेटा !

गोपालन : क्या चीज है, माँ ?

कल्याणी : (कुछ बेचैन-सी होकर मुस्कराती हुई) तू आ—तभी पता चलेगा।

गोपालन : (मजाक में मुस्कराहट के साथ) तब तो कोई ऐसी चीज है, जिसका पता कामरेड को लग जाये, तो ठीक नहीं होगा, इसीलिए माँ कहने से हिचकती हैं।

मीना : (खिलखिला कर हँसती हुई) मैं बताऊँ, भैया ? तापियेका का पूट ! [१]

गोपालन : (उसी मजाक में) ठीक !—वह तो अच्छा है न ! (माध्यु की ओर मुड़ कर) हम बड़े लोग रात को सिर्फ काफी ही पीकर गुजारा करते हैं !

कल्याणी : (प्रेम पूर्वक) तू आ तो—(अन्दर जाती है)।

---

१. *एक प्रकार का पकवान जो चावल या तापियेका के आटे से बनाया* जाता है।

गोपालन : (मीना से) तू क्यों खड़ी हँस रही हो ? जा मां के साथ। भैया और कामरेड को जरा बातें करने दे।

मीना : (अन्दर की ओर कुछ कदम जाकर वापिस आकर तीव्र अभिलाषा के साथ)—भैया क्या सचमुच घाघरा सिलने दिया है ?

गोपालन : (प्रेमपूर्वक हँसते हुए) तू उस चीज को अभी भूली नहीं। (उसके सिर पर हाथ फेर कर समझाने के तात्पर्य से) बहन को भैया एक घाघरा और ब्लाउज सिलाकर देनेवाला है !

मीना : (चेहरे पर चिन्ता का भाव प्रकट कर) भैया कब से कह रहे हैं !

गोपालन : (खेदपूर्वक) इसीलिए न कि भैया के पास पैसे नहीं हैं !

मीना : (निराश होकर) अब फिर कब पैसे होंगे ? मेरे पास एक ही घाघरा है। सब लड़कियाँ अच्छे-अच्छे घाघरे पहनकर स्कूल आती हैं।

(माथ्यू के चेहरे पर मुर्झाहट आ जाती है।)

गोपालन : (बड़े विषाद के साथ) बच्ची, हमारे पास पैसे हो जायें, ऐसे जमाने को लाने के लिए ही भैया और सब कामरेड कोशिश कर रहे हैं !

मीना : (अत्यधिक निराशा के साथ) तब मुझे घाघरा कब मिलेगा !—

गोपालन : घाघरा जहाँ तक हो सके, जल्दी सिलवा दूंगा। मुझे हमेशा परेशान न करना !

मीना : नहीं करूँगी, लेकिन तुम लाओगे ?

गोपालन : ला दूंगा।

(मीना किताबें और साप्ताहिक पत्र उठाकर ले जाती है।)

माथ्यू : (लम्बी साँस लेकर) बेचारे बच्चे ! उनसे शोषण के बारे में कहने से क्या लाभ ?

गोपालन : (चिन्तापूर्वक) सच कहूँ तो भूखे रहने से जो तकलीफ होती है, उससे ज्यादा तकलीफ इन बच्चों की ख्वाहिशें पूरी न करने पर होती है ! उसका भी शौक है न, दूसरे बच्चों की तरह सज-धजकर जाने का !

(मीना किताबें वगैरह हाथ मे लेकर दौड़ी चली आती है।)

मीना : भैया एक बात भूल गयी ! एक गाना लिख देना !

गोपालन : क्यो ?

मीना : हमारे स्कूल में एक लडकी पढती है, उसके लिए !

माथ्यु : किस लडकी के लिए ?

मीना : छठे दर्जे में पढनेवाली एक लड़की के लिए।

गोपालन : किस लडकी के लिए री ?

मीना : बडे घर की सुमम के लिए !

गोपालन : सुमम गाती है ?

मीना : वाह ! कितना बढ़िया गाती है ! तुम से कहीं बढिया—बहुत बढ़िया !

गोपालन : उस बात को रहने दे। सुमम से यह किसने कहा कि मैं गाने लिखता हूँ ?

मीना : सो मैं नही जानती !

गोपालन : झूठी—तूने नहीं कहा उससे ?

मीना : (एक ही एक साँस मे) मेरे पिताजी की कसम, ईश्वर की कसम—मैंने नहीं कहा है !

(गोपालन और माथ्यु हँस पड़ते हैं।)

गोपालन : अच्छा, तुम जाओ। मैं लिख दूँगा।

मीना : आज ही लिख देना।

गोपालन : आज ही लिख दूँगा।

मीना : (उँगली दिखाकर) अगर लिखकर नहीं दिया, तो !...

गोपालन : (हाथ उठाकर) नहीं लिखा तो क्या तू मुझे मारेगी !—जा उस तरफ !

(वह दौडी चली जाती है।)

माथ्यु : (हँसते हुए) वाह—हां, यह सुमम हम लोगो के काफी नजदीक आ रही है। (एक बीडी सुलगाते हैं और कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

गोपालन : उस दिन तुम्हारे कहने के बाद ही मैं उसकी ओर ध्यान देने लगा था। मुझे ताज्जुब होता है कि उस गन्दे वातावरण में पैदा हुई इस लड़की में *इस तरह की तब्दीली कैसे आई !*

माध्यु : इस पर ताज्जुब करने की कौन-सी बात है (गोपालन की ओर विशेष तात्पर्य से देखते हुए) जो भी हो, तुम तो तनिक भाग्यवान ही हो!

गोपालन : ऐसा क्यो ?

माध्यु : तुमने देख-देख कर पकड़ लिया न!

गोपालन : तुम्हें तो मजाक सूझता है! दुश्मन लोग क्या-क्या बातें फैलायेंगे, मालूम है ?

माध्यु : क्या-क्या फैलायेंगे ?

गोपालन : वे कहेंगे, सार्वजनिक सेवा के लिए निकलने वाली लड़कियो से प्रेम करना ही इन सब का काम है, यही इनका कम्युनिज्म है—वगैरह. . .।

माध्यु : (बहुत ही हल्के ढग से और मज़ाक मे) हाँ, कहने लगेंगे।

गोपालन : (माध्यु के गले में हाथ डालकर) मेरे लाख कोशिश करने पर भी मैं उसे याद किये बिना नहीं रह सकता। मैं कमजोर दिलवाला हूँ।

माध्यु : (एकदम मजाक मे) सो तो इस बीमारी का एक लक्षण है!

गोपालन : ऐसा इल्जाम मुझ पर नहीं लगाया जायेगा ?

माध्यु : (उसी स्वर मे) लगाया जायेगा तो ? तब क्या होगा ?

गोपालन : अगर लगाया गया तो ?

माध्यु : अगर ऐसा इल्जाम लगाया गया तो उसे दूर करने के लिए कोशिश करनी चाहिये। अरे—जनता तुम्हारे जैसे कमजोर दिल की थोड़े ही होती है !

गोपालन : आजकल तुम सब मिलकर मुझे खूब बनाया करते हो।

माध्यु : तुम आजकल कुछ उदास हो गये हो। कुछ लिखते-पढते हो है नहीं। दूसरे लोगो को भी चैन से रहने नहीं देते, यही पेशा है न! जिस किसी चीज के बारे में बात उठायें, फौरन घुमा फिराकर उसे सुमम के पास ले जाओगे। इस काम में तुम होशियार हो।

गोपालन : तुम ठीक कह रहे हो। उसने मुझ पर बुरी तरह जादू कर दिया है। उसके सुन्दर गानों—कोमल चेहरे ने. . .

माध्यु : हाँ—हाँ ! अच्छा बन्द करो जी ! —(हाथ से एक बीडी निकालकर

गोपालन की ओर बढाकर) लो—तुम जरा इसे पी लो, जिससे तुम्हारे सिर को कुछ और रोशनी मिल जाये !

गोपालन (शर्मिंदा होकर) तुम कैसे नीरस आदमी हो यार !

माध्यु यह प्रेम कितनी भयकर चीज है !

गोपालन भयकर यह नहीं है। इस केशवन नायर के बार-बार पीटने पर भी उसका तनिक भी विचलित न होना ही आश्चयजनक चीज है।

माध्यु यह सब सुन कर फिर उत्तेजित होने से क्या लाभ ! ऐसे घरो से आनेवाले सब लोगों को, तुम समेत—दो क्षेत्रों में सग्राम करना होता है एक आम दुश्मन से, दूसरा घर के अन्दर ! मेरी राय है कि तुम खुद इस मामले पर गौर नहीं करते।

गोपालन कामरेड, उस दिन तुम्हारे कहने के बाद मैं बहुत ज्यादा ध्यान देता रहता हूँ। पिताजी की आदत में कोई परिवर्तन दिखलाई नहीं देता।

माध्यु कोशिश करने से परिवतन नहीं होगा ! वाह !—यह तो एक नया फिलसफा है !

गोपालन यह सोचकर हम यहाँ—(दूर किसी चीज़ को देखकर माध्यु को खुजला कर बुलाते हुए) अरे एक मशाल है न यह, जो दिखाई देती है ?

माध्यु ऐं, मशाल ?—(उठते हैं)

गोपालन मशाल ही है—पिताजी ही हैं।

माध्यु तो हम निकलें यहाँ से।

गोपालन हां, निकलें। (बाहर जाते समय आवाज देता है— मीना मीना'— अन्दर से मीना क्या है भैया ?)

गोपालन अरी पिताजी आ रहे हैं !

(गोपालन और माध्यु फौरन चले जाते हैं। दूसरी तरफ से किताबें वगैरह समेटकर मीना प्रवेश करती है। आने के साथ भक्तिपूवक कीतन पाठ करन लगती है।

थोडी देर के बाद मशाल लेकर आगे पप्पु और पीछे परमुपिल्ला आगन म प्रवेश करते हैं। पप्पु के बगल म एक बोरा भी है। पप्पु

मशाल बुझाकर आगन मे रखता है। परमुपिल्ला सामनेवाले चबूतरे पर चढते है। उनके चेहरे पर चिन्ता के लक्षण हैं।

मीना इन बातो पर ध्यान दिये बिना ही कीर्तन पाठ करती रहती है।)

परमु : पप्पु, जाने की जल्दी है ?

पप्पु : खाना तैयार होने पर वहाँ पहुँच जाना काफी है।

परमु : (मानो नही सुना है) क्या कहा, क्या कहा ?—(फौरन मीना की ओर मुँह करके) ऐं, यह लड़की ! (मीना कीर्तन बन्द करती है। परमुपिल्ला उससे) अरी लड़की धीरे-धीरे पाठ करना काफी है। भक्तिपूर्वक करना चाहिए, बस ! (पप्पु से) क्या कहा ? (लकडी ठीक तरह से रखकर कुर्सी पर बैठते है।)

(मीना धीमी आवाज़ मे शुरू करके धीरे-धीरे जोर-जोर से कीर्तन पाठ करने लगती है।)

पप्पु : खाना तैयार होने पर वहाँ पहुँचना काफी है।

परमु : (फिर बात स्पष्ट न होने से कान पर हाथ रखकर) खाना—?

पप्पु : घर जाने की बात कर रहा था।

परमु : (फिर भी न सुन पाने से नाराज़ होकर मीना से) अरी मीनाक्षी ?

मीना : क्या ?

परमु : तू शाम से कीर्तन कर रही है न ?

मीना : हाँ, पिताजी।

परमु : तो उसे बन्द कर, पाठ पढ़। धीरे-धीरे पढ़ना।

(मीना किताबें ढूँढने लगती है।)

परमु : पप्पु, जरा नजदीक खड़े हो जाओ। मैं उनकी बात सोच रहा हूँ !

(हाथ पर गाल टेककर बैठ जाते हैं।)

पप्पु : (कुछ और पास खडा होकर) बात तो कुछ वैसी ही है। इन्सान पैसे के पीछे पागल हो जाता है, अन्धा हो जाता है।

परमु : फिर भी क्या अन्धा होना चाहिए !—सारी दुनिया को भले ही भूल

जाये, अपने लोगों को नहीं भूल जाना चाहिए। एक बार केशवन नायर के पिता वारण्ट पर गिरफ्तार कर लिये गये। मेरे बड़े मामा का जमाना था। मामा ने रकम नकद गिनकर के जमा कर उन्हें जमानत पर छुड़ा लिया। वारंट-सिपाही के आने का पता लगते ही तिजोरी से दो मुट्ठी अशर्फियां उसकी गोद में डालकर ही मामा बाहर निकले थे। उन दिनों ये नोट-वोट इतने ज्यादा चले नहीं थे! झूठ नहीं कह रहा हूँ—मरते दम तक उन्होंने एहसान माना था!

(मीना जोर से पाठ पढ़ने लगती है।)

पप्पु: कितने रुपये के लिए हुण्डी लिखी है?

परमु: (कान के पीछे हाथ लगाकर ध्यान से सुनते हुए) एँ—क्या कहा?

पप्पु: हुण्डी कितनी रकम के लिए लिखी है?

परमु: मशाल?

पप्पु: नहीं हुण्डी!

परमु: (मीना की ओर बहुत ही गुस्से से देखकर) धत्, यह लड़की मानेगी नहीं!

(मीना पढ़ना बन्द कर देती है।)

परमु: जब बातचीत करने लगूं तो वह का-की करके शुरू करेगी (कुछ गंभीरता के साथ) तू स्कूल से कब आयी थी, बेटी?

मीना: (अपराधी की तरह) चार बजे के बाद।

परमु: फिर अब तक क्या कर रही थी?

(मीना चुप हो जाती है।)

परमु: बच्चों को तो शाम के वक्त और तड़के पढ़ना चाहिए। पर उस समय तू पहुँच जायेगी काजू के पेड़ पर चढ़ने! (पप्पु से) जब मैं छोटा था, एकदम तड़के उठा करता था। उठ जाने पर हाथ-मुँह धोकर ईश्वर-वन्दना करके पढ़ने बैठता। उससे हुआ क्या कि आज भी हिसाब किताब का मैं पक्का हूँ। एक दिन जरा ज्यादा वक्त सो गया। फिर क्या था, बड़े मामा नरकासुर की तरह आ धमके! उन्होंने

एक घडा पानी ला धडाधड मेरे ऊपर उँडेल दिया! पिताजी की कसम—उसके बाद फिर कभी भी देर तक नहीं सोया। (गुस्से से मीना की ओर देखकर) जा भाग लड़की, उस तरफ!

(मीना चेहरा फुलाकर किताबें समेट कर चली जाती है।)

परमु॰ (मीना के हाथ मे जो 'नवयुगम' था, उस पर नज़र पड़ने पर) वह क्या चीज है?—क्या है?

मीना किताब। ('नवयुगम' को छिपाकर किताब उठा कर दिखाती है।)

परमु: (गुस्से से) किताब नहीं। मैंने पूछा वह अखबार कौन-सा है?

मीना॰ (चोरी से) बाबूजी मुझे एक लड़के ने किताब पर कागज चढाने के लिए दिया था!

परमु किताब पर कागज चढ़ाने के लिए! (पप्पु से) घर में जो नून-तेल था, उसे ले जाकर खरीद लाई है। हाँ, ले जाने दो।

पप्पु॰ बच्ची है न?

(मीना जाती है। जाते समय पप्पु की टिप्पणी सुनकर उसे मुँह बनाव दिखलाती है। परमुपिल्ला इस बात को देख लेते हैं। पप्पु व परमुपिल्ला एक-दूसरे की ओर देखकर मीना की इस शरा हँसते हैं। पप्पु दाँत बाहर दिखाये बिना ही हँसता है।)

परमु (हँसी को नियन्त्रित करके) मीनाक्षी . अरी मीनाक्षी ..।

(मीना अन्दर से जवाब देती है!)

परमु: यहाँ आ बेटी। (कुछ देर के बाद) अरी यहाँ आ न!

(मीना आकर कुछ घबडाई-सी खडी हो जाती है।)

परमु॰ अरी, यहाँ आने के लिए कहा है न, तुमसे? यहाँ आगे आ हो जा।

(वह आगे बढ़कर खडी हो जाती है। परमुपिल्ला गौर से उ की ओर देखते हैं। उसके बाद पप्पु की ओर देखते ही फिर हैं, पप्पु भी पूर्ववत हँसता है। उसे देखकर मीना भी हँस

परमु: (एकदम शान्त होकर) बेटी ने खाना खाया?

मीना नहीं।

परमू तो बेटी मेरी, अब खाना खाकर जाकर सो जा। तड़के उठकर पढ़ लेना, समझी ?

मीना ठीक है, पिताजी। (जाती है।)

परमू (कुछ देर तक उसकी ओर देखते रहने के बाद लम्बी सांस लेकर पप्पु की ओर घूमकर) पप्पु—तुम हुंडी की बात पूछ रहे थे क्या ?

पप्पु जी हां !

परमू हुंडी ढाई सौ के लिए मुसीबत आ पड़ने पर हमने लिखी है न ! फिर उसका सूद। तुम वहाँ क्यों खड़े हो ? चबूतरे पर बैठ जाओ न ! आजकल के जमाने में ऐसी कोई बात नहीं ! कहते भी हैं न कि सांप खाने वाले देश में जायें तो बीच ही का टुकड़ा खाना चाहिए ! उस चबूतरे पर बैठ जाओ !

पप्पु *(चबूतरे पर बैठ जाता है)* रकम दे देने पर सूद माफ नहीं करेंगे ?

परमू रकम ही नहीं, सूद भी दूंगा। उन्हें मेरी मुसीबत समझनी चाहिए न ? यह चाहते हैं कि मैं यह जमीन उन्हें गिरवी रख दूं, नहीं तो हमारी जो जमीन जमानत के तौर पर उनके पास है, उसका मालिकाना हक उन्हें दे दूं। मुझे कम-से कम पचास रुपये तो फौरन ही चाहिए। और नहीं तो इस साल इस मकान की छत तो बनवानी ही होगी न ? जब तुम धान लेकर आये, उस वक्त मैं ये ही बातें कर रहा था।

पप्पु अपनी बात सोच कर लम्बी सांस लेकर क्या करें ! वह एकदम बेरहमी का काम करते हैं। लगान सिर्फ ५० परा[1] धान है। हर फसल पर मैं पच्चीस परा धान उन्हें तौल कर दे देता हूँ। इस बार की फसल बहुत खराब थी। होगी भी क्यों नहीं ? खाद के लिए कुछ चाहिए कि नहीं ? खाद तो सिर्फ दो बैलों का गोबर ही है न ? मैंने कहा कि दस परा धान अगली फसल पर दे दूंगा, लेकिन सुनता कौन है ? देखिये

---

१ परा=लगभग ७½ सेर।

पप्पु : नहीं।

परमु : हाँ—फिर कैसे होगा ? (गला साफ कर लय में सुनाते हैं।)

दश शत चूहे हों फिर भी
बाघ से टक्कर कैसे लेंगे ?
सियार लाख भले मिल जायें
सिंहशावक को क्या मारेंगे ?

मारना माने—हिंसा करना !

(पप्पु इस तरह मुँह खोले देखता रहता है जैसे कुछ भी न समझ रहा हो।)

परमु : तुम इसका मतलब नहीं समझे ?

पप्पु : जी नहीं—

परमु : जब हम चूहा—बाघ वगैरह कहते हैं, तो उसका मतलब मामूली चूहे या बाघ वगैरह से नहीं होता है। चूहा, मतलब जीवात्मा। बाघ—परमात्मा ! (पप्पु वैसे ही देखता रहता है।) अनगिनत तादाद में जीवात्मा एक हो जायें तब भी इस परमात्मा का मुकाबला वे भला कर सकते हैं ?—यही तात्पर्य है। (स्वयं इस व्याख्या का आनंद लेकर हँसते हैं।)

कल्याणी : लीजिये, पान लीजिये। (आगे बढ़ा देती हैं।)

परमु : (लेकर मुँह में डालकर) पप्पु को भी दो न।

पप्पु : सुनते तो हैं कि कहीं मजदूरों और किसानों की जमात बनी और उससे फायदा भी हुआ।

परमु : पिछले जमाने में देखा है न ! किसी जगह हुई चीज तुमने देखी भी है क्या ?

पप्पु : कहते सुना है, बस।

कल्याणी : सब लोग ऐसा कहा करते हैं।

परमु : (बात में कुछ दिलचस्पी लेकर) तुम्हारे में सब लोग हैं कौन ? तुम्हारा लड़का ! और उसीके जैसे बिना आगे-पीछे देखे चलने वाले कुछ और

न, उन्होंने यह कहकर थान उठा कर फेंक दिया कि जबतक पूरा थान न लाऊँ, वह नहीं लेंगे। क्या करें? हैरान कर दिया!

परमु: (पप्पु ने जो बात कही, उस पर उचित ध्यान न देकर अपनी बात को सोच कर काफी खिन्न होकर) क्या करेंगे! जो होगा, होने दो। कोई एक चीज दे दूंगा।

पप्पु: कोई दूसरा जरिया हो तो मत देना। अपनी निजी मुट्ठी भर जमीन न होने से जो तकलीफ मुझे हुई है, उसी से यह सब कह रहा हूँ।

परमु: ऐसा कहने से काम कैसे चलेगा, पप्पु? इस मुसीबत को तो दूर करना ही है! घर की छत बनवाये बिना काम कैसे चलेगा? सब कुछ ईश्वर की ही देन है! किसी जमाने में कैसे मजे में हमारा गुजारा होता था?

(कल्याणी रसोई का काम सब खतम करके पानदान लेकर प्रवेश करती है। पानदान पति के आगे रखकर और कुछ दूर हट कर बैठकर पान लगाती है।)

पप्पु: यह सब देखने और सुनने पर ही लगता है कम्युनिस्ट लोग जो कुछ कहते हैं, वही सही है।

परमु: (बेचैनी से) धत्, वे लोग क्या चावल का कौर बना कर दे देंगे?

पप्पु: लगान कम करनी चाहिए, किसान को जमीन पर स्थाई हक मिलना चाहिए—यही सब तो वे लोग कहा करते हैं। फिर वे यह भी कहते हैं कि जब उनका राज हो जायेगा तो किसानों को जमीन दे देंगे।

परमु: (मजाक में) तब फिर केशवन नायर को लगान कम करने के लिए उन लोगों के कहने भर की देर है! वे लोग किसकी जमीन उठाकर देंगे? गिलहरी के हिलाने से कहीं फल गिरेंगे, पप्पु?

पप्पु: (कुछ सोचकर) सब लोग एक हो जायें तो ये लोग क्या करेंगे?

परमु: (बहुत ही गौर से) अरे आजकल के जमाने में हरएक आदमी मालिक होता है। कोई एक आदमी कुछ कहे तो दूसरा सुनता नहीं। सब लोग एक हो जायें! तुमने बच्चों की दूसरी किताब नहीं पढ़ी है?—

पप्पु : नहीं।

परम् : हाँ—फिर कैसे होगा ? (गला साफ कर लय मे सुनाते है।)

दश शत चूहे हो फिर भी
बाघ से टक्कर कैसे लेंगे ?
सियार लाख भले मिल जायें
सिंहशावक को क्या मारेंगे ?

मारना माने—हिंसा करना !

(पप्पु इस तरह मुँह खोले देखता रहता है जैसे कुछ भी न समझ रहा हो।)

परम् : तुम इसका मतलब नहीं समझे ?

पप्पु : जी नहीं—

परम् : जब हम चूहा–बाघ वगैरह कहते हैं, तो उसका मतलब मामूली चूहे या बाघ वगैरह से नहीं होता है। चूहा, मतलब जीवात्मा। बाघ—परमात्मा ! (पप्पु वैसे ही देखता रहता है।) अनगिनत तादाद में जीवात्मा एक हो जायें तब भी इस परमात्मा का मुकाबला वे भला कर सकते हैं ?—यही तात्पर्य है। (स्वय इस व्याख्या का आनद लेकर हँसते हैं।)

कल्याणी : लीजिये, पान लीजिये। (आगे बढा लेती हैं।)

परम् : (लेकर मुँह मे डालकर) पप्पु को भी दो न।

पप्पु : सुनते तो हैं कि कहीं मजदूरों और किसानों की जमात बनी और उससे फायदा भी हुआ।

परम् : पिछले जमाने में देखा है न ! किसी जगह हुई चीज तुमने देखी भी है क्या ?

पप्पु : कहते सुना है, बस।

कल्याणी : सब लोग ऐसा कहा करते हैं।

परम् : (बात मे कुछ दिलचस्पी लेकर) तुम्हारे ये सब लोग हैं कौन ? तुम्हारा लड़का ! और उसीके जैसे बिना आगे-पीछे देखे चलने वाले कुछ और

लोग भी कहते होगे।

पप्पु (उठकर मानो दढ निश्चय कर लिया है) पप्पु ने एक काम कर लिया, किसान सभा में शामिल हो गया ! अगर शामिल न भी होता तो कोई हिफाजत नहीं थी न ! यदि सेर भर धान भी लगान में कम करा सकू तो वह फायदा तो है न !

परमु (स्पष्ट असन्तोष से) तुम्हें म क्या सलाह दू ! खुद अपने लडके को सलाह देकर ठिकाने लाना मेरे बस की बात नहीं रही है। पुलिसवालो को फिर बुलावा देन का काम है ! यदि ऐसा हो गया तो (चुटकी बजाकर) तुम मुझे कुत्त को बुलाने की तरह बुला लेना !

कल्याणी (नीतिपूर्वक) इस बात को जाने दीजिये न ! जिस काम के लिए गये थ, उसका क्या हुआ ? (पप्पु को पान देती है।)

परमु (पप्पु के प्रति जो गुस्सा है उसे कल्याणी के प्रति प्रकट करते हुए) जिस काम के लिए मं गया था उसके बारे में पूछने की तुम्हें क्या जरूरत है ! तुम्हारा बटा देश जीत लेगा, तो तुम उसके साथ रह लेना।

पप्पु (पान खा कर) पहले जो जमीन गिरवी रखी जा चुकी है, उसको छोड दो—यही तो वे सब कह रहे हं।

कल्याणी वाह रे वाह ! ऐसा नहीं करना चाहिए।

परमु (गुस्से मे आकर) तो तुम अपने बाप की जायदाद उनके नाम करा दो !

कल्याणी सुना पप्पु, तुमने ! यह जमीन भी उन्हें गिरवी रख दें तो कहां जायें ? (परमुपिल्ला चुपचाप बैठ है। कुछ देर तक कोई कुछ नही बोलता।)

पप्पु अच्छा म चलता हूँ—

परमु (जरा सजग होकर) हूं ? अच्छा जाओ ! (पत्नी से) वह मशाल जरा जला दो जी, उसके लिए।

(पप्पु धान का बोरा रखकर खडा हो जाता है और मशाल उठाकर कल्याणी के हाथ म दे देता है। कल्याणी चिराग से मशाल जलाकर पप्पु के हाथ म दे देती है।)

परम् : (थूकने के वाद ग्राकर मशाल जलायी देख कर) धत् ! फिर भला हो तो, कैसे हो ?

(कल्याणी गलती स्वीकार करने के अभिप्राय से मशाल पप्पु से वापिस ले लेती है और चिराग बुझा कर फिर मशाल से उसे जला लेती है और इस प्रकार फिर चिराग मे ऐश्वर्य लाकर मशाल पप्पु के हाथ मे दे देती है।)

पप्पु : अच्छा, राम-राम !

परम् : अच्छा, राम-राम ! (पप्पु जाता है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ४

[केशवन नायर की कोठी का सामनेवाला कमरा। यद्यपि केशवन नायर सामन्ती शोषण और पतनोन्मुखी सामन्ती संस्कृति के प्रतिनिधि हैं फिर भी पूंजीवादी संस्कृति ने भी उन पर असर डालना शुरू कर दिया है। उनका रहन-सहन ठेठ जमींदाराना-सा नहीं है। लेकिन पूंजीपति का-सा भी नहीं कहा जा सकता। वह गाँव के मुखिया हैं। घर पर पूंजीवाद की छाप है। नये ढंग की मेज और कुर्सियाँ वगैरह वहाँ मौजूद हैं। दीवार पर गांधी नेहरू जैसे नेताओं की तस्वीरें टंगी हुई हैं।

सुमम मेज के पास ही एक कुर्सी पर बैठी जरा अन्यमनस्क होकर एक किताब के पन्ने उलटती हुई गा रही है। उम्र १७ वर्ष के लगभग। खासी सुन्दर है। घाघरा और ब्लाउज पहने है। बाँये हाथ में पड़ी काले रंग की चूड़ियाँ उसके गोरे बदन पर खूब खिलती हैं। घुँघराले, सुन्दर बाल एक लाल फीते से बँधे हुए हैं। सबेरे का समय।

मीना प्रवेश करती है। बिना आवाज़ किये धीरे-से पीछे से आकर अपने हाथों से सुमम की आँखें बन्द कर लेती है। वह एकाएक गाना बन्द कर मीना का हाथ छुड़वाने की कोशिश करती है।]

सुमम छोड़ो, छोड़ो—(फिर हाथ छुड़वाने की कोशिश करती है और अपने हाथ से टटोलकर उसे पहचानने की कोशिश करते हुए) ठहरो—मैं कहूँगी—कौन है? कल्याणी है न?

(मीना हँसी को काबू में करके अपना बदन उसके स्पर्श के बाहर करके खड़ी हो जाती है।)

सुमम (फिर टटोलकर) खिलवाड़ मत करो, मैं सुमम हूँ। मेरी आँखों से हाथ हटा लो तो मैं तुम्हें एक चीज दूँगी।

मीना क्या दोगी?

सुमम मीना है क्या ? शरारती लड़की !

(मीना आंखों से हाथ हटाकर हँसती हुई खड़ी हो जाती है।)

सुमम अकेली आई हो या पिताजी वगैरह भी आये हैं ?

मीना पिताजी तो नहीं आये हैं। हाँ, एक आदमी आये हैं !

सुमम कौन है मीना ?

मीना भैया !

सुमम (लजाकर) जा री (बात बदल कर) तुम अपनी माँ को क्यों नहीं लाई, मीना ? माँ से मिले न जाने कितने दिन हो गये हैं ? उनकी खांसी की बीमारी अब कैसी है ?

मीना माँ रोज तुम्हारे बारे में कहती रहती हैं।

सुमम किससे ?

मीना माधव कामरेड और भैया से !

सुमम अच्छे भैया ठहरे ! तुमने अभी तक मुझे भैया का लिखा गाना लाकर नहीं दिया न ?

मीना मैं हमेशा उनसे कहती रहती हूँ।

सुमम तो फिर ?

मीना वह कहते हैं—नहीं होगा !

सुमम तो तुम कहने आयी हो कि गाना नहीं है।

मीना (हँसती हुई) नहीं, एक छोटा-सा गाना जरूर ले आयी हूँ।

सुमम (मीना के चेहरे पर प्रेमपूर्वक सहलाते हुए) तभी तुम झूठ बोल रही हो—झूठी कहीं की ! मुझे दे दो, पिताजी अब आते ही होंगे।

मीना (गाना लिखा कागज हाथ में लेकर) यूं ही देकर थोड़े ही जाऊँगी। हाँ, तुम इसे गाकर सुनाओ तो दे दूँगी।

सुमम (जिद से उसके हाथ से कागज लेने की कोशिश करते हुए) दे न मुझे मेरी लाडली ! वह बेलु तो उधर कहीं खड़ा रहा होगा !

मीना इसे गाकर सुनाओ तो दे दूंगी।

सुमम : गाऊँगी ! -- तू मुझे दे तो सही।

(मीना कागज दे देती है। सुमम वह गीत गाती है। वह एक इन्कलाबी गाना है। गाना खत्म होने के साथ वेलु प्रवेश करता है।)

वेलु : बेटी !

(सुमम गाना बन्द करती है। मीना सुमम के पीछे खिसक जाती है।)

वेलु : बेटी--ऐसा गाना हमारे लायक नहीं है! "कम्युनिज्म--कम्युनिज्म" कहकर लड़ाई-झगडा मचा हुआ है।

सुमम : वेलु तुम्हें यहाँ खड़े किसी ने देखा था ! अब पिताजी के आने पर नमक मिर्च लगाकर उनसे सब कुछ कह देगा !

वेलु : देखो न बेटी---गरीब की गुजर नहीं है। पानी हमेशा नीचे की तरफ ही बहेगा, बेटी। (मीना को देखकर) अहा—कौन ! यह छोटी लडकी कब आयी ? (गौर से देखकर) भाई परमुपिल्ला घर पर हैं ?

सुमम : वेलु, पिताजी कहाँ गये हैं ? अदालत गये हैं क्या ?

वेलु : क्या कह रही है बेटी---वेलु के बिना वह कचहरी कहाँ जा सकते हैं ? वह इन्स्पेक्टर साहब के यहाँ दावत खाने गये हुए हैं। ऐसी कौन-सी जगह है, जहाँ से उन्हें दावत नहीं मिलती ? भाग्यवान आदमी हैं न ? (गाने की बात सोच कर)--बेटी, एक बात सुनो। इस तरह के गाने-वाने मत गाया करो। दूसरे गाने भी तो हैं न ? अच्छे घरों की लड़कियों को ऐसे ही गीत गाने चाहिए। लघु स्वर से शुरू करके मध्यम स्वर पर पहुँचना चाहिए।

मीना : ओपफो ! तुम्हें तो यह लघु और मध्यम स्वर सब मालूम है !

वेलु : क्या बात है बच्चो ! वेलु ने तो बचपन में ही कुछ संगीत सीख लिया था न ! बचपन में नाटकों में भी हिस्सा लिया है मैंने।

मीना : भला किसका पार्ट लेते थे ?

वेलु : कुमरगम वेलुनायर की अल्ली का पार्ट।—नाटक भवन ठसाठस

भरा हुआ था ! अनिष्टम तिरुनाल महाराजा है न—अनिष्टम तिरुनाल !—

सुमम : कौन ?

वेलु : अनिष्टम तिरुनाल !

(सुमम और मीना हँसती है।)

वेलु : उन्होंने मुझे इनाम के तौर पर एक सोने का हार देने का विचार किया था। (सुमम से) बेटी, हमारे नारायणन आशारी को जानती हो ?

सुमम : नहीं !

वेलु : (इस अभिप्राय से कि क्यों नही जानती) नारायणन आशारी ?

सुमम : हम लोग नहीं जानते—

मीना : यह कौन-सी बला है !

वेलु : नहीं तो ! तुम लोग जानोगे भी कैसे कि नारायणन आशारी कौन है ?

सुमम : कौन है ?

वेलु : (कन्धे की ओर इशारा करते हुए) यहाँ-यहाँ तक बाल !—घुंघराले घुंघराले !—लडकियाँ देख लें तो जल जायें !

मीना : अच्छा !

वेलु : कुमरगम वेलुनायर की अल्ली ! हम दोनों के प्रवेश करते समय का एक गाना है ! कितना बडा नाटक घर था वह—

(सुमम जोर से हँसती है।)

मीना : खैर, वेलु ममा जरा सुना दीजिये न।—(एकाएक केशवन नायर प्रवेश करता है।)

वेलु : (फौरन रुख बदल कर) क्या हगामा मचा रखा है तुमने, बच्चो ! किसी की बात मानती ही नहीं हो !

केशवन नायर : (गभीर होकर) क्या है ? यहाँ क्या हो रहा है ?

(मीना और सुमम एकाएक अन्दर चली जाती है।)

वेलु : ऐसी कोई बात नहीं—लड़कियाँ गा रही थीं—

केशवन नायर : धत्—लड़कियाँ—

वेलु : मैं कह ही रहा था कि हुजूर अब आते ही होंगे।—आप आ ही गये। (केशवन नायर के चेहरे की ओर देखे बिना कुर्सी ठीक जगह पर रखता है और मेज पोंछते हुए) कह ही रहा था कि आप तशरीफ ले आयें। बड़ी लम्बी उम्र है आपकी। हूँ भी न बड़े ही भाग्यवान!

केशवन नायर : (वेलु की बातें और उसका काम देखकर हँसते हुए) बिना हड्डी की जीभ है तुम्हारी! हाँ, सुमम के साथ जो लड़की अन्दर गयी है, सो कौन है? बड़ी रौनक है उसके चेहरे पर? (कुर्सी पर बैठ जाता है।)

वेलु : हमारे छोटे घर की है—

केशवन नायर : *कर्तार भैया की लड़की! (वेलु नकारात्मक जवाब देने ही वाला था कि केशवन नायर आगे कहता है)* अरी छोकरी,—देखकर पहचान भी नहीं सका तुझे! यह तो कल-परसों की ही लड़की है! लड़कियों को बड़ी होने में देर थोड़े ही लगती है, वेलु!

वेलु : जी हाँ, नहीं लगती।

केशवन नायर : अच्छा, तुमने उसकी माँ को देखा है।—बहुत ही लजीली है। बेटी भी उसी तरह...

वेलु : हुजूर! यह वह लड़की नहीं है।

केशवन नायर : फिर?

वेलु : यह तो हमारे छोटे घर की, भाई परमुपिल्ला की लड़की है।

केशवन नायर : (एकाएक रुख बदल कर) धत्! बेवकूफ कहीं का!

वेलु : तब हुजूर ने रौनक वगैरह की जो बात कही थी?

केशवन नायर : किसने कही थी?

वेलु : आपने नहीं कही?

केशवन नायर : गधे! तुमने इस बात का पता लगाया कि वह यहाँ क्यों आई है?

वेलु : सो बात तो मैं बिना पता लगाये ही बता सकता हूँ। स्कूल से भूखी आयी है।—कुछ हो तो चाट जाने दें—क्या कहते हैं?

केशवन नायर : उसके लिए तो मैं दावत दे सकता हूँ। उसका एक भाई है, वह भी तुम्हें मालूम है?

वेलु : गोपालन को मैं क्यों नहीं जानता!

केशवन नायर : तुम्हारे जानने से हुआ क्या? वह सारे गाँव में घूम कर मुझे गालियाँ देता फिरता है।

वेलु : गोपालन?

केशवन नायर : (व्यंगपूर्वक) गोपालन!

वेलु : अरे गोपालन!...

केशवन नायर : मैं और भी कुछ बातें सुनता रहता हूँ। पर वे सब कहने से क्या फायदा?

वेलु : क्या बातें हैं—कहिये न।

केशवन नायर : अरे मैं कितने बरसे से कह रहा हूँ—सुमम की शादी के लिए एक लडके को ठीक करना है।

वेलु : वह तो मैं उसी दिन से ढूँढ रहा हूँ, जिस दिन आपने कहा था।

केशवन नायर : मुझे यह सब सुनना पड रहा है—इसीलिए न कि तुम ढूँढ रहे हो!

वेलु : आप क्या समझते हैं? यह कोई ऐसा-वैसा परिवार है कि जहाँ ऐसे-वैसे किसी भी आदमी को बुला लायें!

केशवन नायर : ऐसा-वैसा आदमी!—अरे बडे घर के केशवन नायर की लडकी से ब्याह करने के लिए कोई नहीं है!

वेलु : लडकी का मिजाज ही कुछ ऐसा है कि अगर मैं चाद-सूरज को भी पकड कर ले आऊँ तो उसको थोडे ही पसन्द आयेगा!

केशवन नायर : तो तुम अब तक सूरज और चाँद को ढूँढ रहे थे क्या! इस बात का फैसला करने वाला मैं हूँ, वह नहीं है कि शादी करेगा—समझे?

वेलु : जी समझा—

केशवन नायर : समझा !

वेलु : यदि बात ऐसी है तो, हुजूर एक लडका है !

केशवन नायर : कौन है ? लडका कोई भी हो, बी० ए० पास होना चाहिए।

वेलु : वह बी० ए०, बी० एल० वकील है ! हमारे कर्ताव हुजूर का सबसे बडा लडका ..

केशवन नायर : करुणाकरन कुट्टी !

वेलु : जी हाँ—जी हाँ

केशवन नायर : ठीक है—लडका तो लायक है। इसके अलावा वह अच्छे परिवार का भी है।

वेलु : अब आप लडके को सभाल लीजिये। ..

केशवन नायर : मुझे पसन्द है।

वेलु : हुजूर, मै समझता हूँ, सुमम को भी लडका पसन्द आयेगा !

केशवन नायर : वैसा क्यों—अब इसको गुञ्जाइश नहीं है कि वह किसी और को पसन्द करे !

वेलु : एक बात और है ...

केशवन नायर : क्या बात ?

वेलु : यह लडका अब मजदूर सभा का नेता भी है !

केशवन नायर : धत्—तुम मजदूर सभा के नेता को मेरी बेटी से ब्याह कराने लाये हो !

वेलु : हुजूर, यह तो कम्युनिस्ट मजदूर सभा नहीं है।

केशवन नायर : फिर ?...

वेलु : यह तो कांग्रेस की मजदूर सभा है !

केशवन नायर : क्या कांग्रेस की भी मजदूर सभा है ?

वेलु : और नहीं तो क्या ? क्या—(कुछ सोचकर) अय्यनसी या- था —हाँ-हाँ, इण्टक ! इसी नाम से सब लोग उसे पुकारते हैं !

केशवन नायर : चाहे 'इण्टक' हो या गण्डक या और कुछ, उसके अन्दर भी मजदूर

ही हैं न—वे घूम फिर कर, आखिरकार कम्युनिज्म में ही पहुँच जायेंगे! इसलिए हमारे करुणाकरन कुट्टी से कहो कि वह उससे इस्तीफा दे दें।

वेलु हुजूर, हमारे करुणाकरन कुट्टी के इण्टक के अन्दर मज्दूर ही नहीं हैं! यह तो इसी बात पर लगे हैं कि मजदूरों से होने वाली मुसीबतें ही खत्म हो जायें। अभी हाल ही में उत्तर से एक ईसाई पादरी वगैरह ने आकर

केशवन नायर (इस अभिप्राय से कि बात समझ गया) हाँ—हाँ—ठीक है, ठीक है! ठहरो! उसीके लिए तुम इण्टक कह रहे हो! (वेनु को बात समझाने के अभिप्राय से) अरे, घटवक्च्चन और महा सभा के मंत्री वगैरह इण्टक बनाने के लिए नहीं आये थे? उसका नाम है विरोधी-मोर्चा—कम्युनिस्ट विरोधी-मोर्चा।

वेलु देखिये न, आपको सब कुछ मालूम भी है और कुछ मालूम भी नहीं! (खुद हँसकर) हुजूर, ये दोनों एक ही चीज हैं, न!

केशवन नायर कौन दोनों?

वेलु हमारे करुणाकरन कुट्टी का इण्टक और विरोधी-मोर्चा!

केशवन नायर सब कुछ जानने वाला एक होशियार लड़ा है! इसीलिए ये सब लड़ाई और सभा वगैरह लेकर निकले हैं!

वेलु हमें भी सभा करनी चाहिए, हुजूर!

केशवन नायर वह तो ठीक है! हमें भी एक बड़ी सभा करनी चाहिए।

वेलु एक से काम नहीं चलेगा, क्या कहते हैं?

केशवन नायर कई सभाएं करेंगे।

वेलु जरा धनठनकर रहना भी होगा! हम सभा ही करते रहें, उससे कैसे काम चलेगा?

केशवन नायर फिर?

वेलु उतने से ही काम न होगा! आप अगर खड़े हो जायें, तो!

केशवन नायर हैं—खड़ा हो जाऊँ, तो?

वेलु : आप खड़े हो जाइये—

केशवन नायर : किसलिए ?

वेलु : आपको खड़े हो ही जाना चाहिए !

केशवन नायर : छीः—पूरी बात कहो न !

वेलु : चुनाव के लिए।

केशवन नायर : यह भी कुछ ठीक है ! अरे—अगर मैं खड़ा हो जाऊँ और कोई मेरा विरोध करें, तो !

वेलु : यह भी कोई बात है ! आपका विरोध ही कौन करेगा ?

केशवन नायर : जमाना ही कुछ ऐसा है कि हर बदमाश और शरारती को वोट देने का हक मिला हुआ है।

वेलु : यदि कोई विरोध करे, तो भी क्या वह जीत सकता है ?

केशवन नायर : नहीं जीत सकता !—तो मैं जाकर कांग्रेसी नेताओं से मिल लूँगा।

वेलु : अच्छा बढ़िया मोटा खादी का एक कुरता वगैरह पहनकर नामिनेशन दे दें, तो समझिये कि बस—चुनाव जीत लिया ;

केशवन नायर : जीत जाऊँ, तो मेरा भविष्य उज्ज्वल होगा, वेलु !

वेलु : जी, हाँ !

केशवन नायर : रामन ज्योतिषी ने कहा है कि मेरी कुंडली में राजयोग है ! यदि जीत जाऊँ, तो मैं मंत्री बन जाऊँगा।

वेलु : जी, हाँ !

केशवन नायर : (अपने आप खुश होकर) अच्छा—मैं यदि मंत्री हो जाऊँ, तो तुम्हें क्या इनाम दूँ ?

वेलु : मुझे कुछ नहीं चाहिये !

केशवन नायर : मूर्ख—मंत्री होने पर ही अपने लोगों के लिए कुछ-न-कुछ किया जाता है। तुम्हें क्या चाहिए, अभी बता दो !

वेलु : यदि आप चाहते ही हैं कि मैं जरूर कुछ ले लूँ तो मुझे एक गोश्त की दूकान का लायसेंस दे दीजिये, बस।

केशवन नायर छी, मैं तुम्हें जो देने जा रहा हूं, उसके आगे यह कुछ नहीं है! मैं कायमकुलम झील तुम्हारे नाम कर दूंगा।

वेलु मेरे नाम, हुजूर!

केशवन नायर हां, हां, तुम्हारे नाम। जरा पास आओ वेलु! मुण्डक्कयम और पशुमला के बागान भी मैं तुम्हारे नाम कर दूंगा!

वेलु वाह! ये सब भी मुझीको दीजियेगा, हुजूर—

केशवन नायर हां—तुम्हारे नाम ही। ईश्वर की कृपा बनी रहे। (वेलु का कन्धा प्रसन्नतापूर्वक थपथपाता है। वेलु प्रसन्न हो खड़ा है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ५

[वही कमरा। केशवन नायर एक कुर्सी पर बैठे हुए हैं। एक किनारे पड़े हुए बेंच पर परमुपिल्ला बैठे हैं। वह काफी परेशान दिखाई देते हैं, उनकी दृष्टि नीचे की ओर है। वेलु केशवन नायर के बगल में थोड़ी दूर हट कर जमीन पर बैठा है। दिन का वक्त है।]

केशवन नायर तो परमुपिल्ला, आप जाइये न ? मुझे भी जरा बाहर जाना है। (परमुपिल्ला काठ की पुतली की तरह चुपचाप बैठे हैं।)

वेलु (कुछ देर के बाद, सीमेंट वाली जमीन पर दियासलाई की काडी से लापरवाही के साथ लकीरें खींचते हुए केशवन नायर से कहने के अभिप्राय से) यदि कोई उपाय हो, तो भाई परमुपिल्ला की मदद कीजिये न ! यदि कोई दूसरा चारा होता तो वह यहाँ आने की तक्लीफ थोड़े ही उठाते। क्या कहते हैं ?

केशवन नायर. (कुछ परेशानी का भाव प्रकट करके) तुम क्या समझ कर बातें कर रहे हो ? तुम भी तो जानते हो न कि हमारी आमदनी कितनी है और खर्च कितना ? (जैसे बेबसी के साथ) इतना ही नहीं—कम्युनिज्म का जमाना है। यदि थोड़े से पैसे हैं भी, तो बैंक में जमा कर दें तो किसी की शिकायत सुनने की जरूरत नहीं न। कोई यह भी नहीं कहेगा कि जमीन खरीद कर इकट्ठी करता रहता है—धोखा देता है—वगैरह।

(परमुपिल्ला चुप हैं।)

वेलु: (थोड़ी देर के बाद) इस मामले में इतना ही सोचना काफी नहीं है न ! भाई परमुपिल्ला का भी खयाल करना चाहिए न ? क्या कहते हैं ?

केशवन नायर: क्या यह बात मुझे बताने की जरूरत है ? परमुपिल्ला का खयाल

करके ही मैंने इतनी बात कही थी। उनका लडका मेरे खिलाफ जो षडयन्त्र रच रहा है, उसका अगर खयाल करूँ तो—

परमुपिल्ला : (बहुत ही चालाकी के साथ) उसकी कोई बात मुझे नहीं सुननी है। इसलिए कि वह मेरे बस में नहीं है। सडा अण्डा टोकरी के बाहर!

केशवन नायर : लेकिन—अकेले परमुपिल्ला का खयाल करके मैं यहाँ तक माफ कर देता हूँ। सोचने की बात है—वरना वह यहाँ इतनी उछल-कूद करने की हिम्मत करता भी! उसकी बात जाने दो, मैं देख लूँगा! क्या उसकी वजह से मैं परमुपिल्ला को छोड सकता हूँ? इसीलिए मुझे इतनी बात कहनी पडी।

परमुपिल्ला तो एक काम कर लीजिये। उस पट्टे की जमीन का मालिकाना हक मैं आपको छोड दूँगा। मुझे काफी तकलीफ है, इसीलिए कह रहा हूँ। अब एक सेंट जमीन भी मेरे पास नहीं है!

केशवन नायर (एकाएक सिर उठाकर) इसकी जरूरत नहीं। और किसी को दे दीजिये। मेरी लगान और हुडी की रकम मुझे दे देना काफी है।

परमुपिल्ला सो क्यों केशवन नायर, आप ऐसा कैसे कहते हैं? मैंने अपनी एक सेंट जमीन भी किसी को दी है? अगर और किसी बात का नहीं तो आपके नायर जाति के होने का खयाल तो मुझे है!

केशवन नायर : इसी वजह से मैं आपको और किसी से जो कुछ मिल सकता है, उससे थोडे ज्यादा ही पैसे दे रहा हूँ।

वेलु : (केशवन नायर का समर्थन करने के अभिप्राय से) और कोई दोष भले ही हो, जमीन के लेने के जितने भी मामले हुए हैं, उन सबों में थोडे-से पैसे ज्यादा दिये बिना आपने कोई जमीन नहीं ली है!

परमुपिल्ला क्या मैंने यह कहा कि मुझे धोखा दिया है?—

केशवन नायर भाईसाहब की बात क्यों, किसी को भी ऐसा कहने का मौका मैं देनेवाला भी तो नहीं हूँ न! यह इस वजह से मैं नहीं कह रहा

हूँ कि परमुपिल्ला के पास कुल मिलाकर इतनी ही जमीन है। अगर मैं उसे भी लिखवा कर ले लूं, तो लोग कहेंगे कि मैंने एक परिवार पर आफत ढा दी। इसीलिए मैं कह रहा हूँ। यदि हाथ में पैसे हों, तो जमीन की कोई कमी है?

परमुपिल्ला : तो बात तय हो जाये। मैं हुंडी ताजी कर दूंगा। सूद की रकम भी (हुण्डी की) रकम के साथ मिलाकर लिख दूंगा।

केशवन नायर : उसकी जरूरत नहीं है। मैं सूद में तीन-चार कम कर देने के लिए तैयार हूँ। रकम नकद दे देना काफी है।

(केशवन नायर जानबूझ कर मौन धारण किये है।)

परमुपिल्ला : (कुछ देर चुप्पी साधने के बाद लम्बी सांस लेकर) यह सब कहने से काम नहीं चलेगा! मेरी फौरी जरूरत घर की छत बनवाने की है। भूखों भी रहना पड़े तो उसकी परवाह नहीं, छत तो बनवानी ही है!

परमुपिल्ला : (कुछ देर के बाद) चुप क्यों हैं?

केशवन नायर : (मानो सोचकर किसी नतीजे पर पहुँच गया हो) तो एक काम कीजिये आप।—यह मामला इस तरह से निपटाया जाये कि दोनों पक्षों का कोई नुकसान न हो। उस जमीन को पट्टे पर दे दीजिये।

परमुपिल्ला : (मानो चोट खाई हो) ओह!

केशवन नायर : जो मैं कह रहा हूँ, उसे सुन तो लीजिये। जिस दिन आप रकम लेकर आयेंगे, उसी दिन मैं जमीन छोड़ दूंगा। दस्तावेज में जो अवधि लिखी जायेगी, उसकी आप परवाह मत कीजिये। यह बात मैं आपकी भलाई के लिए कह रहा हूँ। (मानो एक शुभ-चिन्तक उपदेश दे रहा हो) यह जमीन आप क्यों रखे रहे हैं? उसका मालिकाना हक आप अपने पास रहने दीजिये—एक लड़की है न आपकी? जब जरूरत होगा, तब छुड़ा सकते हैं।

वेलु : यह शिकायत भी न हो कि हमने जमीन

केशवन नायर : इसीलिए तो मैंने यह कहा है। बाद

लेकर आयेंगे, उस समय में आपसे अवधि खत्म होने तक इन्त-जार करने के लिए कहूँगा, ऐसा आप न सोचें।

परमुपिल्ला : (डरते हुए) ऐसा मत कहिये। बात यह है कि बिना किसी आम-दनी के मैं अपने परिवार की गुजर-बसर कैसे करूँगा ?

केशवन नायर : उस मामले में आप घबड़ाइये नहीं। मैं कुछ जमीन आपको उचित दर पर पट्टे पर दे दूंगा।

(परमुपिल्ला चुप हो जाते हैं।)

वेलु : भाईसाहब इतना सोचने और परेशान होने की ऐसी कौन-सी बात इसमें है ? आप बेफिक्र रहें।

केशवन नायर · (बुजुर्गों के लहजे से) यह काफी नहीं। अच्छी तरह से सोच कर ही काम करना चाहिए। हम लोग एक काम कर रहे हैं। उसके किये जाने के बाद फिर कोई कुछ कह बैठे, तो उस वक्त खिन्न होने से काम न चलेगा।

वेलु : यह तो वैसे लोगों में नहीं है न।

केशवन नायर : किसी के भी बारे में वैसा ही करना चाहिए।

परमुपिल्ला : मैं अपनी परेशानियों से ये सब बातें कह रहा हूँ। उस जमीन को लिखा लें और मेरी जरूरत पूरी कर दें। घर की छत बनवाने की जरूरत है, इसलिए कह रहा हूँ। पिछले साल भी उसकी छत नहीं बनवायी थी। छातों पर धूप लगने पर मेरा मन पिघलने लगता है। कुछ भी नहीं तो भाग्यवान लोगों का बसा हुआ घर है न! छत के छूने, भीगने से उसमें कुकुरमुत्ता न पैदा हो, इसके लिए कुछ करना है न! इस तरह से एक अच्छे काम के लिए मैं आपसे मदद मांग रहा हूँ, इस बात का खयाल करके आप फैसला कीजिये!

केशवन नायर . आपका कुछ ऐसा खयाल हो गया है कि मैं आपको दोष देने के लिए कह रहा हूँ। अपने मामा की कसम, मैं सच कह रहा हूँ—कल एक आदमी ने आकर हमसे पूछा कि क्या मैं १५ परा धान

की जमीन १० परा के भाव पर ले सकता हूँ ? मैंने कहा, नहीं, मुझे जरूरत नहीं है। पैसे की वजह से नहीं। पैसा तो किसी-न-किसी तरह हो गया होता ! (एक साधु की भाँति) मुझे और जमीन की जरूरत नहीं ! यह तो—आप की तकलीफ, जरूरतमन्दी—यह सब सोचकर कहा था।

वेलु : मेरे अकेले एक आदमी की जिद्द करने से हो उस दिन उस मुहम्मद की भी जमीन ले ली थी, है न ?

केशवन नायर : सच है, किसके लिए यह सब खरीदूं ? एक लड़की है ! उसका भाग्य हुआ तो उसके दिन इससे कट जायेंगे। भाग्य ही न हो, तो हम कितना ही कमाकर रखें, क्या लाभ !

वेलु : (उठकर सविनय केशवन नायर से) मैं आपसे एक माँग करने वाला हूँ। गुस्ताखी न समझिये ! वह जमीन ही भाईसाहब को पट्टे पर दे दीजिये। क्या कहते हैं ?

(केशवन नायर इस तरह वेलु की ओर घूरता है मानो उसने उनसे किसी ऐसे दस्तावेज पर दस्तखत करा लिये हों, जिससे उनका काफी नुकसान हुआ हो। वेलु एक अपराधी की भाँति खड़ा है। दोनों परमुपिल्ला की ओर देखते हैं।)

केशवन नायर : (उस तरह घूरना जारी रखते हुए) मैं कहता हूँ, तुम आइन्दा कम-से-कम ऐसे किसी काम में सिर न डालो, जिससे तुम्हारा कोई सरोकार न हो।

वेलु : (मानो एक भूल सुधारने की चेष्टा कर रहा हो) बात यह है कि जमीन गिरवी रख लेने के बाद फिर जब अगले महीने से हम नारियल की फसल काटने के लिए वहाँ जायेंगे, तो भाई परमुपिल्ला को तकलीफ होगी; यही सोचकर कहा था।

(केशवन नायर और वेलु जानबूझकर इस अभिप्राय से चुप्पी साधे हुए हैं कि परमुपिल्ला बोलें। परमुपिल्ला चिन्तित और मौन है।)

केशवन नायर (कुछ देर के बाद) नहीं!—उस जमीन का मालिकाना हक यह चाहें किसी को भी दे दें। (माना फैसला कर लिया है) बस वह काफी है। अब और कुछ सोचने की जरूरत नहीं। (कुर्सी से उठकर) मुझे जरा बाहर जाना है, जरा स्नान भी करना है। खड़ाऊँ कहाँ रखी है, वेलु?

परमुपिल्ला (सिर उठाकर) मैं नहीं चाहता कि और किसी के पास जाऊँ। आपकी जैसी मर्जी वैसे कीजिये! लेकिन मैं कहूँगा, आप वही जमीन मुझे पट्टे पर दे दें। यह बात और किसी के कानों में पड़ने भी न पाये!

केशवन नायर नहीं-नहीं! इस पर अच्छी तरह सलाह कर लीजिये।

परमुपिल्ला मेरा तय करना काफी है। किससे सलाह करूँ? मैं अपने ही पैरों पर खड़ा हूँ।

केशवन नायर मेरी बदनामी न हो, इसीलिए बार-बार कहता हूँ। (बैठता है।)

परमुपिल्ला अपनी चीज में अपने मन से लिख दूँ, उसमें किसी का क्या नुकसान? जमीन पट्टे पर मुझे देनी होगी।

केशवन नायर उस बात को रहने दीजिये। मैं कितनी ही बड़ी छूट आपको देने के लिए तैयार हूँ।

परमुपिल्ला अब मुझे और ज्यादा नहीं सोचना है। दस्तावेज कब लिखा जायेगा?

केशवन नायर उसके लिए जरा ठहरिये।

परमुपिल्ला ठहरिये कहने से काम नहीं चलेगा। बारिश शुरू होने के पहले मुझे घर की छत बनवानी है।

केशवन नायर छत की बनवाई में कितनी गाँठ नारियल के पत्ते लगेंगे?

परमुपिल्ला पचास गाँठ पत्तों की जरूरत है। बस इतना ही काफी है न? परिवारवाले लोग ठहरे! उसे मैं बरबाद होने थोड़े ही दे सकता हूँ।

केशवन नायर : (मानो और किसी काम के लिए पता लगा रहा हो) हमारे पास नारियल के जितने पत्ते थे, वे सब बेच डाले क्या वेलु ?

वेलु : कुछ तो अब भी पड़े होंगे, उन्हें नाणु ने माँगा है।

केशवन नायर : (मानो कोई बहुत बड़ा एहसान कर रहा हो) उसे और किसी जगह से लेने दो। वे पत्ते भाई परमुपिल्ला को दे दो।

वेलु : पत्तो की कीमत आसमान पर चढ़ी हुई है !

केशवन नायर : यह बात तुमसे किसने पूछी ? दाम जो भी हो, काम चलना चाहिए न ! (परमुपिल्ला से) आज ही पत्ते ले जाकर पानी में डाल देना। बारिश के लक्षण दिखाई देते हैं !

परमुपिल्ला . गिरवी की रक़म कितनी है, यह तो आपने बताया नहीं।

केशवन नायर : उसके बारे में कहना ही क्या है ? मेरी राय तो यह है कि बहुत ही कम रकम लेनी काफी है ! आपकी भलाई के लिए मैं यह कह रहा हूँ !

परमुपिल्ला . कुछ पैसे तो मुझे नकद जरूर मिलने चाहिए।

केशवन नायर . ऐसी बात नहीं है कि सौ-पचास तो मैं किसी तरह से इंतजाम करके दे नहीं सकता ! रक़म अगर कम हो, तो आप उतनी ही जल्दी जमीन छुड़वा सकते हैं। हुण्डी की रकम ढाई सौ है न !

वेलु : हाँ, ढाई सौ है।

केशवन नायर : सूद-ऊद और दस्तावेज का खर्च सब मिलाकर तीन सौ जोड़ लो।

परमुपिल्ला : आपने पहले कहा था कि सूद कम कर देंगे ! (अनुनय विनय करने के अभिप्राय से) सूद माफ़ ही कर दीजिये न !

केशवन नायर : (मानो कोई ऐसी चीज माँग ली हो, जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती) यह कैसे होगा ! कौन-सा न्याय है यह ! मैंने यही कहा था कि यदि नकद रुपया देकर हुण्डी वापिस लेने की बात है, तो मैं थोड़ा कम कर दूंगा। इस मामले में तो मुझे अपने हाथ से पैसा फिर लगाना होता है न ! मैंने जो बात कही, उसमें कोई फर्क नहीं—वैसे ही करूँगा।

परमुपिल्ला (खिन्न होकर) अपनी मर्जी के अनुसार कीजिये !

केशवन नायर उसकी जरूरत नहीं। मन को तकलीफ देकर कुछ करना ठीक नहीं। फिर गिरवी छुड़ाते समय में चाहे कुछ रियायत कर दूं।

वेलु यह काफी है न—लेन-देन का मामला अब खतम भी तो नहीं हो रहा है !

परमुपिल्ला इसीलिए कहा कि जैसे मर्जी वैसे करें !

केशवन नायर इसमें नापसन्दी है ?

परमुपिल्ला कोई नापसन्दी नहीं !

केशवन नायर तब जोड़ लो तीन सौ रुपया। पत्तों का दाम अब की हजार १५ रुपया है। भाव काफी तेज है। नारियल से भी ज्यादा दाम नारियल के पत्ते का है। भाई परमुपिल्ला, पता लगा लो, बाजार भाव देना काफी है। फिलहाल जोड़ लो पन्द्रह। तब पन्द्रह पाँच पचहत्तर। फिर दूसरी छोटी-मोटी जरूरियातों के लिए पच्चीस रुपए जोड़ लो। छत बनवाने के लिए भी खर्चा चाहिए। चार सौ रुपए। यदि भाई साहब अच्छी तरह मेहनत करें, तो इस जमीन की आमदनी से दो साल के अन्दर इसे छुड़ा सकते हैं।

परमुपिल्ला सो न होगा। मुझे कुछ और पैसों की जरूरत भी पड़ेगी।

केशवन नायर मैं दस-बीस और दे दूंगा। लेकिन रकम जितनी ही कम होगी, उतनी ही जल्दी छुड़वा सकते हैं। कितना और चाहते हैं ?

परमुपिल्ला दस परा धान और कुछ रुपए चाहिए।

केशवन नायर दस परा धान का मतलब हुआ पचास रुपये। मुझे मंजूर है।

परमुपिल्ला धान का बाजारी भाव लगाइये।

केशवन नायर इसकी जरूरत नहीं। मैं रुपया दे दूंगा। भाई साहब ले जाइये। आप जानते हैं कि मैंने अपना धान कभी भी पाँच रुपए से कम भाव पर नहीं दिया है। जब दाम अच्छा मिलने लगेगा तब ही मैं दूंगा ! हो सकता है, अब बाजार भाव साढ़े चार हों। पाँच रुपए क्या ज्यादा है ?

परमुपिल्ला : ब्लैक में बाजार भाव चार ही रुपए हैं।

केशवन नायर : इस तरह बाल की खाल निकालते हुए हिसाब में नहीं करता। दस परा धान ले जाइये। हिसाब-किताब फिर बताऊँगा। बाकी रकम का हिसाब भी तभी बताऊँगा। नकद देने के लिए मेरे पास १५ रुपए से ज्यादा न होगा, यह बात बताये देता हूँ। हाँ— अरे वेलु!

वेलु : कहिये हुजूर?

केशवन नायर : वह पप्पु बाकी धान ले आया है कि नहीं?

वेलु : नहीं—

केशवन नायर : तो आज ही तुम उसके यहाँ जाकर दस परा धान लाकर भाई साहब को दे देना। (परमुपिल्ला से) आज कौन वार है?

वेलु : आज शनिवार है न?

केशवन नायर : तो कल कचहरी बन्द है। ऊँ—परसों होगा। मुझे कुछ और मामलों के सिलसिले में परसों कचहरी जाना भी है। ठीक है न?

वेलु : ठीक है।

परमुपिल्ला : (अपनी पुरानी छतरी हाथ में लेकर जाने के लिए तैयारी करते हुए) पट्टे की रकम तय नहीं की।

केशवन नायर : सो तो दस्तावेज लिखते समय काफी है न। पट्टे की चालू रकम— उसके अलावा क्या है? तो आप जा रहे हैं न? (एकाएक चाल बदलकर) तब—लड़के के मामले में आपकी कोई जिम्मेवारी नहीं न। मैं अपने मनमाफिक करूँ न?

परमुपिल्ला : उसने अब क्या बिगाड़ा है?

केशवन नायर : वह मैं क्यों कहूँ? मैं अपनी ही बदनामी क्यों कराऊँ? (क्रुद्ध होकर) मैंने उसका रास्ता सोच लिया है।

परमुपिल्ला : बताइये न, क्या बात है?

केशवन नायर : उसने मेरे खिलाफ जत्थेबन्दी की—उसको रहने दीजिये। उसने व्याख्यान देते हुए यहाँ तक कह डाला कि मेरा आचरण खराब है।

उसे भी मैंने माफ कर दिया! आप भाई साहब को मालूम ही होगा कि उसका कोई बदला मैंने नहीं लिया। वह अब स्कूल में घुसकर गड़बड़ कर रहा है! उसने मेरी लड़की तक को स्कूल से निकाल लिया।

परमुपिल्ला: (इस तरह कि जैसे बिलकुल विश्वास न हुआ हो) क्या गोपालन ने!..

वेलु: यहां यह सब और कौन कर सकता है?

केशवन नायर: उस लड़की को वह गलत रास्ते पर ले गया! आप ही सोच लो भाई परमुपिल्ला—फिर अपनी सभा में उसने सुमम से गाना तक गवा लिया।

परमुपिल्ला. (बात काटकर फिर पहले की तरह कहते है) गोपालन ने?

केशवन नायर· (क्रुद्ध होकर व्यंग मे) गोपालन ने! सो भी उसी का लिखा हुआ गाना। मेरे लिए बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। मैंने इसके लिए उपाय सोचा है। अगर मैंने उसे सबक नहीं सिखाया तो मेरा नाम नहीं।

वेलु (परमुपिल्ला से) यदि यह गुस्सा हो रहे हैं तो उसमें इनका कौन दोष है? इस सारी दौलत का उपभोग करने के लिए एक ही औलाद है।

केशवन नायर: उपभोग करने के लिए! इसका फैसला मैं करूँगा। उसे मैं यों ही छोड़नेवाला नहीं हूँ। (परमुपिल्ला की ओर मुड़कर) जैसे इन्होंने अपने लड़के को छोड़ दिया है, वैसे मैं अपनी लड़की को थोड़े ही छोड़ सकता हूँ। अगर मेरे कहे मुताबिक नहीं वह रही, तो मैं उसको खतम करके ही छोड़ूँगा।

परमुपिल्ला: (घबराकर) मैं क्या करूँ? मैं कुछ नहीं जानता—मेरे राम!

केशवन नायर: तुम लोगों को कुछ करने की जरूरत नहीं—मैं देख लूँगा।

परमुपिल्ला: (बहुत ज्यादा मानसिक कष्ट के साथ) आपको जैसी मर्जी वैसे कर लीजियेगा। मुझे अपना काम है—मैं जरा बाहर

हैं। (मानसिक कष्ट के साथ छतरी हाथ में लिए चलते-चलते ओझल हो जाते हैं।)

केशवन नायर : (इतनी जोर से कि परमुपिल्ला सुन ले) सब कुछ एक बार देख कर ही मैं दम लूंगा!

वेलु : (यह समझकर कि परमुपिल्ला चले गये हैं, धीमी आवाज़ से) आदमी जरा हैरान है!

केशवन नायर : (गुस्से के साथ) उसका इस तरह परेशान होना काफ़ी नहीं है— तुम्हीं देख लो कि उसका लड़का मेरे घर में आफ़त लाने की कोशिशें कर रहा है न! लड़की का हाल कैसा है?

वेलु : बिछौने पर से अभी उठी नहीं है! (दया भाव प्रकट करते हुए) मार पड़ने से बदन पर सूजन हो गया है। सोने जैसे बदन पर मार पड़ जाय तो फिर—

केशवन नायर : (बढ़े हुए गुस्से से) मुझ पर कालिख लगाने के लिए है तो—ऊं (धीरे धीरे क्रोध उतर जाता है, चेहरे पर विषाद की मुद्रा प्रकट होती है। धीरे से) अरे, हम जो बात सुन रहे हैं, वह ठीक है?

वेलु : (आवाज को धीमी करके) कुछ लोग यूं ही बकवास करते रहते हैं। फिर भी उस जवान लडके के प्रति लड़की के मन में लगन होगी।

केशवन नायर : (लम्बी सांस लेकर) वैसा न होगा। जो भी हो करुणाकरन कुट्टी के मामले में जरा गौर से विचार कर लेना चाहिए। पढाई भी खतम कर लेनी चाहिए।

वेलु : इस काम को जल्दी ही कर लेना होगा।

केशवन नायर : हाल ही में मैंने उसे एक बार देखा था। उम्र जरा ज्यादा है। फिर भी कोई बात नहीं। जैसी बात सुन रहा हूँ यदि वैसा कुछ हो जाय।

वेलु : वैसा कुछ न होगा।

केशवन नायर : (लम्बी सांस लेकर) उसे रहने दो। दूसरा काम याद है न?

वेलु (सोचकर) कौन सा काम ? (मानो समझ गया है) जी हाँ, लाकर रखी है।

केशवन नायर अरे वह नहीं। (किसी विशेष तात्पय से वेलु की ओर ध्यान से देखते है।)

वेलु (माना समझ गया) जी हाँ, जी हाँ।

केशवन नायर जो कुछ भी हो। मैं चला। तुम खड़ाऊँ तो जरा उठा लाओ।

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ६

[माला फसल काटने के लिए जाने को तैयार खड़ी है। सबेरे का समय है। गोपालन प्रवेश करता है। उसके रंग-ढंग से लगता है वह काफी थकामादा है। वह माला के साथ फसल का गाना गाने लगता है।]

गोपालन : (हँसते हुए) तो आज फसल काटने जा रही हो क्या? आज कटाई कहाँ है?

माला : मेलेपाड में। सब लोग अब तक खेत पहुँच गये होंगे। मुझे जरा देर हो गई है।

गोपालन . पहले भी जा सकती थी न, क्यों न गयीं?

माला : (मजाक में हँसकर) अगर मैं पहले ही चली गयी होती, तो कामरेड के यहाँ आने पर कोई होता भी?

गोपालन : (हँसते हुए) वह ठीक है। हाँ, आज तुम्हें एक काम करना है।

माला : मैं तो काम पर जा रही हूँ।

गोपालन : वह तो मालिक का काम है न? यह तो तुम्हारा अपना काम है।

माला : क्या काम है?

गोपालन : आज काम खतम होते-होते तो शाम हो जायगी न?

माला : काफी देर हो जायगी, कामरेड!

गोपालन : फसल की कटाई खतम होने पर सब मजदूरों को बुलाकर हमारे पप्पु के घर ले आना होगा। आज की कटाई उसके घर के पास ही है न!

माला : (बात ठीक सुनी नहीं, इसलिए) किसके?

गोपालन : पप्पु के घर के (वहाँ पड़े एक पुराने बेंच पर बैठ जाता है।)

माला : हाँ-हाँ।

गोपालन : सभा में नाम लिखाने में हिचकिचानेवाले अब भी कुछ लोग हैं।

माला हाँ है ! कुछ लोगों को अब भी बड़ा खौफ है।

गोपालन (मजाक म उसे दोष देकर) खौफ दूर कैसे होगा! उन्हें बातें समझानी चाहिए न!

माला (कुछ शरम के साथ) वह तो ठीक है। इस तरह गाना गाते फिरने से काम नहीं चलेगा।

गोपालन गाना गाकर बात समझा देनी चाहिए। ठीक है—बुला लाओ। खौफ दूर करने का जिम्मा मैं लेता हूँ!

माला तो बुला लाने का जिम्मा मैं लेती हूँ!

गोपालन हाँ—फिर—(अपनी किताब के अन्दर से एक खत लेकर पीछे की ओर बढ़ाकर) यह खत सुमम को दे देना! (कुछ शरम के कारण वह माला के चेहरे पर नजर नहीं डालता। अन्यमनस्क होकर किताब के पन्ने उलटता रहता है।)

माला (चेहरा मुर्झाया हुआ है। फौरन हाथ बढ़ा कर खत लेती है) फसल की कटाई के बाद ही मैं उसके घर चली जाऊँगी।

गोपालन शाम को देना भी काफी है। एक बात और—फसल कटाई के बीच सुमम का खत केशवननायर के धान के नीचे न हो जाये! (इस मजाक से माला के मन को तकलीफ होती है। फिर भी वह उसे जानबूझ कर छिपा लेती है।)

माला सिर्फ केशवन नायर से ही नहीं, उनके धान पर भी गुस्सा है क्या? (कुछ देर के बाद अपने विकार को काबू में करके) जो भी हो, खत सुमम को मिल जायगा!

गोपालन (उसी तरह सिर झुकाये बैठे-बैठे) नहीं तो माला पर भी मार पड़ जायेगी।

माला (उसी भाव में) मुझे मिल क्या जायेगा?

गोपालन (उसी तरह एकदम मजाक में) माला को? दो मार मिलेंगे।
(यह बात उसके दिल पर चोट कर जाती है। फिर भी अपने दिल को काबू में रखने के लिए चेष्टा करते हुए।)

माला : माला की झोपडी में भुने हुए तापियेका के टुकडे ही तो हैं न !

गोपालन • (उसी तरह) फिर भी मेरे आने पर कच्चे तापियेका के टुकडे तक दिखाई नहीं दिये !

माला • आज यहाँ कुछ था ही नहीं !

गोपालन (सिर उठाकर उसे देखते हुए) तब माला ने आज कुछ खाया नहीं ? (उसका चेहरा दुखी देखकर, और यह समझकर कि ऐसा भूखा रहने के कारण हुआ है) ओह—मेरे पास भी कुछ नहीं है, बहन तुम्हें देने के लिए। (उठता है)।

माला (रोना न आने देने की चेष्टा करते हुए) नहीं, खाना तो मैंने खाया है।

गोपालन (दद के साथ) नहीं, तुमने कुछ नहीं खाया।

माला (उसी तरह) मैंने खा लिया !

गोपालन • (हाथ में जो किताब थी, उसे निराशा के साथ बेंच पर डालते हुए) नहीं, मुझे यह किताब नहीं लेनी चाहिए थी !

(माला इस स्थिति को पहुँच चुकी है कि अब आगे एक भी शब्द कहने पर रो पडेगी। उसका आत्म नियन्त्रण जाता रहा है। वह उस खत को हाथ मे दबाये फौरन झोपडी के अन्दर चली जाती है।)

गोपालन (माला का इस प्रकार जाना देख कर लम्बी साँस लेकर) खाना खाये या न खाये, फसल काटने तो उसे जाना ही है ! (खिन्न होकर फिर उसी बेंच पर बैठ जाता है।)

(थोडी देर के बाद माथ्यु आता है।)

माथ्यु • (गोपालन के बैठने का ढग और चिन्ता मे डूबा हुआ उसका चेहरा देखकर) क्या बात है चिन्तक ! कोई गाना-वाना तैयार कर रहे हो क्या ? (उससे सटकर बेंच पर बैठ उसके चेहरे का गौर से देखकर मजाक उडाने के ढग और स्वर मे) अहो !

पक्षीगण कलरव कर रहे हैं। झरने कलकल करते बहते रहते हैं। हे महाकवि !

गोपालन (बिल्कुल नापसन्दी के साथ) तुम कैसे रूखे आदमी हो ?

माध्यु (उसी स्वर में) तुम्हें आज कोई मजा नहीं आयेगा ! दिन तो काफी चढ़ आया, कुछ खाया भी है ? ठीक। तो उठो—चलो, कुछ काफी पी आयें। मैं आज कुछ पैसे लेकर आया हूँ ! साढ़े तीन आने हैं हाथ में ! (गोपालन के हाथ में जो किताब है, उसे देख कर और उसके हाथ से उसे लेकर) अच्छा—यह किताब खरीद ली ? (किताब का गटअप वगैरह देखकर गंभीरतापूर्वक) हाँ !—अरे, तुम्हें उस केशवन नायर के घर जाना होगा।

गोपालन (सिर उठाकर) क्यों ?

माध्यु उसने नारियल मजदूरों के पुश्तैनी हक[1] छीन लिये हैं।

गोपालन वजह ?

माध्यु उसे किसी वजह की भी जरूरत है ? कहता है कि ओणम-त्यौहार के समय मजदूर नजराना नहीं दे गये थे।

गोपालन ओणम नजराना न ले जाने पर पुश्तैनी हक छीन लेंगे ?

माध्यु हाँ, अब तो कुछ ऐसा ही है। इसीलिए तुम जरा वहाँ चले जाओ। उससे जरा नरमी से बात करके बिना गड़बड़ी के मामला निपटाने की कोशिश करना।

गोपालन (उठकर) तो मैं वहाँ होकर ही आऊँगा। आप कहाँ होंगे ?

माध्यु तुम दफ्तर में चले आना। यहाँ कोई नहीं है क्या ?

गोपालन माला है।

---

१ मध्य त्रावनकूर में नारियल के मजदूर कुटुम्बों को पुश्तों से खास-खास घरों के नारियल बागानों का काम मिला हुआ है। उस परम्परा से चले आने वाले हक को पुश्तैनी हक कहा गया है।

माध्यु : क्या वह काम पर नहीं गई ?

गोपालन : जब मैं यहाँ पहुँचा, तब वह फसल काटने जाने की तैयारी कर रही थी। (आवाज़ धीमी करके) अरे—उसने आज कुछ भी नहीं खाया है !

माध्यु : यह बात है !

गोपालन : आज यहाँ कुछ था ही नहीं ! (आवाज़ बहुत धीमी करके) वह दुःखी होकर अन्दर चली गयी है।

माध्यु : भुखमरी उसके लिए कोई नई बात तो नहीं है !

गोपालन : मैंने उससे पूछा कि कुछ खाया या नहीं, इस पर वह फूट पड़ी। तुम्हारे पास कुछ पैसे हों, तो उसे दे दो।

माध्यु : भुखमरी से वह दुखी नहीं हो सकती। माला !—माला ! (ज़ोर से बुलाते हैं)

(माला नही सुनती।)

माध्यु : (उठकर झोपडी के दरवाजे तक जाकर) वह चली गयी क्या ?

(झोपडी के दरवाजे मे भीतर देखते हैं। उनके चेहरे का रग पीला पड जाता है। एक बार फिर बुलाते है "माला"।

गोपालन गहरी चिन्ता के साथ "क्या बात है, कामरेड ?" यह पूछते हुए माध्यु के पास जाता है।)

माध्यु : (चिन्ता मे डूबे चेहरे के साथ) हो सकता है उसकी तबीयत खराब हो !

गोपालन : (झोपडी के अन्दर निगाह डालकर) हूँ !—वह मुँह नीचे करके लेटी रो रही है।—माला ! (पुकारता है)

माध्यु : (गोपालन को रोककर) नहीं—बुलाओ मत। (झोपडी के द्वार से दूर आकर) कोई—बीमार होगी (विषय को बदल कर) तो तुम यहाँ होकर आना।

गोपालन : उसे क्या हो गया है ?

माध्यु : उसकी तबीयत खराब होगी ! तुम वहाँ जल्दी होकर जाओ।

गोपालन : (खिन्न होकर) मैं वहाँ फिर जाऊँगा।

माध्यु : फिर नहीं। अभी। उसके किसी जगह जाने के पहले उससे मिल लेना चाहिए।

गोपालन : ठीक है। तो मैं वहाँ हो आता हूँ।

माध्यु : ठीक है, दफ्तर आ जाना।

गोपालन : तो मैं जाऊँ ?

माध्यु : हाँ, जल्दी जाओ।

(गोपालन मुर्झाये चेहरा लिये चला जाता है। माध्यु कुछ देर तक चिन्ता में डूब कर टहलने के बाद बेंच पर जा बैठते हैं। उनके चेहरे से लगता है कि उन्हें किसी बात का शक है। हाथ में जो किताब थी, उसे खोल कर देखने लगते हैं, लेकिन अचानक दूर किसी चीज पर निगाह चली जाती है और वह कुछ सोचने लगते हैं।

केशवन नायर "करम्बन ! —अरे करम्बन ! —करम्बन नहीं है क्या ?" चिल्लाते हुए प्रवेश करते है। माध्यु को देखते ही चेहरे पर कडवाहट का भाव आ जाता है।)

माध्यु : (फौरन उठकर बहुत ही नेकनीयती के साथ) करम्बन यहाँ नहीं है। कहीं गया है—शायद फसल की कटाई के लिए (बेंच आगे बढाकर) बैठिये, न !

केशवन नायर : (असन्तोष और मन में दबाये क्रोध के साथ) तुम्हारी खातिरदारी की कुछ जरूरत नहीं। मेरे यहाँ फसल की कटाई है या नहीं, इसका फैसला करने वाले तुम हो क्या ?

(इस अशिष्ट बात को सुनकर माध्यु घृणापूर्वक एक हल्की-सी हँसी हँसकर बेंच पर बैठ जाते हैं। किताब खोलकर उसे देखने लगते हैं।)

केशवन नायर : (यह देख कर कि माध्यु कुछ भी नहीं बोल रहे हैं) क्या बात

है—किताब-विताब का पाठ तुम यहाँ पुलय की झोपडी में करते हो?...

माध्यु: (बहुत हल्के ढग से) हाँ कुछ ऐसी ही बात है।

केशवन नायर: (चोट करने वाली बात कहने के ढग से) कैसी बात है—कोई शादी-ब्याह की बात होगी।

माध्यु: (पहले ही की तरह) वह सब अब क्यो कहूँ?

केशवन नायर: (उसी ढग मे) क्यो? उसके लिए कोई शुभ अवसर तै कर रखा है?

माध्यु: (कुछ गौर से केशवन नायर के चेहरे पर देख कर) आप सवेरे-सवेरे कोई झगडा करने पर तुले हुए हैं क्या?

केशवन नायर: हाँ, जरूरत पड़े तो झगड़ा भी करूँगा।

माध्यु. कुछ तो शिष्टता चाहिए न—उम्र भी काफी हो गई है!

केशवन नायर: (एकाएक गुस्सा होकर) अच्छा, उम्र बताने वाला एक आदमी आया है! तुम कौन हो, कोई ज्योतिषी हो क्या?

माध्यु: नहीं, आप छोटी उम्र के हैं।

केशवन नायर: सो जो कुछ भी हो। (मात्यु के चेहरे की ओर देखे बिना ही) किसी पुलय लडकी की जिन्दगी खराब करने के लिए निकले हो क्या?

माध्यु: (गभीरतापूर्वक) सो तो उनके ही कहने की बात है।

केशवन नायर: वे कहने वाले नहीं हैं—वे मेरे नौकर हैं। उनकी बात कहने वाला मैं हूँ—तुम नहीं।

माध्यु: (उठकर केशवन नायर की ओर गौर से घूर कर) एक बात और है—मुझे 'तुम' कहकर मत पुकारना। कुछ शिष्टतापूर्वक बात करने में कोई नुकसान नहीं है।

केशवन नायर· वरना? मेरा कुछ बिगाडोगे क्या? हर किसी पुलयन और परयन को बहकाकर उसे अपनी जमात में शरीक कर लेगा! फिर उनके दो-दो चार-चार आने खा-पीकर मोटे होयगा।

जब कोई उन बेचारा को बेदखल करे और उनकी झोपड़ी उखाड़ कर खन्दक में फेंके, उस वक्त नेता का नामोनिशान न होगा।

माध्यू (केशवन नायर के दिल के छिछोरेपन पर मन में ही हँसते हुए मजाक उड़ाने के ढग से) हाँ, बेदखल करेगा! है न?

केशवन नायर बेदखल करूँगा।

माध्यू (उसी ढग से) किसको?

केशवन नायर पहले तुम्हें, फिर उन्हें!

माध्यू (उसी ढग से) इस वक्त किस सदी में रह रहे हैं आप?

केशवन नायर किस की जमीन में खड़े होकर तुम सदी की बात कर रहे हो?

माध्यू (एकाएक आई हँसी को रोककर गौर से) अच्छा—मैं आपसे एक बात पूछूँ? इन बेचारों को सताने में आपको क्या मजा आता है? कुछ तो भलमनसाहत भी चाहिए—इन्सान ही तो होकर पैदा हुए हैं न!

केशवन नायर तुम मुझे भलमनसाहत सिखाने चले हो?

माध्यू (जान-बूझकर उसे छेड़ने के लिए उसकी ओर इशारा करते हुए) किसी चीज से न सीखनेवाले इस चीज को मैं क्या सिखाऊँ!

केशवन नायर छी! तुम ने मुझे 'चीज' कह कर पुकारा—रे?

माध्यू हे! केशव नायर

केशवन नायर (झल्लाकर) छी! तुमने क्या कहा—केशव नायर! इस इलाके में किसी ने भी मेरी ओर देखकर मुझे नाम से नहीं पुकारा है!

माध्यू अब आप के चेहरे पर देखकर आपकी सारी बुराइयाँ मैं लोगों से कहने जा रहा हूँ।

केशवन नायर तो मैं तुम्हारी खोपड़ी फाड़ दूंगा—तुम मुझे जानते नहीं हो?

माध्यू बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ।

केशवन नायर नहीं, नहीं जानते!

माध्यू मैं जानता हूँ—और इस इलाकेवाले भी जानते हैं।

केशवन नायर इलाकेवाले जानते हैं—तुम नहीं जानते।

माध्यु (जरा झल्लाकर) मैं अच्छी तरह जानता हूँ आपको। (ऊँचे स्वर में) उस वेलु की लडकी की खुदकशी का भेद मैं जानता हूँ! करम्बन की स्त्री को आपने मुक्के मार-मार कर मार डाला—वह भी मैं जानता हूँ! आपकी पत्नी ने आपकी बदनीयती का साथ नहीं दिया, इसलिए उसे जहर देकर मार डालने वाले जालिम भी आप ही हैं!—मैं आपको अच्छी तरह से जानता हूँ।

(केशवन नायर माध्यु की एक एक बात पर झुंझला उठते है। आखिरकार जवाब न पाकर गरजते हुए)

केशवन नायर छी! निकल जा यहाँ से।

माध्यु (उसकी परवाह न कर) निकलने की मेरी इच्छा नहीं है तो!

केशवन नायर (ज्यादा गुस्सा होकर) छी! निकल जा मेरी जमीन से।

माध्यु (दृढतापूर्वक) इच्छा नहीं है!

केशवन नायर (क्रोध दुख और आश्चर्य मिश्रित भाव से) तो मेरी जमीन पर भी मेरा बस नहीं चलेगा! अरे, मैंने तुमसे कहा है कि निकलो यहाँ से! निकलो।

माध्यु उछल कूद मचाये बिना चुपचाप आप वहाँ खडे हो जाइये जी! न आप मुझे यहाँ से निकाल सकते हैं और न मेरा बाल ही बाँका कर सकते हैं।

केशवन नायर (माध्यु का दृढसकल्प देखकर ढीले पड जाते हैं) अरे—चाहूँ तो मैं दिखा सकता हूँ—क्या तुम समझते हो कि यहाँ पुलिस और फौज नहीं है! अरे पुलिस को बुला कर तुम सबकी खोपडी का म चूरा करा दूगा। देख लेना—(माध्यु को आगे बढते देखकर पीछे हटते हुए) अरे मैं चाहूँ तो मत्री से यह सब करा सकता हूँ—समझे! भगवान ने चाहा तो, दो-तीन महीने के अदर मैं भी एक (चलते चलते ओझल हो जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ७

[करम्बन की झोपडी। म्लान वदन हो सुमम प्रवेश करती है।]

सुमम : (आगन मे खडे होकर) करम्बन-करम्बन ?—

करम्बन : कौन ? (झोपडी से बाहर आता है। सुमम को देखकर आश्चर्य-चकित होकर) अहा! कौन छोटी मालकिन! (एकाएक चेहरा म्लान हो जाता है) देखिये—यदि बडे मालिक को कहीं पता चल जाय, तो वह हम लोगो के सिर काटने पर उतारू हो जायेंगे!

सुमम : (उस पर कोई महत्व न देकर) मालिक काटना-कूटना कुछ सीखे नहीं है। अच्छा, आज वह यहाँ नहीं आये क्या ?

करम्बन : कौन ? गोपालन कामरेड ? नहीं। अभी आते ही होगे। अगर पता लग जाता कि आ गयी है, तो दौड़े चले आते।

सुमम . मैंने माला के हाथ एक खत भेज दिया था! माला यहाँ नहीं है क्या, करम्बन ?

करम्बन · नहीं!

सुमम माला ने शायद खत दिया नहीं होगा, वरना कम-से-कम इतनी खबर तो वह भिजवा ही देते कि आज नहीं आ सकेंगे!

करम्बन : वाह! माला खत देने से कभी नहीं चूक सकती। क्या ऐसा खत कोई खोने की चीज है! कामरेडो के नाम लिखा गया खत था न ?

सुमम . हो सकता है कि माला भूल गयी हो।

करम्बन : माला ऐसी भूलने वाली तो नहीं है। (करम्बन झोपडी मे जाकर एक फटी पुरानी चटाई लाकर सुमम के आगे बिछा देता है) बैठ जाइये मालकिन...

सुमम · बैठ जाऊँगी करम्बन (चटाई पर बैठकर) मुझे जरूरी काम से जरा मिलना था।

करम्बन : कहते सुना था कि आज कुछ मीटिंग-वीटिंग है।

सुमम : माला भी मीटिंग में गई है क्या, करम्बन ?

करम्बन : हाँ ! कल वह यह कह करके कि बड़े मालिक ने छोटी मालकिन को मारा है, छाती पीट कर रो रही थी...

सुमम : (बहुत खिन्न होकर) ओह !...

करम्बन : उसने गोपालन कामरेड और माल्यु कामरेड से यह बात कही। (सुमम के शरीर की ओर गौर से देखकर दुःख के साथ) इस बदन पर हाथ उठाया !

सुमम : *कोई बात नहीं करम्बन !*

करम्बन : (पहले की बातों का स्मरण करके) एक बात जब सोचने लगता हूँ, तो लगता है कि यह कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है ! मेरी करम्बी को एक मार पर उस मालिक ने...(दूर किसी चीज की ओर टकटकी लगाकर देखता है, मानो वह दृश्य सामने देख रहा हो। फिर दुःख के साथ) शाम के वक्त पौधे को सींचने आने के लिए उससे कहा था। बारिश होने के कारण वह गयी नहीं ! (उसी अवस्था में मौन हो खड़ा हो जाता है)

सुमम : (इस घटना के बारे में पहली बार सुनने से उत्पन्न घबराहट और उत्सुकता के साथ) अच्छा—फिर ? (उठ खड़ी होती है।)

करम्बन : (उसी अवस्था में और ज्यादा आवेश में आकर) दूसरे दिन सुबह होते ही वह काली माई की तरह आ धमके ! फिर—दक्षिण की तरफ खड़े होकर आवाज दी—"करम्बी—करम्बी" ! मैं बाहर निकल आया था। मुझे उन्होंने उस आम के पेड़ के साथ बांध दिया ! (उसकी आँखें भर आती हैं) फिर—छोटी मालकिन, मेरे सामने करम्बी को मुक्का मारा ! उसके छठे रोज, छोटी मालकिन, खून थूककर करम्बी मर गयी। (भरी हुई आँखों से गुस्सा भभक उठता है)

सुमम : (दुःख के साथ) हाय ! दुःखी न हो करम्बन—दुःखी न हो। आगे ऐसा कुछ न होने पायेगा, करम्बन—

करम्बन : *नहीं छोटी मालकिन—ऐसा नहीं होने पायेगा। अब हम लोगों ने भी कुछ फैसला कर लिया है।*

गोपालन : (प्रवेश करके, हँसते हुए) अकेले तुम लोगों के फैसला करने से ही फैसला होगा नहीं, करम्बन ! (सुमम से) तुम्हें आये हुए बहुत देर हुई क्या, सुमम ?

करम्बन : (हँसी के बीच आँसू पोंछते हुए) कामरेड नहीं आयेंगे, यह कहकर छोटी मालकिन जानेवाली ही थी !

गोपालन : (मजाक में) कभी नहीं ! ऐसे कैसे जा सकती ?—लिखा था कि कई जरूरी बातें करनी हैं !

सुमम : (शरम के मारे हँसती हुई) यह भी हो सकता है न कि जरूरी बातों के बीच में आप छोटी बात भूल गये हों !

गोपालन : तुम्हारी बात मैंने कभी छोटी नहीं समझी है ! तुम्हें आये हुए कुछ देर हो गयी है न ? अच्छा, बैठ जाओ !

सुमम : मैं अभी तक बैठी हुई ही थी। थके हुए आप ही हैं, बैठ जाइये।

करम्बन : (मजाक में) इसमें झगड़ा करने की कौन-सी बात है ! मैं एक बात कहूँ—आप दोनों ही बैठ जाइये ! (चटाई झाड कर दोनों के बीच में डाल देता है।)

(सुमम शरमा जाती है। गोपालन हँसते हुए स्नेहपूर्वक करम्बन की पीठ हाथ से थपथपाता है। करम्बन अपनी मजाक का स्वयं मजा लेकर मुँह खोल कर हँस पडता है।)

करम्बन : कामरेड,—मैं झोपड़ी के भीतर जा रहा हूँ। दो टुकडे तापियेका के भट्टी में डालने हैं।

गोपालन : (हँसते हुए) मुझे अब तापियेका नहीं चाहिए, करम्बन ! मैंने कुछ खा लिया है।

करम्बन : माला और माय्यु कामरेड भी अभी आनेवाले हैं। और वैसे भी करम्बन की कुटिया से एक टुकडा...

गोपालन : ठीक है—खा लूँगा।

(करम्बन, 'बैठ जाइये छोटी मालकिन' कहकर कुटिया में चला जाता है।)

गोपालन (सुमम से) पिताजी से छिपकर भागकर आयी हो क्या ?

सुमम पिताजी आज किसी अदालती मामले पर गये हुए हैं। सब वेलु को सौंप गये हैं। वह पडोस में किसी जगह जाकर गप्पें मार रहा है।

गोपालन तो पिताजी के वापिस आने के पहले तुम्हें जाना है ! तुमने लिखा था कि जरूरी बातें करनी हैं। क्या बात है ?

(सुमम मौन है।)

गोपालन कुछ बोल क्यों नहीं रही हो ?

(सुमम कुछ भी न कहकर और साथ ही परेशान और शर्मिन्दा होकर खडी है)

गोपालन (हलकी हँसी हँसते हुए) क्या यही है जिसके लिए तुमने लिखा था कि बहुत कुछ कहना है !

सुमम मेरे मन को बिलकुल चैन नहीं है। मैं अपने घर में जली जा रही हूँ।

गोपालन लेकिन यहाँ की जनता तुमसे पहले की अपेक्षा अधिक प्रेम करती है।

सुमम (मानो मौका आने पर मन के अन्दर का एक सन्देह प्रकट कर रही हो) सो कैसे ! क्या मेरा पिता जनता का दुश्मन नहीं है ? फिर लोग मुझसे कैसे प्रेम करेंगे ?

गोपालन लोग ऐसे बेवकूफ नहीं हैं कि पिता के गुनाहों के लिए पुत्री को जिम्मेवार ठहरायें !

सुमम फिर भी पिताजी बेदखली करके और झूठे दस्तावेज लिखा कर लोगों को परेशान कर रहे हैं। क्या लोग इस बात को भूल जायेंगे ?—क्या वे उन्हें बरदाश्त कर लेंगे ? मुझे यह दौलत नहीं चाहिए। यह धन और यह आरामतलबी की जिंदगी—इनसे मुझे घृणा हो गयी है ! (उदास हो जाता है।)

गोपालन तुम दुखी क्यों हो रही हो ? बेदखली कराने और झूठे दस्तावेज लिखाने में तुम साथ नहीं देती। उलटे तुम तो उसका विरोध करनेवालों के साथ खडी हो।

सुमम एक और बात आपको जताने के लिए मैं आयी थी।

गोपालन कौन सी बात ?

सुमम कल पिताजी और इन्स्पेक्टर वगैरह घर पर बैठ कर काफी सलाह-मशविरा कर रहे थे।

गोपालन क्या सलाह-मशविरा कर रहे थे ?

सुमम मैं यह सब नहीं जान सकी। उन्होंने इस बात की बड़ी कोशिश की कि मेरे कानों में कोई बात न पड़ने पाये। मुझे बहुत डर लग रहा है।

गोपालन (आदेश देने के ढंग से) सुमम, तुम्हें अधीर होने की कोई जरूरत नहीं है। तुम इन्सानों के खेमे में खड़ी हो। जिस माला के हाथों तुमने खत भेजा था, वह माला, जिस करम्बन ने तुम्हारे लिए चटाई बिछा दी, वह करम्बन—उस तरह दिल खोलकर मुहब्बत करनेवाले न जाने कितने ही लोग तुम्हारे चारों ओर हैं—तुम्हारी योग्यताओं का आदर करने और तुम्हारी दुबलताओं को समझने की क्षमता रखनेवाले लोग ! तुम अब अधीर न होकर अपनी पूरी ताकत उन लोगों के लिए लगाओ।

सुमम काम करने की मेरी क्षमता कितनी तुच्छ है !

गोपालन वह कितनी महान है ! तुम अच्छी तरह भाषण दे सकती हो और गा सकती हो ! काश तुम्हारे जैसा मैं गा सकता।

सुमम (प्रसन्न होकर) हाँ, हाँ—मीना कहती है कि आप बड़े अच्छे गानेवाले हैं !

गोपालन नहीं, मैं अच्छा नहीं गाता, सुमम। गाने लिख सकता हूँ। हाँ, अब मुझे अपने गाने गानेवाली एक गायिका मिल गयी है।

सुमम (शर्मिन्दा होकर) और मुझे एक गाने लिखनेवाला !

गोपालन खैर—मीना ने वह गाना तुम्हें दे दिया ?

सुमम वह बड़ी होशियार लड़की है !

गोपालन अच्छा !

सुमम उसने पहले मुझे जरा डरा दिया ! बोली कि गाना नहीं है ! वह कह रही थी जब जब मैं कहती हूँ, तब वह गाना नहीं लिख सकते।

गोपालन: किसने कहा ऐसा ?

सुमम: (गोपालन की ओर इशारा करते हुए) आपने !

गोपालन: (मुस्कुराहट को दबाये रखकर) कहाँ कहा है ?

सुमम: (बनावटी नाराज़गी के साथ) बस-बस, मेरी मजाक करना बन्द करिये। जिसने कहा, उसे मालूम नहीं क्या ?

गोपालन: (ऐसे जैसे कुछ भी न समझा हो) कहने पर सब गाना नहीं लिख सकते। लेकिन यह किसने कहा ? मेरी समझ में नहीं आया !

सुमम: (बनावटी गभीरता दिखाकर और साहित्यिक भाषा में) त्रावनकूर-कोचीन के किसान सभा के सेक्रेटरी महोदय, इस देश की मेहनतकश जनता की आँखों के पुतले, प्रमुख नेता और साहित्यकार कामरेड गोपालन ने कहा है ! क्या अब समझे ?

गोपालन: (हँसते हुए) सच कहूँ तो अब ही समझ में आया है ! अच्छा आप सीधे-साधे मुझे कामरेड कहकर बुला नहीं सकतीं ?

(सुमम शरमा कर हँसती खड़ी है।)

गोपालन: कामरेड कहने के बजाय फलां-फलां ने कहा वगैरह क्यों कह रही हो ?

सुमम: (लज्जावश हँसते हुए) लड़कियों ने मीना के कान भर दिये हैं !

गोपालन: कोई ऐसी बात कही है क्या, जो सच नहीं है ? ठीक ही कहा है न ! अच्छा, तो मेरी गायिका, मेरा कोई एक गाना तो जरा गाओ !

सुमम: (हँसते हुए) कौन-सा गाना ?

गोपालन: कोई एक।

सुमम: कहो कौनसा ?

गोपालन: तो 'सोने का हंसिया' गाओ।

सुमम: साथ गाओगे ?

गोपालन: नहीं-नहीं ! रेशम के धागे के साथ केले के पेड़ का धागा बाँधने की जरूरत नहीं है।

सुमम: यदि केले के पेड़ के धागे को रेशम का धागा पसन्द करे, तो !

गोपालन: वैसे पसन्द होने की कोई गुन्जाइश तो नहीं है।

मुन्न: [illegible] पसन्द है—मगर केले के पेड़ के [illegible] को [illegible]

[illegible]: [illegible] से मुक्त होने का विचार केले के पेड़ का [illegible]
नहीं [illegible]। (दोनों हँसते हैं) मेरे रेशम के [illegible]।

(मुन्न और गोपालन [illegible]
के बाद [illegible] आ जाता है। [illegible]
उसका रसास्वादन करता है। खुशी से मारे [illegible]।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ८

[वही पहलेवाला दृश्य। झोपडी के छोटे-से चबूतरे पर माला हाथ पर मुँह टेके झुककर बैठी है। वह अचेतन मे ही, गहरी चोट लगे हुए हृदय से निकला हुआ एक गाना गुनगुना रही है। उसके गालो पर आँसू बह रहे हैं।

थोडी देर बाद माथ्यु आते है। कुछ देर तक वह पीछे खडे होकर माला को गौर से देखते हैं। उनका चेहरा दर्द से पीला पड जाता है। स्वय धीरज धरकर ऊँचे स्वर मे पुकारते है, 'माला !'

माला गाना बन्द करके निश्चल होकर घूमकर माथ्यु की ओर देखती है। एकाएक दोनो हाथो से मुँह ढककर फूट-फूट कर रोने लगती है। कुछ देर तक रो कर वह खडी हो जाती है।]

माथ्यु. (सान्त्वना देने के स्वर मे) माला—मेरी छोटी बहन—तू क्यो ऐसे रो रही हो ? (उसके रोने के कारण को मालूम होने पर भी जानबूझ कर उसे छिपाते हुए) हाँ, करम्बन को जमानत पर छुडा लिया गया है। गोपालन और करम्बन दोनों अभी आ जायेंगे। वह केशवन नायर उन्हें पुलिस से पिटवा नहीं पाया, माला !

माला : (अपने मन की तकलीफ को छिपाकर) उसने बाबू को चोर बना दिया ! भूख से जान चली भी जाये, तो भी एक छोटा नारियल तक बाबू नहीं लेते !

माथ्यु. यह खेल अभी शुरू ही हुआ है। हमारे इम्तिहान का वक्त अब आने वाला ही है।

माला : (दर्द के साथ) मुझे ऐसी बातो का कोई डर नहीं है। इससे अच्छा मरना है।

माथ्यु : हम कोई ऐसे-वैसे मरने के लिए तैयार नहीं होंगे। रोने-बिलखने का जमाना भी खत्म हो गया। आज हम डटकर हिसाब माँग रहे हैं।

उसमें आवाज़ उठानेवाली माला उदासी भरा गाना गा रही है।

माला यह गाना मुझे पसन्द है। यह हमारे कामरेड का लिखा हुआ पुराना गाना है न।

माध्यु गोपालन उन दिनों का गायक नहीं है आज। आज वह लडाकू गायक है और माला उस लडाई की एक सिपाही है।

माला मैं इस लडाई में हार जाऊँगी।

माध्यु हारनेवाली तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे मालिक लोग है। हमारा तो उठनेवाला वर्ग है। मानव प्रेम ही हमारी दौलत है और लडाई ही हमारा मार्ग। सफलता प्राप्त करना ही हमारी परम्परा है।

माला लेकिन

माध्यु लेकिन क्या ?

माला न जाने मुझे क्यों कुछ डर लग रहा है।

माध्यु तुम डरने की आदी तो नहीं हो।

माला मुझे अभी तक ऐसे डर का अनुभव ही नहीं होता था।

माध्यु (कुछ देर तक मौन होकर सोचने के बाद) माला—मैं तुमसे एक बात पूछ सकता हूँ ? बिना छिपाये तुम जवाब दोगी ?

माला मुझे कुछ भी छिपाने की आदत नहीं है, कामरेड।

माध्यु वह तो मैं जानता हूँ। तुम कुछ दिनों से न ठीक तरह से खाना खाती हो और न रात को सोती ही हो।

माला (ज्यादा दर्द का अनुभव करते हुए) मुझे आजकल नींद नहीं आती।

माध्यु (गंभीरतापूर्वक मजाक उडाने के अभिप्राय से) हो सकता है कि आनेवाली लडाई के बारे में सोच कर हो।

माला मैं कुछ भी सोच नहीं सकती।

माध्यु ऊँ। किसी किसी दिन तुम रात के समय फूट-फूट कर रोती रहती हो।

माला (माध्यु के चेहरे की ओर देखकर) हाय यह सब किसने कहा !

माध्यु (पूरी गंभीरता के साथ) हमारी पार्टी के एक ईमानदार कामरेड ने—वह कमजोर नहीं है—उसका नाम है करम्बन।

माध्यु : (उसी अवस्था मे) यह दर्द दूर होना ही चाहिए।

माला : वह दूर होनेवाला नहीं है। (अत्यधिक दीनतापूर्वक) मेरा कलेजा फट गया!—कामरेड—(वह फूट फूट कर रोती है।)

माध्यु : (उसके दर्द से विचलित होकर, किन्तु धीरे-धीरे धर्य धारण करते हुए उसे धीरज दिलाने के अभिप्राय से) माला—तुम एक क्रान्तिकारी हो! रोने के लिए तुम्हें फुरसत नहीं—लड़ना ही तुम्हारा शौक है।

माला : क्रान्तिकारी भी रोते हैं!

माध्यु : बच्ची! —तुम अपने बाबू का ख़याल करो! तुम्हारी माँ को लात मार कर मार डालनेवाले जमींदार के विरुद्ध लडाई के लिए निकले करम्बन को याद करो! यदि उसे इन बातो का पता लग जाये!

माला : बाबू को इसके बारे में मालूम नहीं है।

माध्यु : लेकिन, यदि तुम्हारा चेहरा मुर्झा जाये तो करम्बन की जिन्दगी तबाह हो जायेगी!

माला : (असहाय होकर) मै क्या करूँ?

माध्यु : (उसके मन का दर्द दूर करने के लिए चेतनापूर्वक आज्ञा देने के स्वर मे) माला! जो आवाज़ मै सुन रहा हूँ क्या वह तुम्हारी आवाज है! तुम करम्बन की बेटी हो। वह अब भी हवालात से बाहर नहीं आया है। झूठा मुकद्दमा दायर करके उन लोगो ने उसे हवालात में बन्द करा दिया है। एक घमासान् लडाई ज़ोर पकडती जा रही है। उस लड़ाई की अगुवाई करनेवाली तुम—असफल प्रेम से निराश होकर रो रही हो! तुम अपने फर्जों को भूल रही हो!

माला : नहीं कामरेड, उन्हें मै भूलूंगी नहीं।

माध्यु : तुम्हारी माँ!

माला : (दर्द के साथ) मेरी माँ!

माध्यु : तुम जानती हो कि उसकी मौत कैसे हुई थी?

माला : (रोती हुई) मेरी माँ को उस मालिक ने मुक्के मार-मार कर मार डाला था!

(माला सिर झुकाकर ज्यादा मानसिक कष्ट से चुप खडी रहती है।)

माथ्यु : बहन—मैं एक और बात तुमसे पूछता हूँ ! तुम किसी से प्रेम करती हो !

माला : (उसी अवस्था मे) मं !—वैसे—

माथ्यु : मैंने सोचा था कि मेरी बहन से एसी बेवकूफी न होगी ! तुमने वह बात पहले ही गोपालन से क्यों नहीं कही ?

माला : (जोर से रोती हुई) मं गुनहगार हूँ।

माथ्यु : माला तुम गुनाह कुछ नहीं करोगी। मजदूर वर्ग की संस्कृति तुम्हारी है माला ! लेकिन तुम यह बात पहले ही गोपालन से कह सकती थी !

माला : हताश हालत में मुझे उसकी हिम्मत नहीं हुई। इतना ही नहीं···

माथ्यु : इतना ही नहीं···

माला : सुमम को उसकी लक्ष्मी होना चाहिए !

माथ्यु : बेवकूफ—तू एक हीरा है। गोपालन तुझसे बहुत ज्यादा मुहब्बत करता है !—बहन की तरह !

(माला चुपचाप खडी है। उसकी आँखों से आँसू की गंगा फूट पडती है।)

माथ्यु : सुमम को इसका भेद मालूम है ?

माला : उन्हें इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है ! गोपालन कामरेड को भी नहीं मालूम है !

माथ्यु : (दर्द के साथ) तुम्हारे मन की यह बात अब कोई न जानने पाये। यदि मालूम हो गया, तो सुमम की बरबादी होगी। गोपालन देश छोड़ देगा। वैसे भी तो वह कमजोर है ही !

माला : (सिर ऊँचा करके दुःख को जबरन दबोच कर) मैं कोई कुलटा नहीं हूँ, कामरेड—

माथ्यु : (उसके दिल के दर्द का अनुभव करके, सहानुभूतिपूर्वक) मेरी छोटी बहन—तेरे ऊपर यह कैसी गुजरी ! (अपने पर काबू पाकर) यह दर्द तुम्हें भूल जाना चाहिए !

माला : ऐसा अब हो सकता है भला !

माध्यु (उसी अवस्था मे) यह दद दूर होना ही चाहिए।

माला वह दूर होनेवाला नहीं है। (अत्यधिक दीनतापूवक) मेरा कलेजा फट गया!—कामरेड—(वह फूट-फूट कर रोती है।)

माध्यु (उसके दद से विचलित होकर किन्तु धीरे धीरे धय धारण करते हुए उसे धीरज दिलाने के अभिप्राय से) माला—तुम एक क्रान्तिकारी हो! रोने के लिए तुम्हें फुरसत नहीं—लडना ही तुम्हारा शौक है।

माला क्रान्तिकारी भी रोते हैं!

माध्यु बच्ची! —तुम अपने बाबू का खयाल करो। तुम्हारी माँ को लात मार कर मार डालनेवाले जमींदार के विरुद्ध लडाई के लिए निकले करम्बन की याद करो। यदि उसे इन बातों का पता लग जाये!

माला बाबू को इसके बारे में मालूम नहीं है।

माध्यु लेकिन, यदि तुम्हारा चेहरा मुर्झा जाये तो करम्बन की जिन्दगी तबाह हो जायेगी!

माला (असहाय होकर) मैं क्या करूँ?

माध्यु (उसके मन का दद दूर करने के लिए चेतनापूवक आज्ञा देने के स्वर में) माला! जो आवाज मैं सुन रहा हूँ क्या वह तुम्हारी आवाज है! तुम करम्बन की बेटी हो। वह अब भी हवालात से बाहर नहीं आया है। झूठा मुकद्दमा दायर करके उन लोगों ने उसे हवालात में बन्द करा दिया है। एक घमासान् लडाई जोर पकडती जा रही है। उस लडाई की अगुवाई करनेवाली तुम—असफल प्रेम से निराश होकर रो रही हो! तुम अपने फर्जों को भूल रही हो!

माला नहीं कामरेड, उन्हें मैं भूलूगी नहीं।

माध्यु तुम्हारी माँ!

माला (दद के साथ) मेरी माँ!

माध्यु तुम जानती हो कि उसकी मौत कैसे हुई थी?

माला (रोती हुई) मेरी माँ को उस मालिक ने मक्के मार-मार कर मार डाला था!

माध्यु : (उसी बात को दुहरा कर कहना है, ताकि बात माला के दिल में बैठ जाये) हाँ, तुम्हारी माँ को उस मालिक ने मुक्के मार-मार कर मार डाला था। सो भी तुम्हारे पिता के सामने ! उस समय वह बदला नहीं ले सके। उसका बदला चुकानेवाली पीढ़ी ने आज सिर उठाया है। क्या तुम उसके सामने रो रही हो ?

माला : (एक नये आवेग में) नहीं कामरेड, मैं अब रोऊँगी नहीं !

माध्यु : (दोष देने के अभिप्राय से) मुसीबत सहने वाला खेत मजदूर आज संघर्ष-निरत है ! उसके झंडे को तुम देख नहीं रही हो !

माला : (धैर्यपूर्वक) हाँ, वह झण्डा मेरा है ! —मेरे देश का है।

माध्यु : वह हमारे कलेजे के खून से रंगा हुआ है।

(बाहर से एक गाने की आवाज आती है। दोनों घूम कर उस ओर देखते हैं। 'सुमम !' माला दबे स्वर में कहती है। दोनों इस बात की कोशिश करते है कि चेहरे की मुद्रा बदलें। माध्यु इस अभिप्राय से 'माला' कहकर पुकारते हैं। वह अपने चेहरे पर प्रसन्नता लाने की भरसक कोशिश करती है।)

माध्यु : सुमम ! (जोर से पुकारते है।)

(सुमम हँसती हुई प्रवेश करती है। आते ही माला के पास जाकर उसे खींचकर अपने पास करती है।)

माध्यु : सुमम, तुम क्या कर रही थी ?

सुमम : मैं उस आम के पेड़ के नोचे बैठकर गाना शुरू कर रही थी !

माध्यु : सोचा होगा कि यहाँ माला अकेली है, है न ! फिर गाना बन्द क्यों कर दिया ? गाओ, हम भी सुनें।

(सुमम खड़ी हँस रही है।)

माध्यु : ऊँ—वही गाना गाओ जो गा रही थी।

(सुमम एक ग्रामीण गाना गाती है।)

माध्यु : (गाने के बाद) तुमने ये ग्रामीण गाने बहुत जल्दी सीख लिये हैं।

सुमम : यह कोर्तन-धोर्तन गा करके मैं तंग आ गयी थी ! ऐसे ही मौके पर

मोना ने मुझे कुछ नये गाने ला दिये थे। मुझे वे गाने पसन्द आ गये !

माध्यु मैंने सोचा शौकिया गायकों को ऐसे गाने पसन्द नहीं होंगे !

सुमम (हँसती हुई) संगीत तो ग्रामीण गानों के विरुद्ध नहीं है न !

माध्यु तब ठीक है। तुम लोग गाना गाकर बैठकर बातें करो। मुझे जरा जाना है। (कुछ कदम चलने के बाद माला से) यदि गोपालन आ जाये तो कह देना कि मैं ढूढ रहा था। (सुमम से) जाऊँ सुमम ? (जाते है।)

सुमम (जाते हुए माथ्य की ओर टकटकी लगाये देखते हुए) कितना प्यारा आदमी है यह !

माला हाँ !

सुमम सच कहूँ—इन लोगो की हिम्मत के बारे में कोई शक नहीं था। लेकिन मैंने नहीं सोचा था कि ये लोग इतने मानवप्रेमी भी हैं।

माला यदि इन्सान से मुहब्बत न हो, तो इसके लिए निकलने की भी क्या जरूरत है ?

सुमम हाँ—अच्छा, माला ! क्या वह आयेंगे नहीं ?

माला (हँसते हुए) जल्दी करने से काम थोड़े ही चलेगा ! बच्ची से मिलने की उन्हें भी जल्दी होगी !

सुमम (शिकायत करने के अभिप्राय से) माला ! तुम मुझे बच्ची कहकर क्यों पुकारती हो ? क्या मैं बच्ची हूँ ?

माला नहीं तो, बूढी है क्या ?

सुमम वह जो कुछ भी हो—मुझे बच्ची कहकर मत पुकारा करो।

माला फिर क्या कहकर बुलाऊँ ?

सुमम मुझे सुमम कहकर बुलाना चाहिए।

माला (हँसते हुए) तो—सुमम से मिलने के लिए अब दौड़े चले आयेंगे !

सुमम (लज्जा के मारे हँसती हुई) आजकल तुम मेरा खूब मजाक उड़ाती हो ! मैंने तुमसे सब बातें खोलकर नहीं कही हैं !

माला ये बातें यों छिपाकर रखना संभव है क्या ?

सुमम : मैं कुछ भी छिपा कर रखने की आदी नहीं हूँ।

माला : कुछ बातें मरते दम तक छिपाकर रखनी पड़ती हैं। •

सुमम · किसको ?

माला : चाहे किसीको भी, तुम्हें नहीं।

सुमम : क्या तुम्हारा मतलब यह है कि वह मुझसे कुछ खोलकर नहीं कहेंगे?

माला : उन्हें तुमसे छिपाने की कोई बात नहीं है।

सुमम : वह व्याख्यान !—गाना !—हँसी-मजाक ! यह सब मुझसे भुलाया नहीं जा सकता !

माला : (मजाक उडाने के अभिप्राय से) व्याख्यान देनेवाले, गानेवाले, और हँसी-मजाक करनेवाले और कितने ही लोग हैं !

सुमम : उन सब लोगों में इतनी कुशलता और हिम्मत नहीं होगी।

माला : (मजाक उडाते हुए) हाँ—बड़े ही हिम्मतवाले ठहरे न !

सुमम : सो क्यों ?

माला : मैंने देख लिया—तड़प रहे थे !

सुमम : क्यों ?

माला : सुमम के मन की बात जानने के लिए !

सुमम : हट ! ऐसी कोई बात नहीं है।

माला : ऐसी कोई बात नहीं है !—और तड़प के मारे एक गाना भी लिख दिया !

सुमम : तो माला जरा वह गाना सुना दो न !

माला : अभी आते होंगे उसके रचयिता ! गाना गाने के लिए कहने की बात का जिम्मा मैं लेती हूँ। गवाने की जिम्मेवारी तुम ले लो !

सुमम : तुम्हारा गा लेना ही काफी है।

माला : तो तुम ही जरा गा लो।

सुमम : मैं वह नहीं जानती।

माला : (अपने सिर से बला टालने के अभिप्राय से) जो जानती हो उसे गाना ही काफी है।

सुमम : तो गाऊँ ?

माला : हाँ, हाँ, गाओ न !

(सुमम गोपालन का लिखा हुआ 'तुम्हारी जीवन-वीणा गिरकर चूर-चूर हो गयी, अब कभी वसन्त तुम्हारी जिंदगी मे नहीं आयेगा' इस आशय का गाना गाती है। माला की मौजूदा जिन्दगी उस गाने मे चित्रित है। उसकी एक-एक पक्ति उसके कलेजे पर चोट करती जाती हैं। सुमम के पीछे खडी होकर उसके कन्धे पर हाथ रख कर उससे वह गाना सुनते समय माला आँसू बहाती हुई और चेहरे को सुमम की ओर किये बिना, सुनती रहती है और धैर्य बाँधे रहती है।

माला की आँखो से टपके हुए दो आँसू सुमम के हाथ पर गिर जाते है। सुमम माला के चेहरे पर दृष्टि डालती है। वह आश्चर्य मे पड़ जाती है। 'हाय, माला—तुम क्या रो रही हो ?' वह घबराहट मे पूछती है। माला हताश हो सुमम की छाती की ओर झुक जाती है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ९

[केशवन नायर का बंगला। सामनेवाले कमरे मे एक आराम कुर्सी पर केशवन नायर लेटा हुआ है। हाथ मे एक किताब है। आराम कुर्सी की बाँह पर एक पचाग रखा हुआ है। वेलु कुर्सी के पीछे खडे होकर पखा कर रहा है।]

केशवन नायर : (किताब को देखते हुए) लग्नाधिपति छठे पर है।

वेलु : जी... ? (हुकारता है)

केशवन नायर : केसरी और गज केसरी दोनों एक साथ आये हैं। वाह !—

वेलु : जी,—यह गज-केसरी क्या चीज होती है ?

केशवन नायर : उसके लिए कुछ नियम है। (अपने पाडित्य का पूरा प्रदर्शन करने के अभिप्राय से) यह ज्योतिष वगैरह जो हैं, एक गहन शास्त्र है। (सुमम को आवाज देते है) सुमम, ओ सुमम !

वेलु : (घूम कर अन्दर की ओर मुँह करके जोर से) बच्ची !

केशवन नायर : वेलु तुम जरा उस तरफ जाकर सुमम को भेज दो !

वेलु : जी !

केशवन नायर : उसके बाद हमारे मेलेपाड तक हो आओ।

वेलु : जी ! (पखा कुर्सी पर रख कर जाने लगता है।)

केशवन नायर : वेलु !

वेलु : (घूम कर) जी, हुकुम करिये।

केशवन नायर : हाँ, तुम जा रहे हो ? मैंने मेलेपाड क्यों जाने को कहा था, यह जानते हो ?

वेलु : (फिर घूम कर) जी नहीं, यह आपने नहीं बताया।

केशवन नायर : नहीं बताया ? तुम भी पूरे गधे हो न ? सुना कुछ, करने निकले कुछ !

वेलु : किसलिए जाने को कहा था ?

केशवन नायर : अरे, उस पप्पु की जमीन जरा देख लेना। लगान कम कराने की माँग लेकर निकला हुआ है वह ! इस फसल की कटाई के बाद उसे बेदखल करना ही होगा। इसलिए देखना होगा कि उसकी जमीन की फसल कैसी है। समझे ?

वेलु : जी, समझ गया। (जाता है।)

केशवन नायर : (कुर्सी पर सीधे बैठकर पचाग लेकर उसे देखते हुए) 'पुत्राणी शोभा रेवे' वाह ! (इस अभिप्राय से सिर हिलाकर कि बात समझ मे आ गई है) सुमम ! अरी सुमम !

(अन्दर से सुमम आवाज देती है 'क्या है ?')

केशवन नायर : तुझे कितनी देर से मैं बुला रहा हूँ री, तू क्या कर रही है वहाँ ?

(सुमम प्रवेश करती है। लूँगी, ब्लाउज और दुपट्टा पहने हुए है।)

केशवन नायर : यह कैसी सूरत बना रखी है, तूने ? तू क्या कर रही थी ? रसोई में काम कर रही थी क्या ? अरी तुझसे मैंने कहा नहीं है क्या कि रसोई के काम में तेरे जाने की जरूरत नही है !

सुमम : पिताजी, मै एक किताब पढ रही थी !

केशवन नायर : (मानो उसने कोई शरारत की) देखा-देखा ! किताब पढ रही थी ! बेटी मैंने कहा नहीं है क्या कि पढ-पढ़ कर दिमाग खराब नहीं करना चाहिए ! पढ़-पढ कर अध्यापिका बन कर मुझे कमा कर खिलायेगी क्या ! तेरे पास किस चीज की कमी है ? जमीन नहीं है ?—आयदाद नहीं है (प्रसन्न होकर) अब जहाँ मेरी बेटी जाने-वाली है, वहाँ !—वह एक वकील है बेटी !

सुमम : (बात समझ में न आने से) वकील ?

केशवन नायर : हाँ, वकील ! वकील किसे कहते हैं, यह तुम्हें नहीं मालूम है क्या ?

सुमम : पिताजी, यह किसके बारे में कह रहे हैं आप ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता।

केशवन नायर : मैं वह सब समझाने जा रहा हूँ ! तुम हमारे कर्ताव-भैया को जानती हो ?

सुमम : (केशवन नायर का मतलब कुछ-कुछ समझकर नीरस भाव से) मैं नहीं जानती।

केशवन नायर : जानती हो। हमारे कर्ताव भैया! यहाँ आ चुके हैं। रुद्राक्ष की माला वगैरह पहने—गंजे सिर के—तुम जानती हो! (सुमम नफरत से खड़ी है) कर्ताव भैया का बड़ा लड़का! उसका नाम है करुणाकरन। वह एरणाकुलम में वकील है! मैं तुम दोनों की जन्मपत्री मिलाकर देख रहा था! बड़ा बढ़िया मेल है। वही है उसकी खूबी! अब यह विवाह फौरन हो जाना चाहिए।

सुमम : (मुर्झाये चेहरे से) पिताजी मुझे अभी शादी नहीं करनी है।

केशवन नायर : है!—क्यों नहीं?

सुमम : मुझे कुछ और पढ़ना है।

केशवन नायर : यदि जिद है तो पढ़ो!—आज-कल की लड़कियाँ शादी-विवाह के बाद भी पढ़ने जाती हैं री! तो उस दिन के लिए बेटी के लिए दो नये सोने के गहने चाहिए। मोती का हार तुम्हारे पास है ही! सोने का हार भी है। और कौन-सा हार चाहिए?

सुमम : मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

केशवन नायर : हार नहीं चाहिए, अच्छा! तू बड़े घर के केशवन नायर की इकलौती बेटी हो। हार चाहिए। जानती हो मेरी बेटी के ब्याह में कौन-कौन आयेगा? सब-के-सब मंत्री लोग आयेंगे—मुख्य मंत्री जरूर आयेंगे! ऐसे अच्छे-अच्छे लोगों के आने पर खूब जवाहरात पहनकर तुम्हें मंडप में जाना होगा! हार चाहिए, जरूर चाहिए!

सुमम : मुझे यह शादी नहीं करनी है, पिताजी!

केशवन नायर : (चेहरे पर कड़वाहट लाकर) नहीं करनी है!—क्यों नहीं करनी?
(सुमम चुप खड़ी रहती है।)

केशवन नायर : (गंभीर मुद्रा में) क्या-री—क्यों नहीं करनी है?

सुमम : (हिम्मत बांध कर) मुझे यह शादी पसन्द नहीं है।

केशवन नायर : (उसी गंभीरता के साथ) मुझे पसन्द है।

सुमम : आपको मेरी राय भी देखनी चाहिए।

केशवन नायर : तुम्हें क्यों पसन्द नहीं है ? क्या उसके पास दौलत नहीं है ? क्या वह बी० ए० पास नहीं है ?

सुमम : सिर्फ इतनी चीजें ही काफी नहीं हैं !

केशवन नायर (घृणा से) हो ! तो अपनी पसन्द की सब चीजें एक डिबिया में रख कर के मुझे दे दो—मैं किसी बाजार में जाकर पता लगाऊँगा कोई लायक पुरुष है या नहीं। (गंभीरतापूर्वक) देखो—इसका फैसला मैंने किया है। मैं इसे करके ही छोड़ूंगा !

सुमम : शादी तो मुझे करनी है न, पिता जी ?

केशवन नायर : (गुस्से में आकर) करानी तो मुझे ही है न बेटी ! खैर, यदि मेरी तय की हुई शादी है तो मैं करके ही छोड़ूंगा।

सुमम . मेरी नहीं !

केशवन नायर . (बढ़े हुए गुस्से से झपट कर उठकर) हूं, क्या कहा तूने, छोकरी ? तेरी नहीं ? (कुछ सोच कर) बात अब समझ में आयी न ! लड़कियों को जहां स्कूल भेजा, वहां मामला गड़बड़ हुआ ! (सुमम की ओर मुड़ कर) हां—ठीक है ! तुम कल से स्कूल जाना बन्द करो। इस घर से बाहर मत निकलना—बदतमीज कहीं की—देखूं, मैं अपनी लड़की को भी ठिकाने रख सकता हूँ या नहीं। (बाहर से किसी के खांसने की आवाज आती है।)

केशवन नायर कौन है ?

गोपालन . (हाथ जोड़े चला आता है) जी, मैं हूँ।

(गोपालन को देखते ही सुमम परेशानी में पड़ जाती है।)

केशवन नायर · (गंभीरतापूर्वक) क्या बात है ?

गोपालन . यों ही जरा मिलने के लिए चला आया था।

केशवन नायर · (असभ्य ढंग से) अच्छा, तो मिल लीजिये !

गोपालन : (यह जवाब कुछ बुरा लगा, लेकिन उसकी परवाह न कर चेहरे पर हल्की मुस्कराहट लाकर) वैसे मिलकर चले जाने से ही काम न चलेगा।

केशवन नायर : तो यहाँ पर जमकर रहोगे क्या ?

(सुमम यह बातचीत सुनकर बेहद परेशान होती है।)

गोपालन : कुछ गंभीर मसलों के बारे में मुझे बात करनी है, आप से।

केशवन नायर : अच्छा ! (सुमम की ओर घूम कर) तुम अन्दर जाओ !

(सुमम अन्दर चली जाती है।)

केशवन नायर : ऐसी कौन-सी गंभीर बात करनी है ?

गोपालन : भाई साहब, कुछ ऐसा लगता है कि हम लोगों के संभल करके रहने से कुछ गलतफ़हमी हो गई है आपको।

केशवन नायर : (मजाक उड़ाने के अभिप्राय से) क्या सिर्फ यही कहना है ?

गोपालन : नहीं, और भी कई बातें करनी हैं।

केशवन नायर : तो जल्दी कहिये। (जैसे चुभनेवाली बात यह कह रहा हो) मुझे और भी काम-काज हैं।

गोपालन : भाई साहब, इतनी जल्दी करने लग जायें तो कैसे काम चलेगा ? अब तो काफी उम्र और पक्वता आ गई है न ?

केशवन नायर : धत्, मेरी उम्र की जाँच करनेवाले तुम हो क्या ? आया है एक उम्र का पता लगानेवाला !

गोपालन : नहीं—बहुत कम उम्र के हैं !

केशवन नायर : आपको कुछ और भी कहना है क्या ?

गोपालन : आपने कुछ मजदूरों को काम से अलहदा किया है। उन्हें वापिस लेने के बारे में कुछ कहना है। उसी के लिए आया हूँ।

केशवन नायर : तो वापिस ले लीजिये।

गोपालन : मैं कैसे ले लूं ?

केशवन नायर : मेरे लेने की बात ! उसके लिए आपकी सिफारिश की कोई जरूरत नहीं है !

गोपालन — मुझे मालूम है कि बिना सिफारिश के ही आप उन्हें वापिस ले लेंगे।

केशवन नायर — आपको कोई और बात भी करनी है ?

गोपालन — हां। कल आपके वेलु और कुछ लोगों ने मिलकर करम्बन की झोपडी उखाडने की कोशिश की। मैं यह नहीं कहता कि उन्हें आपने भेजा था।

केशवन नायर — हां, हां। मैंने ही कहा था ! अब वही होगा। कल मैं भी साथ चलकर उसे उखडवाने जा रहा हूँ।

गोपालन — क्या इसमें कोई हर्ज नहीं है ?

केशवन नायर — इसका सब पता लगानेवाले आप कौन हैं ? उससे आपका मतलब ?

गोपालन — एक छोटा-सा मतलब है भाई साहब। यहां की किसान सभा का मंत्री होने के नाते मैं आपसे बातचीत करने के लिए आया हूँ।

केशवन नायर — (बढ़ी हुई घृणा के साथ) अच्छा--मंत्री हो क्या ? मुझे पता नहीं था !

गोपालन — (कुछ गंभीरता के साथ) आप मजाक उडा रहे हैं।

केशवन नायर — नहीं, बात कह रहा हूँ। यहां से निकलो—तुम्हें कोई काम नहीं है तो दस गायें खोल दूंगा। चरा लेना—कुछ-न-कुछ दे दूँगा।

गोपालन — (पूरी गंभीरता के साथ) कुछ और ईमानदारी के साथ बात करियेगा ?

केशवन नायर — नहीं तो ?

गोपालन — नहीं तो ! आप ईमानदारी के साथ बात करेंगे। (बड़ी गंभीरता के साथ और ऊँची आवाज में) मैं आपके पास भीख मांगने के लिए नहीं आया था। आप उन मजदूरों को वापिस लेने के बारे में क्या कहते हैं ? मुझे यह जानकर जाना है। फिर इन मजदूर औरतों के साथ शरीफाना तरीके से पेश आइये, वरना !

केशवन नायर — मजूर लडकियां सब आपकी बपौती है क्या ?

गोपालन : वे इस देश की जायदाद हैं।

केशवन नायर : यह बात! एक मजदूर रक्षक आया है! यदि वापिस न लिया, तो?

गोपालन : यदि वापिस नहीं लिया तो नुकसान होगा, भाई साहब!

केशवन नायर : इसमें कोई हर्ज नहीं है।

गोपालन : हर्ज है। वह आपको मालूम नहीं है।

केशवन नायर : यह रहने दीजिये। कोई हर्ज नहीं है।

गोपालन : है! आपकी फसल काटने और नारियल गिराने के लिए मजदूर नहीं मिलेंगे।

केशवन नायर (एकाएक अपनी चाल जरा बदलकर शान्त होकर) कोई हर्ज नहीं! आप आदमी होशियार हैं। मैं आपका जरा इम्तिहान ले रहा था!

गोपालन : (केशवन नायर की यह गदी चाल देखकर हँसी आने पर भी उसे दवाकर) आपके इस ढंग से बात करने से मैं भी कुछ कह गया!

केशवन नायर : नायर जात के लडकों में बेवकूफ कौन है? तो भी भैया तुम्हें यह गुस्ताखी शोभा नहीं देती। वैसे तुम्हें ही क्यो दोष दूं। भाई परमुपिल्ला को ही लो--कितना गुस्सा करनेवाले हैं! लेकिन दिल अच्छा है; हाल ही में मैं जब भाई परमुपिल्ला से मिला था, उस वक्त तुम्हारे बारे में भी हम लोगों ने बात की थी। सोचा भी था कि मिल लूं!

गोपालन : आज उसके लिए मौका मिल गया न?

केशवन नायर : खडे होकर क्यों बात कर रहे हो? (कुर्सी आगे बढाकर) बैठ जाओ, भाई!

गोपालन : नहीं--मैं खडा ही रहूँगा।

केशवन नायर : ऐसा नहीं—उसमें कोई बात नहीं भाई--बैठ जाओ।

गोपालन : चलिये, बैठ जाता हूँ। (बैठ जाता है)

केशवन नायर : (कुर्सी पर बैठकर) क्यो भाई, 'मजदूर भाई! मजदूर भाई!'

कहकर इन पुलय और कोरव जात के मजदूरों के घरों में आते-जाते रहना ठीक है क्या ? आपके पास सिर्फ दौलत ही की कमी है न ? कुछ भी न सही, ऊँचे कुटुम्ब के तो हैं न आप ?

गोपालन : बिना शान का कोई काम मैं नहीं करता भाई साहब !

केशवन नायर : देखा ! क्या मैंने यह कहा भैया कि तुमने बिना शान का कोई काम किया ? नहीं—किसी जगह का एक ईसाई लड़का आकर हम नायर जात के लोगों को भिड़ाने की कोशिश कर रहा है न ! भाई तुम कुछ समझदार आदमी हो ! तुम ये अखबार वगैरह पढ़ते हो न ? (गोपालन के हाथ में एक अखबार देखकर) हाथ में कोई अखबार है भी ! कौन-सा है ?

गोपालन : हाँ, अखबार तो है !

केशवन नायर : कौन-सा है ?

गोपालन : यह एक ऐसा अखबार है जिसे आप पसन्द नहीं करेंगे।

केशवन नायर : अब हमारे बीच में हम-आप हैं क्या ? खैर—कौन-सा अखबार है ?

गोपालन : इसका नाम है 'जनयुगम्'।

केशवन नायर : देखा न ! यही तो वह अखबार है, जो लड़कों का दिमाग खराब करता है। क्या हम लोगों को यही अखबार पढ़ना चाहिए ?

गोपालन : फिर कौन-सा अखबार पढ़ना चाहिए ?

केशवन नायर : हम नायर जात के लोगों को नायर लोगों का अखबार पढ़ना चाहिए !

गोपालन : वह कौन-सा है ?

केशवन नायर : पढ़ना है, तो पढ़ो 'देशबन्धु'। वही हम नायर लोगों की मतलब की बातें लिखता है न ? हाँ, सरकार की बातें भी है ! इस भूमिसुधार बिल का विरोध करते हुए क्या इसी अखबार ने नहीं लिखा था ? इस पत्र में जो लिखा था, उसके मुताबिक हुए बिना हमें क्या लाभ होगा ? इसके बदले इन लोगों ने एक बिल पेश

गोपालन : वे इस देश की जायदाद हैं।

केशवन नायर : यह बात ! एक मजदूर रक्षक आया है !
तो ?

गोपालन : यदि वापिस नहीं लिया तो नुकसान होग

केशवन नायर : इसमें कोई हर्ज नहीं है।

गोपालन : हर्ज है। वह आपको मालूम नहीं है।

केशवन नायर : वह रहने दीजिये। कोई हर्ज नहीं है।

गोपालन : है ! आपकी फसल काटने और नारिय
नहीं मिलेंगे।

केशवन नायर : (एकाएक अपनी चाल जरा बदलकर
नहीं ! आप आदमी होशियार हैं। मैं
रहा था !

गोपालन : (केशवन नायर की यह गंदी चाल देख
दबाकर) आपके इस ढंग से बात करने

केशवन नायर : नायर जात के लड़कों में बेवकूफ ए
यह गुस्ताखी शोभा नहीं देती। वै
भाई परमुपिल्ला को ही लो—खि
लेकिन दिल अच्छा है; हाल ही में
मिला था, उस वक्त तुम्हारे बारे में
थी। सोचा भी था कि मिल लूं !

गोपालन : आज उसके लिए मौका मिल गया

केशवन नायर : खड़े होकर क्यों बात कर रहे हो ?
जाओ, भाई !

गोपालन : नहीं—मैं खड़ा ही रहूँगा।

केशवन नायर : ऐसा नहीं—उसमें कोई

गोपालन : अच्छा, बैठ जाता हूँ।

केशवन नायर : (कुर्सी पर बैठकर) क्यों

किया था। किसने ? त्रिच्चूरवाला कोई मेनन ! कहते हैं कि वह नायर है ! यदि वह नायर होता तो क्या नायर जात के लोगों के हितों के विरुद्ध कोई बिल पेश करता ? उस बिल का मकसद क्या है ? बेदखली नहीं होनी चाहिए ! यह पट्टे और लगान पर दी गई जमीन सब नायर लोगों की पैतृक सम्पत्ति है न ! उस जमीन से बेदखल नहीं करना चाहिए, यह कहने का अर्थ यही है न कि नायर लोगों की जमीन ईसाइयों को दे दो। इस बिल के पीछे किसका हाथ है ?

गोपालन : किसका ?

केशवन नायर : यही तो खूबी है ! कोई अलप्पी वाला है। कहते हैं कि कम्युनिस्ट है ! नाम उसका तोमस है ! इसलिए भाई एक काम करो। जाकर कुछ और पढ़-लिख लो। कम-से-कम बी० ए० पास कर लो। फिर छोटी-मोटी कोई सरकारी नौकरी हासिल करके, किसी अच्छे घर की लड़की से शादी कर लो। फिर चाहे कांग्रेसी बन जाना या कम्युनिस्ट !

गोपालन : कांग्रेसी ही क्यों न बनूं !

केशवन नायर : वही ठीक है भैया ! हम नायर लोग शासन करने वाली पार्टी के साथ हैं। एक और गुप्त बात है ! पढाई-लिखाई के लिए पैसा नहीं है ? दस-पन्द्रह रुपये मैं उधार दे दूंगा। आखिरकार नायर जात के हो न तुम—खुश रहो।

गोपालन : मुझे मालूम है कि भाई साहब नायर जात के लिए सब कुछ करेंगे।

केशवन नायर : ठीक है !

गोपालन : मैं एक बात पूछ लूं, बुरा तो नहीं मानेंगे न ?

केशवन नायर : बिलकुल नहीं, पूछ लीजिये।

गोपालन : हमारे मेलूट के भाई परमुपिल्ला—अच्छे नायर हैं न ?

केशवन नायर : यह सब कहने का तात्पर्य क्या है ?

गोपालन : कर्ज के सिर्फ डेढ़ सौ रुपये के लिए आपने उन्हें भिखारी बना दिया था न?

(केशवन नायर चुप हो जाता है। इस तरह मुंह बनाकर बैठ जाता है मानो बात पसन्द नहीं आयी।)

गोपालन : उस शंकरन नायर की ही बात लीजिये। वह भी तो अच्छे नायर हैं न?

केशवन नायर : (बिना गौर किये) कौन जानता है कि वे सब नायर हैं कि नहीं!

गोपालन : अच्छा, अब यह बात है! खैर—यदि आप सौ रुपया छोड़ देते, तो वे और दो-तीन बच्चे क्या सड़कों पर भीख माँगते फिरते?

केशवन नायर : तो आपके कहने का मतलब क्या है? नायर कहकर मैं अपने पास जो कुछ है, उसे साढ़े तेरह सेंट जमीन के हिसाब से सब को बाँट दूं?

गोपालन : साढ़े तेरह और चौदह करके किसी को देने की जरूरत नहीं है। लेकिन यह 'नायर, नायर' कहकर गरीबों को ठगने की कोशिश मत कीजिये। वे इस चीज को समझ चुके हैं। (उठकर गंभीरता-पूर्वक) भाई साहब, उन मजदूरों को काम पर वापिस लेने के बारे में क्या कहते हैं?

केशवन नायर : इतनी देर तक बातचीत करने का कोई फायदा नहीं हुआ? (दबे स्वर में) यह 'मजदूर-मजदूर' चिल्लाने की जगह तुम कुछ चाहो तो कहो, मैं दे दूंगा।

गोपालन : मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है। उन मजदूरों को वापिस लेने के बारे में आप क्या कहते हैं? यहां की किसान सभा ने फैसला किया है कि अगर आपने उन्हें काम पर वापिस नहीं लिया तो वे हड़ताल करेंगे। उसकी इत्तला भी मैं आपको दे रहा हूँ।

केशवन नायर : (यह देखकर कि अपनी चाल असफल हो रही है, विरोध करने के अभिप्राय से घृणापूर्वक) किसान सभा! यह कौन-सी सभा है!

गोपालन : वह मालूम हो जायेगा।

किया था। किसने? त्रिच्चूरवाला कोई मेनन! कहते हैं कि वह नायर है! यदि वह नायर होता तो क्या नायर जात के लोगों के हितों के विरुद्ध कोई बिल पेश करता? उस बिल का मकसद क्या है? बेदखली नहीं होनी चाहिए! यह पट्टे और लगान पर दी गई जमीन सब नायर लोगों की पैतृक सम्पत्ति है न! उस जमीन से बेदखल नहीं करना चाहिए, यह कहने का *अर्थ यही है न कि नायर लोगों की जमीन ईसाइयों को दे दो।* इस बिल के पीछे किसका हाथ है?

गोपालन : किसका?

केशवन नायर : यही तो खूबी है! कोई अलप्पी वाला है। कहते हैं कि कम्युनिस्ट है! नाम उसका तोमस है! इसलिए भाई एक काम करो। जाकर कुछ और पढ़-लिख लो। कम-से-कम बी० ए० पास कर लो। फिर छोटी-मोटी कोई सरकारी नौकरी हासिल करके, किसी अच्छे घर की लड़की से शादी कर लो। फिर चाहे कांग्रेसी बन जाना या कम्युनिस्ट!

गोपालन : कांग्रेसी ही क्यों न बनूं!

केशवन नायर : वही ठीक है भैया! हम नायर लोग शासन करने वाली पार्टी के साथ हैं। एक और गुप्त बात है! पढाई-लिखाई के लिए पैसा नहीं है? दस-पन्द्रह रुपये मैं उधार दे दूंगा। आखिरकार नायर जात के हो न तुम—खुश रहो।

गोपालन : मुझे मालूम है कि भाई साहब नायर जात के लिए सब कुछ करेंगे।

केशवन नायर : ठीक है!

गोपालन : मैं एक बात पूछ लूं, बुरा तो नहीं मानेंगे न?

केशवन नायर : बिलकुल नहीं, पूछ लीजिये।

गोपालन : हमारे मेलूट के भाई परमुपिल्ला—अच्छे नायर हैं न?

केशवन नायर : यह सब कहने का तात्पर्य क्या है?

गोपालन : कर्ज के सिर्फ डेढ़ सौ रुपये के लिए आपने उन्हें भिखारी बना दिया था न ?

(केशवन नायर चुप हो जाता है। इस तरह मुंह बनाकर बैठ जाता है मानो बात पसन्द नहीं आयी।)

गोपालन : उस शंकरन नायर की ही बात लीजिये। वह भी तो अच्छे नायर हैं न ?

केशवन नायर : (बिना गौर किये) कौन जानता है कि वे सब नायर हैं कि नहीं !

गोपालन : अच्छा, अब यह बात है ! खैर—यदि आप सौ रुपया छोड देते, तो वे और दो-तीन बच्चे क्या सड़कों पर भीख मांगते फिरते ?

केशवन नायर : तो आपके कहने का मतलब क्या है ? नायर कहकर मैं अपने पास जो कुछ है, उसे साढ़े तेरह सेंट जमीन के हिसाब से सब को बांट दूं ?

गोपालन : साढ़े तेरह और चौदह करके किसी को देने की जरूरत नहीं है। लेकिन यह 'नायर, नायर' कहकर गरीबों को ठगने की कोशिश मत कीजिये। वे इस चीज को समझ चुके हैं। (उठकर गंभीरता-पूर्वक) भाई साहब, उन मजदूरों को काम पर वापिस लेने के बारे में क्या कहते हैं ?

केशवन नायर : इतनी देर तक बातचीत करने का कोई फायदा नहीं हुआ ? (दबे स्वर में) यह 'मजदूर-मजदूर' चिल्लाने की जगह तुम कुछ चाहो तो कहो, मैं दे दूंगा।

गोपालन : मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है। उन मजदूरों को वापिस लेने के बारे में आप क्या कहते हैं ? यहां की किसान सभा ने फैसला किया है कि अगर आपने उन्हें काम पर वापिस नहीं लिया तो वे हड़ताल करेंगे। उसकी इत्तला भी मैं आपको दे रहा हूँ।

केशवन नायर : (यह देखकर कि अपनी चाल असफल हो रही है, विरोध करने के अभिप्राय से घृणापूर्वक) किसान सभा ! यह कौन-सी सभा है !

गोपालन : यह मालूम हो जायेगा।

केशवन नायर : अगर मालूम न करना चाहूँ, तो ?

गोपालन : भाई साहब से भी बड़ों ने यह मालूम कर लिया है।

केशवन नायर : मुझसे बड़े ! —वैसे किसीको आपने देखा नहीं।

गोपालन : बहुत हैं, केशवन नायर !

केशवन नायर : हूं, केशवन नायर ! क्या तुम्हारी गोद में बिठाकर मेरा नामकरण किया गया था ! जितना ज्यादा मैं सोचता हूँ कि जाने दूं···

गोपालन : हम लोगों ने भी सोचा था कि छोड़ दें—छोड़ दें। पर अब पल भर के लिए भी आपके जुल्म हम नहीं बरदाश्त करेंगे।

केशवन नायर : (गुस्से में) निकल जा यहाँ से ! मर्दों के घर आकर मनमानी बात न करो।

गोपालन : (बिलकुल रियायत न दिखला कर) आप मर्द हैं क्या ? घर पर आये हुए लोगों से ईमानदारी से बात करना न जाननेवाले आप मर्द हैं !

केशवन नायर : आपको यहाँ आने के लिए किसीने दावत दी थी ?

गोपालन : आपके घर मर्दों के आने का रिवाज नहीं है न !

केशवन नायर : निकल जा फौरन यहाँ से ! उल्टी-सीधी बातें न कर !

गोपालन : जल्दी है क्या ?

केशवन नायर : हाँ, जल्दी है।

गोपालन : तो निकाल दीजिये ! (केशवन नायर को बिलकुल तुच्छ समझकर खड़ा हो जाता है।)

केशवन नायर : (ताज्जुब और गुस्से में) यह कहाँ का न्याय है ! मेरे घर में मेरा हक नहीं चलेगा ! निकल जाइये यहाँ से !—नहीं तो मारकर तुम्हारा सिर फोड़ डालूंगा !

(सुमम एकाएक 'हाय, पिताजी !' कहकर दौड़ी चली आती है।)

केशवन नायर : (बढ़े हुए गुस्से से उसकी ओर घूम कर) !—जा हट यहाँ से ! अरी, तुम जैसों को गुमराह करने के लिए ही यह सब चाल चल रहा है ! (गोपालन की ओर घूम कर) छी: ! बाहर निकलो न !—

सुमम : हाय पिताजी !

केशवन नायर : (सुमम की ओर गरजते हुए) भीतर चली जा री ! (गोपालन से) निकल कुत्ते, मेरे घर से !

गोपालन : (गुस्से मे आकर केशवन नायर के पास जाकर) आपका घर ! — आपका प्रताप ! मुझे मालूम है केशवन नायर—गरीबों का छीनकर बनाया हुआ है यह घर और यह प्रताप ! बड़प्पन की बातें कहकर हमारे सामने बनिये नहीं !—(सुमम की ओर इशारा करके) कम-से-कम इस लड़की का खयाल करके इन्सान बनकर जीने की कोशिश करो।—बाल पक गये हैं न !—अब कब आपको अकल आयेगी ! (चला जाता हैं।)

केशवन नायर : (यह समझ कर कि गोपालन चला गया है) धत्–निकल यहाँ से–(घूम कर देखने पर कि सुमम गोपालन का निकल जाना देख करके खडी है, अत्यधिक गुस्से मे आकर गरजते हुए) सुमम—ओ सुमम !—खबरदार जो तूने कभी इसकी तरफ आँख भी उठाई ! खबरदार जो उससे कभी बात भी की ! नहीं तो मार डालूंगा मैं तुझे, कुलद्रोहिणी ! (आगे बढता है।)

(सुमम डरके मारे पीछे हटती जाती है।)

(पर्दा गिरता है।)

पप्पु : ऐसा जुल्म मनुष्य योनि में पैदा हुआ कोई शख्स भी कर सकता है ? क्या इसका कोई हल नहीं निकलेगा ?

परम् : (गमछे से आँखें पोछते हुए) उसका भला नहीं होगा । कुलीन घराने के लोगों का यह परिवार है--जिसको वह बरबाद कर रहे हैं ।

कल्याणी : मेरे बच्चे ने उसी दिन कहा था ! उस वक्त उसका सिर लेने चले थे !

पप्पु : दस्तावेज को पढने-सुनने के बाद ही आपने उस पर दस्तखत नहीं किये थे क्या ?

परम् : मैंने कहाँ सोचा था कि वह ऐसा जुल्म करेगा ? पहले एक बार पढ सुनाया—तब मैंने गौर नहीं किया था ! अपना सब कुछ दे देकर बरबाद हुआ आदमी हूँ मैं। इस धोखे का मुझे खयाल भी न था।

कल्याणी : उससे क्या हुआ--मेरा और लडकी का हाथ पकड कर हमें सडक पर ले जाकर छोडिये ! (फिर रोने लगती है)

परम् : अरी—तुम मुझे पागल मत बना डालना ! यदि भाग्य में ऐसा ही लिखा हो तो वह भी कहीं टल सकता है ! (लम्बी साँस लेते हैं)

पप्पु : (चिंतापूर्वक) यदि मकान का उसमें खास तौर से जिक्र न किया होता, तब भी कुछ राहत थी !

परम् : (नफरत के साथ) जो दस्तावेज पढकर सुनाया था, उसमें मकान का जिक्र नहीं था ।

पप्पु : (परमुपिल्ला के और भी पास जाकर) जरा जानने के लिए पूछ रहा हूँ—आपने वैसे ही मान लिया था ?

परम् : इस जमीन को भी गिरवी रखने की बात मैंने मंजूर कर ली थी। लेकिन इसी जमीन को लगान पर मुझे वापिस देने की बात कही थी। अब दस्तावेज में जोडा है—इतनी सेंट जमीन और अन्दाजन इतने मूल्य का मकान वगैरह। मकान की बात मुझे कभी मालूम न थी। 'मकान फौरन खाली करना होगा ' यह भी दस्तावेज में दिखाया गया है।

पप्पु : अवधि बताई गई है ?

परम् : मैंने पाँच साल की अवधि रखना मंजूर कर लिया था। वह भी फैसला

दृश्य : १०

[परमुपिल्ला के घर का सामने का भाग। परमुपिल्ला हाथ पर ठोढी टेके कुर्सी पर झुक कर बैठे हैं। अत्यधिक दुख और निराशा से घिरा है उनका चेहरा। कल्याणी मुँह नीचे करके बैठी है। उसकी आँखें रोने से फूल गई हैं। पप्पु अपने हाथ की कोहनी चबूतरे पर दिये और हाथ पर ठोढी टेके नीचे के चबूतरे पर बैठा है। शोकमय दृश्य। दिन के दो बजे का समय।]

पप्पु · (कुछ देर के बाद सात्वना देने के ढग से) **उठकर रसोई-वसोई कुछ बनाइये। इस तरह कितनी देर तक बैठी रहेंगी !**

(परमुपिल्ला और कल्याणी टस-से मस न होकर वैसे के वैसे ही बैठे रहते हैं।)

पप्पु (फिर कुछ देर के बाद) **बच्ची स्कूल से नहीं आयी अभी ?**

(परमुपिल्ला और कल्याणी पहले की तरह चुप्पी साधे बैठे हैं।)

पप्पु (कुछ देर के बाद, जिद करके कहने के ढग से) **गोपालन को आने दीजिये ! हर सवाल का कोई हल जरूर है। इस तरह कितनी देर बैठे रहेंगे !**

(परमुपिल्ला और कल्याणी हिलते नही)

पप्पु (व्यग्र होकर उठकर) **चलिये, उठकर अपना काम करिये।**

परमु (उसी तरह बैठे-बैठे सिर ऊँचा करके पप्पु की ओर देखकर) **ऐसा दिन देखने को भी नौबत आ गयी। पप्पु !** (आँखें भर आती हैं)

पप्पु आप खिन्न मत होइये ! गोपालन को आने दीजिये। जनता के लिए जान देनेवालों पर आफत आ जाये, तो क्या जनता नहीं है ?

परमु चिता पर आग कौन लगायेगा पप्पु ! (आँखें भर आती हैं)

कल्याणी (हाथ से आँख-नाक पोछ कर और रुक रुक कर बात करते हुए) **शाम होने पर रहने के लिए एक घोंसला तक भी रहेगा ! राम-राम !**

पप्पु ऐसा जुल्म मनुष्य योनि में पैदा हुआ कोई शख्स भी कर सकता है? क्या इसका कोई हल नहीं निकलेगा?

परमु (गमछे से आँखें पोछते हुए) उसका भला नहीं होगा। कुलीन घराने के लोगों का यह परिवार है--जिसको वह बरबाद कर रहे हैं।

कल्याणी मेरे बच्चे ने उसी दिन कहा था! उस वक्त उसका सिर लेने चले थे!

पप्पु दस्तावेज को पढ़ने-सुनने के बाद ही आपने उस पर दस्तखत नहीं किये थे क्या?

परमु मैंने कहाँ सोचा था कि वह ऐसा जुल्म करेगा? पहले एक बार पढ सुनाया--तब मैंने गौर नहीं किया था! अपना सब कुछ दे देकर बरबाद हुआ आदमी हूँ मैं। इस धोखे का मुझे खयाल भी न था।

कल्याणी उससे क्या हुआ--मेरा और लडकी का हाथ पकड कर हमें सडक पर ले जाकर छोडिये! (फिर रोने लगती हैं)

परमु अरी--तुम मुझे पागल मत बना डालना! यदि भाग्य में ऐसा ही लिखा हो तो यह भी कहीं टल सकता है! (लम्बी साँस लेते हैं)

पप्पु (चितापूवक) यदि मकान का उसमें खास तौर से जिक्र न किया होता, तब भी कुछ राहत थी!

परमु (नफरत के साथ) जो दस्तावेज पढ़कर सुनाया था, उसमें मकान का जिक्र नहीं था।

पप्पु (परमुपिल्ला के ओर भी पास जाकर) जरा जानने के लिए पूछ रहा हूँ--आपने वैसे ही मान लिया था?

परमु इस जमीन को भी गिरवी रखने की बात मैंने मंजूर कर ली थी। लेकिन इसी जमीन को लगान पर मुझे वापिस देने की बात कही थी। अब दस्तावेज में जोडा है--इतनी सेंट जमीन और अन्दाजन इतने मूल्य का मकान वगैरह। मकान की बात मुझे कभी मालूम न थी। 'मकान फौरन खाली करना होगा' यह भी दस्तावेज में दिखाया गया है।

पप्पु अवधि बताई गई है?

परमु मैंने पाँच साल की अवधि रखना मंजूर कर लिया था। वह भी फैसला

किया था कि जब मैं रुपया लेकर जाऊँगा, तब वह जमीन वापिस कर देगा।

पप्पु : जबानी करार है ?

परमु : हाँ, जबानी करार है !

(पप्पु इस अभिप्राय से मुँह बनाता है कि वापिस मिलनेवाला नहीं है।)

परमु : अब इस दस्तावेज की रजिस्ट्री की जा चुकी है और उसमें बताई गयी है पन्द्रह बरस की अवधि !

पप्पु : तब तो जबानी करार के मुताबिक घर खाली...

परमु : खाली.....!

कल्याणी : मेरे राम !—मैं यह क्या-क्या सुन रही हूँ ! मुझसे कुछ न होगा ! (दोनों हाथों से सिर पीटती है।)

पप्पु : (सान्त्वना देने के अभिप्राय से) खिन्न मत होइयें। हम लोगों के अफसोस करने से कुछ नहीं होनेवाला है ! उठकर उस तरफ जाकर कुछ पकाइये। बच्ची स्कूल से अभी आती होगी। वह क्या बिना कुछ खाये-पिये रहेगी ! ये बातें सब उसे क्या मालूम ?

(परमुपिल्ला हताश से होकर चुपचाप बैठे हैं।)

कल्याणी : (रोती हुई) उसकी किस्मत में सडक के किनारे पड़े भूख से तड़प-तड़प कर मरने को ही बदा है, पप्पु !

परमु : (हताश हालत में अत्यन्त ही दयनीय होकर) जो कुछ होने वाला था, वह हो गया ! अब तुम भी मुझे परेशान मत करो—कल्याणी !

पप्पु : (कल्याणी से स्नेहपूर्वक डाँटने के ढंग से) आप उठकर उधर जाइयें न !

(कल्याणी रोती हुई उठकर चली जाती है।)

परमु : (सिर घुमाकर जाती हुई कल्याणी की ओर देखकर असहनीय दुःख के साथ पप्पु से) मैंने कौन-सा पाप किया था, पप्पु ? (फिर आँखें भर आती हैं।)

पप्पु : धीरज रखिये—दस्तावेज क्या कह कर...

परमु (लम्बी सांस लेकर) जमीन की गिरवी का दस्तावेज रजिस्टर कर लेने के बाद जमीन पट्टे पर देने का इकरारनामा लिखा जायेगा, यही कहा था। आखिर जब लगान का सवाल उठा, तो इतनी ज्यादा लगान मांगने लगा जैसी दुनिया में कहीं नहीं है। तो यह सोचकर कि कुछ न कुछ कहूँ, जब मैं वहा गया तो यह कहकर कि जरूरी काम है, निकल गया। मूर्ख होकर मैं घर चला आया। जालिम!

पप्पु इस वक्त जो नोटिस आया है, उसमें क्या लिखा है?

परम• लिखा है (याद करके कहने के ढग से) फलाने साल, फलाने महीने, फलाने दिन लिखे गये दस्तावेज के मुताबिक—इस प्रकार—अब तक घर न खाली करने पर—और यह न करने पर आपके ऊपर दीवानी और फौजदारी (पप्पु 'हाय' कहता है) कार्रवाई न करने के लिए यदि कोई कारण हो तो पेश करें—यही नोटिस है।

पप्पु (शिकायत करने के अभिप्राय से) बिना सोचे समझे आपने यह सब कर डाला, यह अफसोस की बात है!

परमु (ज्यादा निराश होकर) ये सब बातें अब करने से क्या फायदा! उस पर मैंने यकीन किया था। गिरवी का दस्तावेज लिखते समय ही यह कहा था कि यही जमीन मुझे बाकायदा लगान पर दी जायेगी। मैं सोच रहा था कि यह बात कल्याणी तक के कान में नहीं पड़नी चाहिए! आखिर दस्तावेज रजिस्टर करने के दूसरे ही दिन उन्होंने वेलु और तण्डान लोगों को नारियल निकलवाने के लिए भेज दिया! तभी कल्याणी को इन बातों का पता लगा। उस दिन यहाँ पर जो बवण्डर उठा, वह पप्पु, तुम भी जानते हो! अब यहाँ से निकल जाने की भी नौबत आ गयी है! कुटुम्ब को तबाह करके फिर मैं जिन्दा क्यों रहूँ, पप्पु!

पप्पु• गिरवी की रकम क्या है?

परमु तुम ऐसे सवाल पूछ कर मुझे परेशान मत करो। थोड़े में कहूँ तो इस मकान की छत बनवाने के लिए जरूरी नारियल के पत्ते और बनवाई का खर्च उस महादानी ने दिया था।

पप्पु : (ताज्जुब के साथ) बस इतना ही !

परमु : और अब—बनी छत का मकान और जमीन भी उसकी हो गई ! (लम्बी सांस लेते हैं।)

पप्पु : यह कैसी बात ? यह कौन-सा पागलपन है ?

परमु : आने वाला क्या रास्ते में रुकेगा ? ऐसा ही सब हो गया !

पप्पु : (उसी ताज्जुब के साथ) फिर भी कितने के लिए गिरवी लिखा है ?

परमु : पाँच सौ के लिए। हुंडी की रकम और सूद सब मिलाकर तीन सौ !

पप्पु : ओफ्फो ! सूद दूना कर दिया !

परमु : नारियल के पत्ते का दाम ७० रुपये लगाया !

पप्पु : (मानो विश्वास न हुआ) सत्तर !

परमु : फिर—तुम्हें दस परा धान दिया था, न ? उसका दाम ५० रुपये !

पप्पु : खूब !

परमु : तब सब मिलाकर कितना हुआ ?

पप्पु : (हिसाब लगाता है) तीन सौ और सत्तर—तीन सौ सत्तर। तीन सौ सत्तर और पचास (कुछ देर तक चुपचाप हिसाब लगाकर) चार सौ बीस !

परमु : चार सौ बीस। पच्चीस रुपए नकद दिये। चार सौ बीस और पच्चीस ?

पप्पु : (हिसाब लगाकर) चार सौ पैंतालीस !

परमु : चार सौ पैंतालीस ! कहा है कि बाकी रकम बाद को दे देंगे !

पप्पु : (गुस्से में आकर) अच्छा है !—यदि सेंटर जेल में भी जाना पड़े, तो भी कोई बात नहीं इस जालिम को खत्म कर देना चाहिए !—खैर—हुण्डी दे दी है ?

(परमुपिल्ला परेशानी प्रकट करते हैं।)

परमु : नहीं, कहा था कि भेज देंगे !

पप्पु : (गुस्से और घृणा के भाव से) आपको हो क्या गया ! कह दिया कि भेज

देंगे!—वह न हुण्डी देंग और न बाकी रकम ही—यहाँ से निकाल भी लेंगे। आपके साथ ऐसा ही होना चाहिए। (गुस्से मे दूसरी तरफ मुँह करके खडा हो जाता है।)

परमु पप्पु!

पप्पु (नफरत के साथ दुहराता है) पप्पु!

परमु (ज्यादा शात होकर) तुम ऐसे मत कहो, पप्पु! मैं तुम्हें दोष नहीं देता। और चार आदमी सुनें, तो वे भी इसी तरह मुझे दोष देंगे। मैंने उस पर यों ही विश्वास कर लिया! जिस तरह कटहल कुरेद कर देखा जाता है, उसी तरह क्या इन्सान के साथ किया जा सकता है? मेरे दादा-परदादा ने बहुत कमाया था! लेकिन उनमें से किसी ने एक सेंट जमीन भी छल-कपट से किसी से नहीं ली थी। मेरी वही ईमानदारी है

पप्पु (गुस्सा पूरी तरह न त्यागकर) लेकिन इस तरह की भूल किसी दादा परदादा से भी न हुई होगी! और अब—मुझसे जो दस परा धान मिलना है, सिर्फ वही बाकी है?

परमु वही बाकी है!

पप्पु मैं अपने बूढ़े बैलों को बेचकर भी, किसी भी तरह, वह ला दूँगा। आप उसे लेना मजूर करके आये हैं, इसीलिए! वरना इस साल मैं उन्हें देनेवाला नहीं था!—

परमु (गुस्से म) जो भी हो, मैं उससे एक बार मिलने जा रहा हूँ। उससे मुझे कुछ बातें करनी है!

पप्पु (मजाक उडाने के अभिप्राय से) दूसरा कोई काम नहीं है आपको! (गम्भीरतापूर्वक) बात-बात के लिए न जाकर जमीन वापिस लेने का कोई रास्ता ढूँढिये।

परमु यह कैसे होगा—दस्तावेज की रजिस्ट्री हो गयी है न? (माना इस हालत स स्वयं सान्त्वना पा रहे हो) किसी को क्यों दोष दू? सब कुछ ईश्वर की मर्जी है!—मेरे ऊपर यह शनि की दशा है! कल्याणी

की भी शनि-दशा है ! गोपालन की राहू ! सब का योग हो गया है। अरे पप्पु ! यह शनि की दशा काफी यंत्रणा देगी हो !

पप्पु : तो शनि-शनि कहकर निकल जानेवाले हैं, क्या ?

परमु : (असहाय हो) कहाँ जाऊँ, पप्पु मैं ?

पप्पु : मैं भी वही पूछ रहा हूँ।

परमु : पुश्त-दर-पुश्त लोगों का बसा हुआ घर ! बुढ़ापे में इस घर को दूसरों के हाथ सौंपने की बदनामी मुझी पर आयेगी !

पप्पु : (और पास जाकर बहुत गौर से) तो कम-से-कम अब पप्पु के कहे मुताबिक कीजिये। हम उपाय करेंगे।

(परमुपिल्ला आशापूर्वक सुनने की इच्छा प्रकट करते हैं।)

पप्पु : एक दरख्वास्त लिखकर किसान सभा में दे दीजियेगा (परमुपिल्ला को नाखुश होकर मुँह घुमाते देख) कुछ न सही, हमारा बच्चा ही तो उस का नेता है न !

परमु : (मानो चोट खाई हो) मुझसे नहीं होगा। जो मुझसे न होगा, उसमें कूद पड़ना--दुनिया भर का झंझट सिर पर उठाना--यह सब मुझसे न होगा ! पहली बात, ये मेरे बुरे दिन हैं। यदि थोड़े पैसे हाथ में होते, तो वकील लोगों के पास जाकर सलाह-मशविरा किया जा सकता था।

पप्पु : फिर अब क्या करने जा रहे हैं ? जानबूझकर सुबह होते ही बच्चों और उनका हाथ पकड़कर--सड़क पर निकल जाइये !

परमु : राम-राम !

पप्पु : (व्यंग में) राम-राम ! (गंभीरतापूर्वक) बात कहने पर आप कभी सुनेंगे नहीं न !

परमु : (हद दर्जे की मानसिक शिथिलता का परिचय देते हुए) मेरे ईश्वर ! इस सब के लिए मैंने कौन-सा पाप किया ? (दोनों हाथ ऊपर करके, जोड़कर) हे ईश्वर ! मेरे घर में मुसलमानों या ईसाईयों के घुस आने की नौबत आने के पहले ही मुझे अपने पास बुला ले ! हे परमेश्वर !

सात-आठ बरस हो गये एक अच्छी साड़ी पहने—या सिर पर अच्छी तरह तेल मले और पेट भर कुछ खाये ! मैंने सब लोगों की शान्ति की बातें सुनीं—होते-होते यह नौबत आ गयी है कि अब सड़क पर निकल जाने के सिवाय कोई जरिया नहीं रह गया है ! —(एकाएक रोना बन्द कर, गरजने की आवाज में क्रुद्ध होकर) निकाल रहे हैं, उन्हें ?—

(कल्याणी के प्रलाप में बीच ही परमुपिल्ला उसे सान्त्वना देने के लिए 'अरी कल्याणी—अरी कल्याणी !' चिल्लाते रहते हैं। वह उनकी बात पर गौर नहीं कर रही है। पप्पु की ओर घूमकर परमुपिल्ला बीच-बीच में दयनीय स्वर में 'अरे पप्पु !' पुकारते हैं।

पप्पु इस आशय से एकदम चुप्पी साधे खड़ा है कि यह सब होना ही चाहिए।)

परमु : (जब वे देखते हैं कि उनकी पत्नी उनकी बात सुन ही नहीं रही है तो चुप्पी के साथ) जरा संभल जाओ, जी ! (दयनीय अवस्था में गला लम्बा करके दिखाते हुए) तो लो, तुम मुझे ही काट डालो ! —मैं ने ही तुम्हें मुसीबत में डाला है न !

(वेलु का प्रवेश। कारिन्दे का वही खाता भी उसके हाथ में है। मन में डर होने पर भी निरपराधी होने का ढोंग रचता है।)

कल्याणी : (वेलु को देखते ही फिर पुराने ढंग से) लीजिये—घुस आया है ! पापी, यमराज के कुत्ते ! (वेलु की ओर घूम कर) यदि तू चाहता है कि मैं अपनी करामात नहीं दिखाऊँ, तो निकल जा मेरे यहाँ से !

परमु : (पत्नी से) छी—चुप रहो जी ! जो भी हो, घर आनेवालों की बेइज्जती नहीं करनी चाहिए।

वेलु : (बहुत ही दीनता दिखाते हुए, परमुपिल्ला से शिकायत करने के अभिप्राय से) मैं क्या करूँ, भैया !

कल्याणी : (पहले की तरह) तुझे कुछ नहीं करना है—अब निकल मेरे घर से !

परमु : (पत्नी से गुस्से में) बेइज्जती मत करो जी !

वेलु : भाईसाहब, आप ही कहिये—यह कहाँ की भलमनसाहत है !

(कल्याणी कुछ शान्त हो जाती है।)

पप्पु : (वर्तमान जानबूझ कर दूर खड़ा था। ... कुर्सी सामने ... था ... सब वेलु की बातें देखकर वेलु से) आपको क्या चाहिए?—जब मना करते हैं, तो जाते क्यों नहीं!—

(परमुपिल्ला घबराहट में सामने कुर्सी पर चुपचाप बैठ जाते हैं।)

वेलु : (यहाँ पानवाजी के साथ पप्पु से) मैं जानेवाला ही हूँ, पप्पु! मुझे क्या पड़ी है! उनका कहना मानना चाहिए, इससे ज्यादा मुझे क्या है!

कल्याणी फिर तुम्हीं अभी नारियल मजदूरों को हुकुम सुना रहे थे 'नारियल के पेड़ों पर चढ़ो-चढ़ो'!

वेलु : (माना एकदम अनजानी बात हो) मैं?

कल्याणी : (गुस्से से) हाँ,—तुम्हींने कहा था!

वेलु तो, बहनजी, आपको सपना आ गया होगा! नम्बर लगाने के लिए आये हुए किसीने कहा होगा।

कल्याणी : (दृढ़तापूर्वक, जोर देकर) नम्बर लगाने आये हुए आदमी ने नहीं—तुम्हींने कहा था!

पप्पु (वेलु को परेशान होते देख) जाने दो जी!

वेलु (पप्पु की ओर मुड़कर शिकायत करने के ढंग से) मुझे क्या है, पप्पु! (केशवन नायर का लक्ष्य करके) जब तक उनकी रोटी खाऊँगा, तब तक उनके कहे मुताबिक करने के अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ? यदि जाने के लिए कहते हो तो मैं चला जाता हूँ! यदि यहाँ कुछ हो तो मैं आज़ादी के साथ माँग कर खा भी सकता हूँ! (मुड़कर परमुपिल्ला से) मैं जा रहा हूँ, भाई साहब!

कल्याणी जाने दो, जो कुछ होगा हम लोग भुगत लेंगे! (चाकू नीचे डाल देती है)

वेलु वह काफी नहीं है! मुझे भाईसाहब का जवाब चाहिए! जब मैं वापस वहाँ जाऊँगा तो हो सकता है कि वह मुझसे पूछें कि क्या भाई परमुपिल्ला ने विवाद उठाया था? तब मुझे कुछ तो जवाब देना ही होगा!

परमु (सिर उठाकर, जरा दुविधा में कल्याणी और पप्पु की ओर बारी-बारी से देखते हैं, फिर वेलु की ओर मुड़कर) तुम कल सबेरे आ जाना।

कल्याणी (गुस्से में) यदि मेरे घर या जमीन पर कब्जा करने के लिए, तो—कल भी नहीं—कभी भी नहीं!

परमु तुम जरा चुप हो जाओ, जी!

कल्याणी (दृढ़ निश्चय प्रकट करते हुए) अब मैंने कहने का ही फैसला किया है। (दुख के साथ) चौदह बरस की उम्र में मैं यहाँ लायी गयी थी। (फूट फूटकर रोते हुए) और आज मुझे और मेरे बच्चों को सोने भर के लिए एक कुटिया तक नहीं, यह हालत हो गयी है! पापी—यमराज—सब कुछ धोखा देकर लिखवा लिया! अब मैंने भी एक फैसला किया है।

परमु (कल्याणी की बात दिल में असर कर जाने से वेलु से) फिर भी—फिर भी—मेरे साथ यह धोखा! यह नहीं होना चाहिए था, वेलु!

वेलु धोखा दिया? (निरपराधी होने का ढोंग रचकर) मैं यह सब नहीं जानता!—(स्वर बदलकर परमुपिल्ला की ओर घूमकर गंभीरता पूर्वक) "अरे—कुत्ते! मैंने अपना पैसा लगाकर जमीन ली है, उससे तुझे क्या? तुम्हें मेरे कहने के मुताबिक करना चाहिए।—जब तक तुम मेरा नमक खाते हो, दूसरा कोई काम करने का तुम्हें क्या हक?" (पहले की तरह स्वर धीमा करके और विनय भाव से) इस तरह कहलाने की नौबत मैं नहीं दूंगा! क्या कहते हैं?
(वेलु जिस वक्त स्वर बदलकर बात करता है, उस समय परमुपिल्ला, पप्पु वगैरह जरा घबरा उठते हैं।)

परमु (घबराहट को दूर करके) इस दस्तावेज की शर्तों के बारे में जिस वक्त बातचीत हो रही थी, उस वक्त तुम भी तो थे न?

वेलु: हाँ, था।

परमु: क्या, दस्तावेज में घर का जिक्र करने की भी कोई बात उठी थी?

वेलु : (बहुत ही चालबाजी के साथ) उसके बारे में कोई बात ही नहीं हुई थी ! (परमुपिल्ला 'देखा ?—मेरा दोष है !' इस अर्थ में पत्नी और पप्पु की ओर बारी-बारी से देखते हैं ।)

वेलु : (बात जारी करके) फिर केशवन नायर हुजूर ने सोचा होगा कि दस्तावेज में मकान को भी शामिल कर लें !

पप्पु : (नापसन्दी प्रकट करके) देखिये, सुननेवालो को भी नागवार मालूम पडनेवाली ऐसी बातें मत करिये ! इन हथकडो का साथ देने के बदले आपको क्या मिलेगा ?

कल्याणी : (दाँत पीसकर मानो कुछ अशुभ बात कह रही हो) उसे मिलता है !—मुझसे कुछ कहलाइये नहीं !

वेलु : (शर्मिन्दा होकर) नहीं,—मैं इसमें कुछ भी नहीं जानता !—(परमुपिल्ला से) नारियल मजदूर खड़े-खड़े परेशान हो रहे हैं—उन्हें वापिस भेज दूं ?

कल्याणी : हाँ, वापिस भेज दो !

पप्पु एक काम कीजिये—यहाँ एक जवान लडका है न ··

वेलु : गोपालन है क्या !

पप्पु : क्यों ? बात पसन्द न आयी होगी ! (फिर गभीरतापूर्वक) उसे भी यहाँ आने दो ! फिर सब मिलकर सोच विचार करके यहाँ इत्तिला कर देंगे ! अब जाइये ।

वेलु · (जाने की तैयारी करके परमुपिल्ला से) तो—मैं जा रहा हूँ, भैया ॥ (परमुपिल्ला चुप है ।)

वेलु (फिर घूम कर खडे होकर) मैं जा रहा हूँ ! (जाने लगता है ।)

पप्पु . जाइये ! (मजाक उडाने के अभिप्राय से) हाँ, जरा देखकर जाइये—कहीं कुत्ता न काट ले !

वेलु : (मुडकर खडे होकर, गभीरतापूर्वक) मुझे ?—काटेगा ! (जाता है ।)

कल्याणी . जो कुछ भी हो । मैंने एक फैसला किया है ।

परमु : (कुर्सी से उठकर कल्याणी की ओर देखकर क्रोध और दुख के साथ) क्या है री, क्या मुझे थाने भिजवाने का ..

कल्याणी : (रत्ती भर भी परवाह न करके) अकेले नहीं—मैं भी चलूंगी।

पप्पु : (परमुपिल्ला से) जरा हिम्मत और दृढता के साथ रहें। हम सब मिलकर देख लेंगे—लडके को यहाँ आने दीजिये ! और कुछ न सही, समझदार कामरेड तो है न ?

कल्याणी : उसको यहाँ आने दो पप्पु—अब सब कुछ उसके कहे मुताबिक ही होगा !

पप्पु : वह काफी है।

(मीना अन्दर से 'अरे हाय रे ! अरे !' कहकर रोती हुई पुकारती है।)

कल्याणी : (घबराहट के साथ) क्या है बेटी ? क्या है ?

(मीना रोकर आसू बहाती हुई दौडी चली आती है। सब लोग घबडाते है।)

कल्याणी :
पप्पु : } क्या हुआ री ? क्या हुआ—बच्ची ?

मीना : (हाँपते हुए और हृदयभेदक दुख के साथ, रोने के बीच मे) माँ, भैया को उन लोगो ने मिलकर पीटा, माँ ..!

(कल्याणी 'बाप-रे!' चिल्लाकर जमीन पर गिर पड़ती है। परमुपिल्ला 'राम राम' कहकर सिर पर हाथ दिये जमीन पर बैठ जाते हैं।)

पप्पु : (कूदकर चबूतरे पर चढकर) भैया कहाँ है बच्ची ?—(बीच मे मीना का सान्त्वना देता है) बच्ची रोओ मत ! भैया है कहाँ ?—

कल्याणी : (उसी अवस्था मे सिर पटकते हुए) मेरे लाल—क्या तुम्हें भी मुझसे छीन लिया ?

परमु : (उसी तरह बैठकर) हे ईश्वर ! तुम देख नहीं सकते !

(मीना जोर से रोती है।)

पप्पु : बच्ची रोओ मत—यह तो कहो कि भैया है कहाँ ?

मीना : (रोती हुई) भैया को मजदूर और बहुत सारे लोग उठाकर ले गये !

पप्पु : बहुत मार पडी है क्या ?

मीना : (रोती हुई) बहुत मार पडी है।

पप्पु : कोई गडबड़ तो नहीं ?

मीना : क्या जाने !

कल्याणी : मेरे बच्चे के पास मुझे भी ले चल, पप्पु ! (सिर पीटकर रोती है)

(परमुपिल्ला बीच-बीच में 'राम राम' मात्र कहते हैं।)

पप्पु : भैया को किसने पीटा बच्ची ?

मीना : मैं और सुमम दीदी दोपहर की छुट्टी होने पर छाया में बैठी थीं...

पप्पु : भैया को किसने पीटा बच्ची ?

मीना : उस वक्त एक लड़की ने आकर कहा—और सुमम दीदी बेहोश होकर गिर पडीं।

पप्पु : (कुछ गुस्से में) किसने पीटा, यह तो कह बच्ची !

मीना : सुमम दीदी के बाबू ने भैया को पिटवाया है, यह

पप्पु : (जलती हुई आँखों के साथ दाँत पीसकर) सुमम दीदी के बाप ने !

कल्याणी : मेरे लाल को मार डाला ..! (जोर से रोती है)

परमु : (अत्यधिक क्रोध के साथ पागल की तरह घूरकर) किसने री, किसने री ? मेरे बच्चे को पिटवाया ? (उस बदली हुई मुँह-मुद्रा को देखकर डर के मारे मीना चिल्लाकर रोती है—परमुपिल्ला जमीन से उठकर कुछ और जोर से) किसने मेरे बच्चे को पिटवाया ? (कूदकर जाकर जमीन पर पडी चाकू को हाथ में लेकर) मार डालूँगा मैं उसे ! (कल्याणी 'हाय !' कहकर रोती हुई उठ खडी होती है। पप्पु सान्त्वना देने की कोशिश करता है—मीना रोती है।) मेरे बच्चे को मरवा डालनेवाले के—मैं टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा !— (परमुपिल्ला उग्र रूप धारण कर लेते हैं) उसे भी मार डालूँगा— मैं भी मरूँगा !—(दौडने लगते हैं। पप्पु उनके बायें हाथ को और कल्याणी दाहिने हाथ को पकडकर उन्हें सान्त्वना देने की कोशिश करते हैं। मीना जोर से रोती है। परमुपिल्ला गरजते

छोडो पप्पु—छोडो मुझे! अरे, मैं कह रहा हूँ कि छोडो दो! (पत्नी से) छोडो जी, मुझे! उसने मुझ भिखमंगा बना दिया!—मेरे परिवार को बरबाद किया। मेरे बेटे को भी मरवा डाला—मार डालूंगा मैं उसे!—छोडो—छोडो पप्पु! छोड दो जी—मुझे। (हाथ छुडाने की कोशिश करते हैं—गरजते है। कल्याणी और पप्पु चाकू पकड लेते हैं और सान्त्वना देते हैं। मीना डर के मारे चिल्ला चिल्लाकर रोती है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ११

[करम्वन की झोंपडी के सामने का भाग। पर्दा उठने पर सूना दृश्य सामने आता है। झोपडी के अन्दर से लोगो की दबी जबान से बात करने की आवाज सुनायी देती है। 'लोग जरा किनारे खडे हो जाये', 'कुछ हवा आने दीजिये,' 'बात मत कराइये', 'कोई बात नही,' करम्वन गुस्से मे आकर कहता है: 'अरे यहाँ आ जाओ न?'—'करम्वन!' माध्यु आदेश देने के स्वर मे बुलाते हैं। फिर दबी जबान मे बातचीत। कुछ देर के बाद माध्यु झोंपडी से निकल आते हैं। पसीने से तर-तर हो गये है, कमीज के बटन खोल कर छाती फूँक कर पसीना सुखाते हैं। गभीर मुद्रा मे एक बीडी लेकर जलाते है। समय—पिछले दृश्य के दो घटे बाद।]

माध्यु : (अन्दर की ओर मुडकर) **जहाँ तक हो सके कोई भीतर बातचीत न करें। यह खिडकी जरा खोल देना—थोड़ी हवा आने दो।**

(करम्वन हाथ मे डडा लिये झोपडी के अन्दर से क्रुद्ध होकर बाहर आता है। उसकी आँखें लाल हो रही हैं।)

करम्वन : (माध्यु की बात सुनकर) **हवा!—कैसी हवा!** (माध्यु के चेहरे की ओर देखकर) **कामरेड अब उधर जा रहे हैं कि नहीं?**

माध्यु : (शान्ति के साथ) **किधर करम्वन?**

करम्वन : (गुस्सा एकदम न तजकर) **हम पच्चीस-तीस लोग जरा उस ओर जा रहे हैं।** (माध्यु की जवाब की प्रतीक्षा न कर झोपडी के अन्दर देखकर) **अरे—कोच्चात्ता! आओ भाई!** (तेजी से बाहर जाने लगता है।)

माध्यु : (उसी आवेश मे करम्वन का हाथ पकडकर) **कहाँ जा रहे हो, करम्वन—इतने गुस्से में?**

करम्वन : (हाथ छुडाने की चेष्टा करते हुए) **छोड़ो कामरेड!**

माध्यु : **क्यों?**

छोडो पप्पु—छोडो मुझे! अरे, मैं कह रहा हूँ कि छोडो दो! (पत्नी से) छोडो जी, मुझे! उसने मुझ भिखमंगा बना दिया!—मेरे परिवार को बरबाद किया। मेरे बेटे को भी मरवा डाला—मार डालूंगा मैं उसे!—छोडो—छोडो पप्पु! छोड दो जी—मुझे। (हाथ छुडाने की कोशिश करते हैं—गरजते हैं। कल्याणी और पप्पु चाकू पकड लेते हैं और सान्त्वना देते हैं। मीना डर के मारे चिल्ला चिल्लाकर रोती है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : ११

[करम्वन की झोपडी के सामने का भाग। पर्दा उठने पर सूना दृश्य सामने आता है। झोपडी के अन्दर से लोगो की दबी जबान से बात करने की आवाज सुनायी देती है। 'लोग जरा किनारे खडे हो जाये', 'कुछ हवा आने दीजिये,' 'बात मत कराइये', 'कोई बात नही' करम्वन गुस्से मे आकर कहता है 'अरे यहाँ आ जाओ न ?'—'करम्वन !' माध्यु आदेश देने के स्वर मे बुलाते हैं। फिर दबी जबान मे बातचीत। कुछ देर के बाद माध्यु झोपडी से निकल आते है। पसीने से तर-तर हो गये है, कमीज के बटन खोल कर छाती फूंक कर पसीना सुखाते हैं। गभीर मुद्रा मे एक बीडी लेकर जलाते है। समय—पिछले दृश्य के दो घटे बाद।]

माध्यु : (अन्दर की ओर मुडकर) **जहाँ तक हो सके कोई भीतर बातचीत न करें। यह खिडकी जरा खोल देना—थोड़ी हवा आने दो।**

(करम्वन हाथ मे डडा लिये झोपडी के अन्दर से क्रुद्ध होकर बाहर आता है। उसकी आँखें लाल हो रही है।)

करम्वन : (माध्यु की बात सुनकर) **हवा !—कैसी हवा !** (माध्यु के चेहरे की ओर देखकर) **कामरेड अब उधर जा रहे हं कि नहीं ?**

माध्यु : (शान्ति के साथ) **किधर करम्वन ?**

करम्वन : (गुस्सा एकदम न तजकर) हम पच्चीस-तीस लोग जरा उस ओर जा रहे हैं। (माध्यु की जवाब की प्रतीक्षा न कर झोपडी के अन्दर देखकर) अरे—कोन्चात्ता ! आओ भाई ! (तेजी से बाहर जाने लगता है।)

माध्यु : (उसी आवेश मे करम्बन का हाथ पकडकर) **कहाँ जा रहे हो, करम्बन —इतने गुस्से में ?**

करम्वन : (हाथ छुडाने की चेष्टा करते हुए) **छोड़ो कामरेड !**

माध्यु : क्यों ?

करम्बन   उससे जरा पूछने ..

माध्यु : (बहुत शान्तिपूर्वक, हल्की हँसी के साथ) किससे ? केशवन नायर से !

करम्बन . हां !

माध्यु : क्या पूछने ?

करम्बन . (गुस्से में ही) वह तो वहां पर पहुँचने पर न ! हम मौके के मुताबिक करेंगे !

माध्यु : (स्नेहपूर्वक दूसरे हाथ से करम्बन की पीठ थपथपाकर) केशवन नायर को उठाकर पटकेंगे ! उससे सब कुछ हो जायेगा ?

करम्बन : (गुस्सा एकदम न छोडकर) फिर हमें कोई नहीं पीटेगा ।

माध्यु : इस केशवन नायर को पीट देने से फिर हमारे लोगो को कहीं कोई नहीं पीटेगा ? (करम्बन का हाथ छोड देते हैं ।)

करम्बन : (गुस्से और दुखमिश्रित भाव से एकाएक जमीन पर बैठकर) तो— हाथ पर हाथ धरे बैठा रहूंगा !

माध्यु : (करम्बन की निष्ठा और स्नेह और बदले की भावना देखकर उनकी आँखें भर आती है, लेकिन सभल कर) मैंने यह नहीं कहा कि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो !

करम्बन : (उठकर) नहीं, मैंने कहा !

माध्यु : तुमने जो कहा, मैं वही बात नहीं कह रहा हूँ ।

करम्बन : (गुस्से और दुख भरे स्वर में) ये जालिम जानसे मारने लगे हैं—

माध्यु : इस तरह कितने लोगो को मार डालेंगे !

करम्बन : इस तरह—हर एक को !

माध्यु : नहीं ! ऐसा कोई मामला लेकर हम लोगों से गडबडी कराके और पुलिस से दखल कराकर—हमें दबाने का उनका इरादा है ।

करम्बन : इसलिए हम उनका कुछ बिगाड़ हो न लें ?

माध्यु : वैसे हमारे लोगों ने कहीं भी कुत्ते की तरह मार खाई है करम्बन ? तुम इस मारपीट के पीछे अकेले केशवन नायर को ही देखते हो । मगर यह तो पूरा का पूरा वर्ग है, करम्बन ।

करम्बन : कामरेड, वह तो वर्ग है न ? इस वक्त तो निपट के आयें !

माध्यु : मैं एक बात पूछूं ? तुम कहा नहीं करते हो कि हमारी सभाओं में काफी लोग आया करते हैं। हमारी बातों पर जिन्दाबाद के नारे लगते और तालियां बजती हैं—! क्या उन लोगों को ये बातें बतानी नहीं चाहिए ?

करम्बन : चाहिए !

माध्यु : अगर सिर्फ करम्बन और कोच्चात्तन और हमारे दूसरे कामरेड लाठियां लेकर उधर चले जायें तो क्या वे हमें छोड़ेंगे ?

करम्बन : नहीं !

माध्यु : लेकिन हमारे लोग सब एक होकर खड़े हो जायें, तो वे कुछ कर सकेंगे।

करम्बन : नहीं !

माध्यु : इसीलिए कहा था कि हम लोग अकेले ही झपट न पड़ें ! एक सपना देखने से ही क्या सवेरा हो जायेगा, करम्बन ?

करम्बन : तो हम एक सभा करें, कामरेड।

माध्यु : (हल्की हँसी हँसकर) वह सब कैसे समझोगे—आधी बात सुनी, आधी नहीं सुनी—और केशवन नायर को ठीक करने के लिए कूद पड़े ! आज शाम को सभा है।

करम्बन : (प्रसन्न होकर कहानी कहने के ढंग से) मैं, हमारा तेवान, कोन्नन, काली—सब जिस वक्त काम कर रहे थे, उसी वक्त किसी ने आकर खबर सुनाई थी ! हम लोग फावड़ा लेकर दौड़ पड़े ! कोई तो झोंपड़ी में घुस गये और चाकू, मूसल वगैरह हाथ में जो कुछ मिला, सब लेकर ! हाँ—लड़के सब लोहे के सरिये लेकर पीछे दौड़े...
(माध्यु गर्व का अनुभव करते हैं।)

करम्बन : (बात जारी रखते हुए) जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि पाँच सौ के करीब लोग हैं। अगर उस वक्त वे हरामी लोग वहाँ मिले होते !

माध्यु : (गर्व के साथ) कोई गड़बड़ी नहीं होती, करम्बन। फौज से भी ज्यादा अनुशासन हमारे लोगों में है। उनको नियन्त्रित करने के लिए एक आदमी काफी है।

करम्बन : फिर भी—औरत-बच्चे सब मिलकर कितने लोग थे, कामरेड ! (मानो किसी को सामने देखा हो) कौन आ रहे हैं, कामरेड ?

माध्यु : (उस तरफ देख कर)—गोपालन की माँ और बाप आ रहे हैं। गोपालन से कह देना करम्बन कि उसके माँ-बाप आ रहे हैं।

करम्बन : (खुशी के साथ) कामरेड—मालिक और मालिकिन आ रहे हैं !— मालिक और मालकिन ! (जल्दी अन्दर चला जाता है।)

(कुछ देर के बाद, मीना का हाथ पकड़े आगे-आगे परमुपिल्ला, उनके पीछे कल्याणी और उनके भी पीछे पप्पु का प्रवेश। मीना का मुँह रोने से फूला हुआ है। कल्याणी पागल जैसी हो गयी है। पप्पु के मुँह पर दुख और घबराहट की छाप है, लेकिन साथ ही दृढ़ता भी।

रंगमंच पर आते ही कल्याणी और परमुपिल्ला इस तरह चारों तरफ आँखें फेरते हैं, मानो कुछ ढूँढ रहे हों। मीना हर एक के चेहरे की ओर बारी-बारी से ताकती है।

माध्यु आश्चर्य और खुशी के साथ विनीत भाव से खड़े हैं। इसी बीच झोपड़ी से निकला करम्बन भावावेश के साथ परमुपिल्ला और उनके परिवार के प्रति अत्यन्त विनय और आदरभाव प्रदर्शित करते हुए एक तरफ खड़ा हो जाता है।)

कल्याणी : (माध्यु को देखते ही उन्हें दोष देने के अभिप्राय से और दुख के साथ) मेरे बच्चे,—मेरे बच्चे की यह हालत हुई ! (रोने लगती है।)

माध्यु : (सविनय, उसे सान्त्वना देने के लिए) माताजी परेशान मत होइये— कोई बात नहीं !

परमु : (शिकायत करने के अभिप्राय से और खेद के साथ) सब कोई कह सकते हैं परेशान न हो। (व्यग्र होकर) वह है कहाँ ?

माध्यु : यहीं है ! (फौरन क्या कहें, यह न समझकर, उलझन में पड़कर) परेशान होने की कोई बात नहीं है ! फिर भी मैं जानता हूँ कि आपको परेशानी होगी ! हमने उसके लिए उपाय

(माला दरवाजे पर आकर झांककर गायब हो जाती है।)

परमु: (शिकायत करने के अभिप्राय से और निराशा की अवस्था में बात काट कर) आह!—कौन सा ऐसा मसला है जिसका उपाय नहीं है! जो हुआ सो हुआ! (व्यग्र होकर) बताओ, वह है कहां?

करम्बन: कामरेड झोंपडी के अन्दर है!

(करम्बन की बात सुनते ही मीना अन्दर चली जाने के लिए आगे बढ़ती है। परमुपिल्ला जो मीना का हाथ पकड़े हुए थे, उसे कस कर पकड़ते हैं। उसी वक्त आगे बढ़ने के लिए प्रवृत्त कल्याणी भी निश्चल होकर खड़ी हो जाती है। पप्पु फौरन झोपडी के अन्दर चला जाता है।)

परमु: (इस कदर मुंह बनाते हैं, मानो कीचड़ में पैर रख दिया हो। माध्यु की ओर दया भाव से देखकर) उफ! मेरे बच्चे! उसे क्या घर नहीं पहुँचाया जा सकता?

(मीना अपना हाथ छुडाकर अन्दर जाने की कोशिश करती है। लेकिन परमुपिल्ला छोडते नहीं हैं।)

करम्बन: (यह न समझकर कि परमुपिल्ला ने क्यो वैसा कहा था) हमारे लिए जान निछावर करनेवालों को हम जान दे कर भी संभाल लेंगे!

माध्यु: (परमुपिल्ला की बात का तात्पर्य समझकर) मजदूर और दूसरे लोग उठाकर उन्हें यहां लाये थे! गोपालन उन्हें बहुत प्यारा है। हम उसे घर ले जायेंगे। अभी बाहर लाने पर दिखायी देगा हो!

(इसी बीच मीना एकाएक हाथ छुडाकर अन्दर चली जाती है।)

परमु: (अकस्मात हाथ छूट जाने से, फौरन आगे बढ़कर जल्दी में) अरी!— अरी! यहां दरवाजे पर खड़े होकर—(बात पूरी करने के पहले ही मीना के अन्दर चली जाने से चेहरा सिकोड कर)—अरी! ...

कल्याणी (माध्यु से) उसे जरा बाहर लाओ न, बच्चे!—मुझे जरा देखने दो।

माध्यु: यहां खड़ी हो जाइये—अभी ले आऊँगा (अन्दर जाते हैं।)

(माध्यु के पीछे करम्बन भी जाता है।)

परमु (कल्याणी के पास आकर, इस कदर चुपचाप बात करते हैं कि कोई सुनने न पाये) उस लड़की को नहला-धुलाने के बाद तब घर ले चलना !

कल्याणी (गुस्से के साथ) चुप रहिये जी, —बस ! यह छुआछूत मेरे बच्चे से भी बड़ी चीज है क्या !

परमु (लम्बी साँस लेकर—आप ही आप बात करते हुए) राम ! राम ! क्या-क्या देखना, सुनना और भुगतना पड़ेगा !

(पप्पु एक बेंच लाकर आगन में डालता है। माला एक चटाई और चटाई का बना तकिया लाकर उस पर बिछाती है। परमुपिल्ला हद दर्जे की घृणा से अपना चेहरा घुमा लेते हैं।

गोपालन को थामे हुए आगे-आगे माथ्यु और पीछे-पीछे करम्बन आते हैं। मीना ने गोपालन का एक हाथ पकड़ रखा है। गोपालन को बेंच पर बिठाने में पप्पु माथ्यु की मदद करता है।

गोपालन के सिर पर और बदन पर एक-दो जगह पट्टी बंधी है। वह यह दिखाने की कोशिश करता है कि उसे किसी प्रकार की तकलीफ या दर्द नहीं है।

गोपालन को देखते ही 'मेरे बच्चे !' कहती हुई कल्याणी उस पर झपट पड़ती है और उसे बेंच पर लिटा देने पर उसके सिरहाने पर बैठ जाती है। परमुपिल्ला रोने का सा मुंह बनाकर 'हे ईश्वर !' कहकर गोपालन के पैरों के पास जा बैठते है। बैठते ही कागज की एक छोटी पोटली खोलकर उससे भस्म लेकर, मंत्र जपकर गोपालन के माथे और सिर पर लगाते है। मीना घुटने टेक कर उसके शरीर पर हाथ रखकर उसके चेहरे की ओर ताकती है। बाकी लोग इधर उधर देखते रहते हैं।)

गोपालन : (माँ का मुंह ताककर) कोई बात नहीं है, माँ !

कल्याणी : तुम फिर मानते ही किस बात को हो! (फिर अफसोस करने लगती है।)

माथ्यु : अब परेशान होने की कोई बात नहीं है। आप यों ही क्यों दुखी हो रही हैं !

परमु : (गोपालन के पैर मलते हुए) हे ईश्वर ! मैं हमेशा से इसे समझाता-बुझाता रहा हूँ।

पप्पु : यह ऐसी कोई बात नहीं है ! जब बच्ची ने आकर कहा, तो हम लोग जरा परेशान हो गये थे।

(माला अन्दर चली जाती है।)

मीना : (गोपालन की ओर ताककर निष्कलक भाव से) भैया, बहुत मार पड़ी है, क्या ?

(मीना का सवाल सुनकर परमुपिल्ला से रहा नहीं जाता। वह जबरन रोना रोक लेते है। वहाँ उपस्थित सब लोगो के दिल पर मीना के सवाल और परमुपिल्ला के चेहरे पर के भाव परिवर्तन से एक हल्की तबदीली आ जाती है।)

गोपालन : (चेहरे पर मस्कुराहट लाने की चेष्टा करते हुए मीना की पीठ थपथपाते हुए) नहीं, बहन !

माध्यु : (मीना के पास जाकर उसे उठाकर एक हाथ से उसकी ठोढी पकड कर ऊपर करके और दूसरे हाथ से उसका सिर थपथपा कर) भैया को पीटनेवालो से हम बदला लेंगे !

मीना : (उसी मुद्रा मे माध्यु के मुँह की ओर देखकर) दोपहर की छुट्टी होने पर ही हमें पता चला था। दोपहर के बाद कोई लड़का स्कूल नही गया—यह बात हमारे यहाँ आने पर एक लडके ने कही !

माध्यु : देखा !—उसी तरह एक भो आदमी पीछे से काम के लिए नही गया ! यह सब क्यो है ?

मीना : बेशक, भैया के कम्युनिस्ट होने से।

(परमुपिल्ला और कल्याणी को छोडकर बाकी सब लोग हँस पडते है। मीना का जवाब सुनकर कल्याणी भी खुश होती है। यह बात परमुपिल्ला को सोचने के लिए मजबूर कर देती है।)

करम्बन : (हँसी के बीच) छोटी होने पर भी यह समझती है— (न जाने क्यो वह अपनी आँखें पोछता है।)

पप्पु : ये कुछ उतावले हो गये थे ! कुछ कर बैठनेवाले थे !

माध्यु : कैसे ?

पप्पु : (आँखों से परमुपिल्ला की ओर इशारा करके) यह कुछ कर बैठते।

माध्यु : अच्छा !

पप्पु : चाकू लेकर कूद पड़े थे—यह कहकर कि अब केशवन नायर का काम खतम करके ही दूसरी बात—तभी मैंने इन्हें रोक लिया।

परमु : तुम यह कैसे कह सकते हो, पप्पु ! यह ठीक है—मैंने इसे घर से निकाल दिया था। लेकिन और कोई आदमी इसका बाल भी बाँका करे, तो क्या वह मैं सह सकता हूँ ? 'अपना बच्चा—सोने का बच्चा'। क्या तुम समझते हो कि केशवन नायर के प्रति जो गुस्सा मेरे दिल में है वह कभी खत्म होगा ?

माध्यु : (परमुपिल्ला में आये परिवर्तन से मन में प्रसन्न हो कर) आप ही को नहीं—जो लोग उनके साथ हैं भी, उन लोगों तक को भी इस मामले में उनसे विरोध है।

कल्याणी : उस पापी का भला न होगा ! —(गोपालन के चेहरे की ओर देखकर) बेटा,—वह हमें घर से निकालने जा रहा है ! (दुखी होती है।)

गोपालन : (माँ के चेहरे की ओर देखकर आश्चर्यपूर्वक) क्या !

परमु : (पत्नी से) जरा चुप रहो, जी !

माध्यु : क्या बात है ?

परमु : ओह—कुछ नहीं !

कल्याणी : (पति से) अब इन लोगों से छिपाकर क्या करने जा रहे हैं, आप ?

परमु : ये सब बातें कहने-सुनने के लिए कुछ और मौका भी हो सकता है न !

पप्पु : मैं बताता हूँ—केशवन नायर हुजूर...

परमु : (एकाएक गुस्से में) किसका हुजूर है वह !

पप्पु : (कुछ दुविधा में पड़कर हँसते हुए) नहीं, गलती हुई—कहने के बीच कह गया, बस ! वह हमें घर से निकालने जा रहा है !

गोपालन : क्या बात है ?

पप्पु : बात कहूँ तो बहुत है ! — घर का छप्पर कराने के लिए कुछ नारियल के पत्तों की जरूरत थी। उसके लिए यह वहाँ गये थे। पहले कभी एक हुण्डी पर कुछ रुपया उधार ले रखा था। आखिरकार सब मिलाकर एक दस्तावेज लिखवाया गया ! बात थोड़े में कहना काफी होगा। अब घर और जमीन सब कुछ केशवन नायर को हो गयी है।

माध्यु : तो उन्होंने यह सब जानबूझ कर किया था !

परमु : (दर्द के साथ) जानबूझ कर ! पापी ! — अब ये सब बातें करके इन्हें भी क्यों परेशान करते हो, पप्पु ?

कल्याणी : अब इनसे छिपाकर कोई काम न हो ! बेटा, हमें इसका कोई उपाय निकालना चाहिए।

करम्बन : यह कैसी शरारत है !

माध्यु . माँ खिन्न न हो। हम न जमीन छोड़नेवाले हैं और न घर।

परमु : हैं ! . .

माध्यु : (दृढतापूर्वक) वैसे झूठे दस्तावेज बनवाने से हम देनेवाले नहीं होते। हो सकता है कि कुछ मुसीबत सहनी पड़े।

कल्याणी : इससे ज्यादा कौन-सी मुसीबत आनी बाकी है बच्चे ?

पप्पु : आपको अकेले सहने की जरूरत नहीं। हम सब मिलकर सहेंगे !

करम्बन : इसके लिए हम जान भी देने के लिए तैयार हैं।

परमु : (सन्देहपूर्वक) तुम लोग ऐसा कहते हो, लेकिन दस्तावेज की बाकायदा रजिस्ट्री हो चुकी है न ?

पप्पु : (गुस्सा होने के ढग से) 'रजिस्ट्री हो गयी, रजिस्ट्री हो गयी'—कहने से काम न चलेगा। जमीन पर मेहनत करके चीजें पैदा करना रजिस्टर करने जैसा नहीं है !

गोपालन : (माध्यू से, राय मालूम करने के अभिप्राय से) पिताजी, एक काम करें। एक दरख्वास्त लिख कर किसान सभा में भेज दें।

पप्पु : यह तो मैंने तभी कहा था ! — उस वक्त तो सोचा था कि आपके आने के बाद सोच कर यह काम किया जायेगा।

(एक कामरेड एक साइकिल लेकर आता है और अपने हाथ से एक छपा इश्तहार माध्यू के हाथ में देता है)

माध्यू : (इश्तहार हाथ में लेकर) यह कहाँ छपवाया ?

कामरेड : जनयुगम प्रेस में (इस बीच में एक इश्तहार परमुपिल्ला को देता है। परमुपिल्ला कुछ सकुचाकर उसे लेते है।)

माध्यू : कितना छपवाया ?

कामरेड : यह मालूम नहीं—इसे छपवाने महमूद गया था न, इसलिए !

माध्यू : सब जगह बाँट दिया ?

कामरेड : कुछ और जगहों पर बाँटना बाकी है। मैं जाता हूँ। आपको तो उधर जाना है !

माध्यू : अभी जा रहा हूँ !

कामरेड : तो मैं चलूँ। (मुट्ठी बाँध कर अभिवादन करता है।)

(माध्यू और करम्बन वगैरह भी मुट्ठी बाँधकर जवाबी अभिवादन करते है। कुछ देर के बाद पप्पु भी मुट्ठी बाँध कर सलाम करता है। परमुपिल्ला इन नयी बातों को अचरज के साथ देखते हैं, धीरे-धीरे उनके चेहरे पर अवज्ञा भाव छा जाता है।)

पप्पु : हमारी मीटिंग का है न ?

माध्यू : हाँ।

करम्बन : जरा जोर से पढ दीजिये !

माध्यू : (उसे पढ कर सुनाते है) 'विरोध सभा। कामरेड गोपालन को पिटवाने पर अपना विरोध प्रकट करने के लिए जनता की एक आम सभा मन्दिर के मैदान में होगी।'

पप्पु : (बीच में ही) अध्यक्ष कौन होगा ?

माध्यू : (पढते है) सभा की अध्यक्षता माध्यू करेंगे और सुमम विरोध प्रस्ताव पेश करेंगी।

परमु : (एकाएक) यह कौन है ? उसकी लड़की है न ?

माध्यू : जी हाँ।

परमु : इससे उसका क्या वास्ता ! उसी के बाप ने तो इसे पिटवाया है न !

माध्यु : इसमें उसका क्या दोष है ! वह हमेशा हमारे साथ रही है। उसके लिए वह क्या-क्या मुसीबतें सहती है !

मीना . वह आज बेहोश हो गयी थी !

परमु हुश !—उसी की लडकी है न वह !—वह भी वैसी ही होगी।

माध्यु : सुमम के बारे में आप ऐसा न समझें।

गोपालन : सुमम वैसी नहीं है, पिताजी ! . .

परमु . मुझे मत सिखाओ, मैंने ऐसे कितनो ही को देखा है।

पप्पु : तो बातें करके यहां बैठे रहने से काम न चलेगा—मीटिंग में भी तो आना है।

माध्यु : हम फौरन चलें। (कुछ देर तक सोच कर सविनय परमुपिल्ला से) हमारी आज की मीटिंग में माताजी और पिताजी, आप दोनो को भी जाना होगा ! है न पप्पु ?

परमु . (आश्चर्य के साथ) मै ! —मुझसे न होगा !—मैं कहता हूँ।

माध्यु : यह न होगा—हमारी इच्छा है कि आप आयें !

परमु : (निश्चयपूर्वक) मुझसे न होगा। इस बुढापे में !

माध्यु : गोपालन तुम्हारी क्या राय है ?

गोपालन : आज की मीटिंग में पिताजी को भी जाना होगा। (परमुपिल्ला फिर सिर हिला कर कहते हैं, यह न होगा।)

कल्याणी : आप भी जरा क्यो नहीं चलते ? (परमुपिल्ला उसकी ओर देखते है)

मीना : हम भी चलें, पिताजी !

(परमुपिल्ला मीना की ओर भी पहले की तरह देखते है)

पप्पु : (दृढतापूर्वक) आज की मीटिंग में आपको चलना ही होगा !

करम्बन : हुजूर चलिये न। . .

(परमुपिल्ला पप्पु की ओर दयापूर्वक देखते है)

परमु : (पत्नी की ओर इशारा करके) इनके आने की जरूरत नहीं।

कल्याणी : मैं नहीं आती।

गोपालन: माँ मत जाओ।

मोना: मैं भी चलूँ पिताजी....

(परमुपिल्ला गुस्से से उसकी ओर देखते हैं।)

पप्पु: बच्ची को भी आने दीजिये, न!

परमु: (पप्पु से) किसी की लात खायेगी, पप्पु!

पप्पु: मीटिंग में!

परमु: (बेटी को सान्त्वना देते हुए) बेटी—मैं तुम्हें मन्दिर में उत्सव के लिए ले चलूँगा।

पप्पु: (मजाक करके) हां—लात-जूता न खाने के लिए अच्छी जगह है!

(माथ्यु वगैरह हँसते हैं।)

परमु: अरी कल्याणी!—तुम कुछ जड़ी-बूटी लाओ और इसे कूट कर और छान कर उसका पाव भर रस निकाल कर इसे दे दो न!

माथ्यु: हमने डाक्टर को बुलवा कर दवादारू करा दी है।

पप्पु: अंग्रेजी दवा है न!

परमु: (हाथ हिलाकर और असहमति जाहिर करते हुए) कोई भी अंग्रेजी दवा हो, इस जड़ी का गुण कुछ और ही है!

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : १२

[वही पिछला दृश्य। दूसरा दिन। सुबह का समय। माला के कन्धे के बल गोपालन लंगड़ाते-लंगड़ाते झोंपड़ी से निकल कर आता है। माला सिर झुका कर गोपालन के बराबर चल रही है। दोनों के चेहरे पर दुःख की छाप है। धीरे-धीरे चल कर गोपालन आंगन में पड़े बेंच पर बैठता है।]

माला : (गोपालन के चेहरे की ओर बिना देखे ही) चटाई और तकिया ले आऊँ ?

गोपालन : (माला के चेहरे पर दृष्टि न डालकर) नहीं। ऐसे ही बैठ जाऊँगा।

माला : (गोपालन के चेहरे की ओर दर्द और कुछ असमंजस के साथ नजर डालते हुए) कुछ कंजी ले आऊँ ?

गोपालन : (पहले की तरह देखकर) नहीं !

(गोपालन सिर नीचा करके बैठा है। माला मुँह घुमाकर जैसे दूर किसी चीज पर दृष्टि डाले मौन बैठी है।)

गोपालन : (मन की कोई बात बाहर लाने के लिए बेचैन होकर) माला ! —

(माला गोपालन के चेहरे की ओर देखती है। दोनों की चार आँखें हो जाती हैं। दोनों आँखें इधर-उधर कर लेते हैं। गोपालन पहले की तरह झुककर जमीन पर और माला पहले की तरह अपना धधकता हुआ हृदय संभाल कर मुँह घुमाकर दूसरी ओर देखती है। कुछ देर के लिए फिर खामोशी छा जाती है।)

गोपालन : उसी अवस्था में बैठे-बैठे जमीन की ओर देखते हुए ही अपने को संभालकर) तुम मुझे माफ कर दोगी, माला !

(माला की आँखें भर आती है। धीरे-धीरे वह चेहरे पर गंभीरता लाकर बिना संकोच के गोपालन के चेहरे पर भरी आँखों से देखती है।)

माला : (उसी प्रकार देखते हुए) क्यों ?

(गोपालन जवाब न पाकर उसकी आंखों की ओर देखता है। वह मुँह घुमा लेती है दांतों से अपने होठ काटती है।)

गोपालन (याचना करने के स्वर में) तुम मुझे माफ कर देना!

माला (फिर धीरज धर कर गोपालन के मुँह की ओर देखते हुए) कामरेड, आपने मेरे साथ कोई गलती नहीं की।

गोपालन नहीं, मैंने गलती की! मैं—पहले ही नहीं समझ सका!

माला (अपने को सभालते हुए) यह बात कहने की जरूरत नहीं। मैं कजी ले आऊँ?

गोपालन (अपने मन का भाव हल्का करने के लिए कोई बात कह डालने का प्रयत्न करके) माला, जिस तरह मैं मीना से प्रेम करता हूँ, वैसे ही तुम से भी प्रेम करता हूँ!

माला मीना जैसे आप से प्रेम करती है, वैसे ही मैं
(कंठ गदगद होने से बात रुक जाती है।)

गोपालन (आंखें पोछकर) माला!
(माला लम्बी सांस लेकर अपने रुदन को फूट निकलने से रोकने की कोशिश करती है।)

गोपालन माला—मैं अपनी जिन्दगी में पहली बार अब दर्द का अनुभव करता हूँ!

माला (आँसू पोछती हुई) आप परेशान हो रहे हैं, उसीसे मुझे भी परेशानी है।

गोपालन तुम्हारे अच्छे मन को यही सूझेगा! (कुछ देर तक कोई बात सोच कर) शायद—(तनिक देर और उसी स्थिति में बैठकर) अगर यह बात पहले ही मालूम हो गयी होती—(एकाएक ज्यादा अस्वस्थता का अनुभव करके) नहीं—उस तरह सोचना ही ठीक नहीं है!—(एकदम अस्वस्थ होकर) मैं लाचार हूँ, माला!

माला शुरू में—मैंने नहीं सोचा था कि इस चीज को किसी को जताऊँ। मैं जानती थी कि मेरा विचार गलत है!

गोपालन (एकाएक) सो क्यों?
(माला मौन धारण करती है।)

रो पडी। मैंने गलती की थी। इस बात को मैं पहले भी जानती थी, लेकिन फिर भी रो पडी !

गोपालन : (लाचार होकर) पहले क्या सोचा था ?

माला : (कहने मे जरा सकोच करते हुए) यह कि मुझे आपको पाने की आशा *नहीं करनी चाहिए थी ! सुमन के मामले के बारे में जानने के पहले ही मैंने सोचा था ! मैं पढी-लिखी नहीं हूँ। मैं एक . . .(फूट फूट कर रोने लगती है)*

(गोपालन बेंच पर मुँह नीचा करके लेट जाता है। वह अपने पर काबू पाने की कोशिश करता है। माला रोना काबू मे करना असमव पाकर झोपडी के अन्दर चली जाती है .. कुछ मिनट इसी तरह गुजर जाते हैं।

गोपालन धीरे धीरे उठ कर बैठता है। बहुत ज्यादा सोचने के भाव मे किसी चीज की ओर लगातार देखता वह मूर्ति की तरह बैठा है। चेहरे से लगता है कि जैसे किसी फैसले पर आ गया हो, लेकिन यह कहना कठिन है कि चेहरे पर कौन सा विचार है।

माला, दु ख दूर करने की कोशिश करती हुई, गभीरता का भाव चेहरे पर लाकर झोपडी से निकल आती है)

माला . मैंने गलत बात कह दी !—मुझे माफ कीजियेगा !

गोपालन . (मानो काठ की पुतली बैठकर बात कर रही है) नहीं, तुमने कोई गलत बात नहीं कही।

माला · (फिर बढते हुए गहर दु ख का दूर करने की वृथा कोशिश करके) नहीं—मैंने ही गलत बात कही—कहिये कि मुझे माफ कर रहे हैं !

गोपालन · (पहले की तरह) तुमने कोई गलत बात नहीं कही !

माला · *(यह भाव परिवर्तन अपने प्रति, अपनी कही हुई बात से हुआ है यह* सोचकर और खिन्न होकर दीनतापूर्वक) कहिये, मुझे आप माफी देते हैं !

गोपालन : *(काठ की पुतली की तरह) माफ करता हूँ।*

(माला इस माफी से सतुष्ट नहीं होती। गोपालन में जो परिवर्तन हुआ है, यह माला ज्यादा अच्छी तरह से देखती है। विकार को नियन्त्रित करके और जान बूझ कर विषय बदल कर)

माला : **कंजी ले आऊँ ?**

गोपालन : (पहले की तरह) **नहीं चाहिए।**

माला : (मजबूर करने के अभिप्राय से) **कजी खा लीजिये !**

गोपालन : (पहले की तरह) **अच्छा, खा लूँगा !**

(माला फिर गोपालन की ओर गौर से देखकर झोपडी के अन्दर चली जाती है। गोपालन उसी तरह बैठा है। कुछ देर के बाद माला कजी और साग लाकर गोपालन के सामने रख देती है।)

माला : **कंजी खा लीजिये।**

(गोपालन मशीन की तरह कजी खाने लगता है।)

माला . **साग नहीं चाहिए ?**

(गोपालन साग खाने लगता है।)

माला : **कंजी खा डालिये।**

(गोपालन मिट्टी का बर्तन ऊपर करके कजी खाता है। माला पानी लाकर देती है। गोपालन मशीन की तरह उससे हाथ धो लेता है।)

माला : (कुछ देर तक चुप रहने के बाद) **बीड़ी नहीं चाहिए ?**

गोपालन : (पुतली की तरह) **बीडी चाहिए।**

(माला बीडी और माचिस लाकर देती है, गोपालन पहले की तरह बीडी जलाकर पीने लगता है।)

माला : (गोपालन में हुए इस परिवर्तन को गौर से देखकर, विनय भाव से) **क्या बात है—कुछ अजीब से दिखाई देते हैं ?**

गोपालन (यन्त्रवत बात करते हुए) **कुछ नहीं।**

(माध्यु हँसते हुए प्रवेश करते हैं। चेहरे पर रात को जागने की थकावट है। उनके कपडे काफी मैले हैं।)

माध्यु : (हँसते हुए) ससुर का इनाम कैसा रहा ?

(गोपालन हँसता है—लेकिन मुर्दे के हँसने की तरह)

माध्यु : (बेंच के एक छोर पर बैठकर) मीटिंग की बातें मालूम हुईं ?

गोपालन : (पहले की तरह) मालूम हुईं।

माध्यु : (माला की तरफ देखकर) करम्बन कहाँ गया, माला ?

माला : काम पर।

माध्यु : हाँ, कल तो हड़ताल थी। (घूम कर गोपालन से) दर्द-वर्द कम है कि नहीं ? कोई खास तकलीफ तो नहीं हुई न ?

गोपालन : नहीं।

माध्यु : (प्रसन्नतापूर्वक) कलवाली मीटिंग काफी जोरदार थी ! अनुमान तो पचास हजार का लगाया जा रहा है। कम-से-कम तीस हजार लोगों ने हिस्सा जरूर लिया होगा। पूरा ब्यौरा मिल गया न ?

गोपालन : (उसी प्रकार यन्त्रवत्) मालूम हो गया।

माध्यु : (खुशी के साथ) तुम्हारे पिताजी अब एकदम बदल गये हैं। उनके गले में एक लाल माला भी पहना दी गयी ! वहाँ का नजारा देखने पर उनकी आँखें भर आईं ! उससे अब क्या हुआ, यह मालूम है न ?—कलतक तो तुम अपनी माँ के बेटे थे—आज पिता के भी पुत्र हो गये ! अभी मैं घर से ही आ रहा हूँ।

गोपालन : ऊँ—

माध्यु : (यह देखकर कि इन सब बातों को सुनकर गोपालन विशेष प्रसन्न नहीं हुआ, उसके चेहरे पर देख कर उसे दोष देने के अभिप्राय से) तुम तो लकड़ी की तरह बैठे कठपुतली की तरह देख रहे हो, क्या बात है ?

गोपालन : (पहले की तरह) कुछ नहीं।

माध्यु : कुछ तकलीफ है क्या ?

गोपालन : नहीं।

माध्यु : (फिर उत्साह में आकर) हाँ, कल मुमम के व्याख्यान ने ही मैदान मारा

था। इस बीच में--पता लगा होगा तुम्हें--केशवन नायर ने उसे पकड़कर बांध कर घर में बन्द करने तक की कोशिश की ! जब तुम्हें पिटवाने का जिक्र आया तो लाउड स्पीकर के सामने खड़ी होकर वह चीखकर रो पड़ी ! उसने मीटिंग में बैठे हुए लोगों को रुला दिया।

गोपालन : ऊँ हूँ...

माथ्यु : (गोपालन को सन्देह से सिर से पैर तक गौर से देखने के बाद) मामला क्या है ?

गोपालन : (यकायक से) कौन-सा ?

माथ्यु : (चेहरे पर सन्देह का भाव लाकर) तुममें कुछ अनोखा परिवर्तन दिखलाई देता है। तुम्हारा इस तरह ताकना देखकर मुझे डर लगता है।

गोपालन : (मुर्दे की तरह हँसते हुए) नहीं, कोई बात नही है।

माथ्यु : (दोष देने के अभिप्राय से) कोई बात नहीं है ! तुम मुर्दे की तरह क्यों हँस रहे हो !

गोपालन : (पहले की तरह) नहीं।

माथ्यु : तुम क्या बात कर रहे हो ? (उनका सन्देह दृढ़ हो जाता है) गोपालन की ओर देखने के साथ ही कुछ सोचते हुए), कल सोये नहीं क्या ?

गोपालन : सोया था।

माथ्यु : फिर ?

(माथ्यु उठकर एक दो बार इधर-उधर टहलते है। एक बीडी जलाते हुए कोई चीज सोचते हैं। बीच-बीच में गोपालन को सिर से पैर तक देखते है। एकाएक रुककर .)

माथ्यु . माला ?

माला : क्या है ? (माला आती है, उसका चेहरा रोने से फूला हुआ है।)

(गोपालन सब चीजें पुतली की तरह देखता रहता है।)

माथ्यु · (माला की ओर एक बार जाँच करने के अभिप्राय से देखकर) क्या बात है ? गोपालन कुछ अजीब-सा दिखाई देता है !

माला (गुनहगार की तरह जरा घबडाती हुई) मालूम नहीं।

माध्यु इसने कजो खा ली ?

माला खा ली।

माध्यु (तनिक सोचकर माला से धीरे से) तुम लोगों के बीच कोई बात हुई ?
(माला, अपराधिन की तरह जमीन पर दृष्टि डालकर परेशानी जाहिर करती है।)

माध्यु (बात समझ मे आ जाने के अभिप्राय से, कुछ चलकर, फिर घूम-कर अत्यन्त स्नेहपूर्वक माला से) जरा भीतर चली जा, बहन !

(माला धीरे धीरे चलकर अन्दर चली जाती है।)

माध्यु (धीरे धीरे चलकर गोपालन के सामने आकर खडे होकर एक पैर बेंच पर रखकर उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखते हैं, आज्ञा देने के स्वर मे) अरे !

गोपालन (आज्ञाकारी बालक की तरह) हाँ !

माध्यु (बात की गभीरता का ज्ञान होने से आये क्रोध के साथ) तुम लोग क्या कर रहे हो ?

गोपालन (पहले की तरह) कुछ नहीं !

माध्यु (क्रोधपूवक) कुछ नहीं—कुछ नहीं ! यहाँ कोई गडबडी हो तो तुम्हें कुछ नहीं। लेकिन—यदि तुम ऐसे हो जाओ, तो हमें कुछ जरूर है,
(फिर टहलने लगते हैं।)

(गोपालन पहले की तरह मौन हो जाता है।)

माध्यु (फिर खडे होकर गभीरतापूवक) तुम लोग ये जो हरकतें कर रहे हो, इसका क्या मतलब है ?

गोपालन (कुछ डर कर पहले की तरह) मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ।

माध्यु (गभीरतापूवक जानबूझकर) तुम लोग कुछ नहीं कर रहे हो, यह तो म देखता हूँ। (गभीरता भरे लेकिन घृणापूण भाव म) तुम प्रेम नाटक खेलने में लगे हुए हो। तुम्हारी माँ-बहनो को वे घर से बेदखल करने जा रहे हैं। तुम इस चीज को जानते हो। पुलिस और मुखिये

तरह चिन्तामग्न बैठे सोचते रहत है। गोपालन मौन धारण कर लेता है। कुछ देर के बाद माथ्यु गोपालन के और नजदीक आ जाते हैं।)

माथ्यु *अरे—हमें बहुत कुछ तैयारी करनी होगी। मैं एक सयुक्त लडाई की* योजना तैयार कर रहा हूँ। उसके पहले तुम्हारी और सुमम की शादी हो जानी चाहिए। उसकी हालत कुछ ऐसी हो गई है कि वह अब वहा रह नहीं सकती। यह शादी तो हो ही जानी चाहिए।

गोपालन (एकाएक) नहीं, नहीं हो सकती!

माथ्यु क्या नहीं हो सकती?

गोपालन मेरी और सुमम की शादी!

माथ्यु क्यो नही?

गोपालन नहीं हो सकती!

माथ्यु *(व्यग्र होकर)* क्यो? वजह बताओ, कामरेड!

गोपालन (बिल्कुल यन्त्रवत) मैंने माला से शादी करने का फैसला कर लिया है!

माथ्यु (एकाएक रुख बदलकर और सख्त गुस्से म आकर) बदमाशो की बात मत कीजिये, कामरेड! यह बेईमानी है! (अपने अनियन्त्रित क्रोध *को काफी कोशिश करके नियन्त्रित करते है।)*

गोपालन (रत्ती भर भी विचलित हुए विना) नहीं, यही मेरा फैसला है!

माथ्यु (उसी स्वर मे) फैसला करनेवाले तुम कौन होते हो जी? तुम जो फैसला करोगे, वह चलेगा भी? तुम्हें शरम तो नहीं आती! जिस वक्त तुम नहीं चाहोगे उस वक्त छोडने और जिस वक्त तुम चाहोगे उस वक्त चलाने के लिए तुम्हारे? समझो कि वह एक मजदूर लडकी है। (झोपडी म से माला के फूट-फूट कर रोने की आवाज सुनाई देती है।)

माथ्यु (उसी बढी हुई गभीरता क साथ) माला!

(माला फौरन झोपडी के बाहर आ जाती है। उसके गालो पर से आँसू बहते रहते हैं।)

माला (माथ्यु से अनुनय विनय करने के अभिप्राय से) कामरेड—अपराधी मैं हूँ! मुझे माफ करें।

गोपालन : (पूर्ववत्) नहीं।

माध्यु . (दर्द के साथ) तुमने कौन-सी गलत बात कही ?

माला . बात करने के बीच में मैं कह गयी—मेरी और कामरेड की बात न बढने पाये यह पहले ही मैंने सोच लिया था—(कंठ गद्गद हो जाने से कह नहीं पाती ।)

माध्यु · इत्मिनान के साथ अपनी बात कहो, बहन !

माला : मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, मुझ में समझ नहीं है और—मैं एक . . (फूट-फूट कर रोने के बीच) मैंने ही गलत बात कही थी—उसी वक्त से . . (गोपालन पहले की तरह कठपुतली की तरह बैठा है। माध्यु, क्या करें, यह न समझकर चुप खडे हैं। माला चीख-चीख कर रो रही है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : १३

[केशवन नायर की कोठी। केशवन नायर अत्यधिक अस्वस्थ और क्रुद्ध हो कर कमरे में टहल रहा है। वेलु अंगोछा कमर में बाँधे अत्यन्त ही विनय के साथ एक किनारे हट कर खड़ा है।]

केशवन नायर : (एकाएक खड़े होकर) भिखमंगे! पाजी! (दुःख और क्रोध मिश्रित भाव से वेलु से) अरे, तुमसे एक कौड़ी का फायदा मुझे नहीं है, और मुझ पर आफत आने पर मेरी मदद करने के लिए एक भी प्राणी नहीं है।

वेलु : (विनयपूर्वक) हुजूर, मैं क्या करूँ! आप जो हुकुम देते हैं, क्या मैं उसका पालन नहीं करता! (समझाने-बुझाने के अभिप्राय से) वैसे कोई आफत नहीं आयी है। और कभी आयेगी भी नहीं, ईश्वर की कृपा से!

केशवन नायर : (गुस्से में आकर घूमकर खड़े होकर) दूर हो—मुझपर कोई आफत नहीं आई! (क्रोध और निराशा मिश्रित भाव में) एक मामूली पुलय की झोपड़ी गिरा देने का काम भी तुझसे हो सका? बता तो!

वेलु : (बहुत ही विनय और दोषी के भाव में) बाहर जो कुछ हो रहा है, उसका आपको जरा भी पता नहीं है—इसीलिए आप ऐसी-वैसी बातें कर रहे हैं! जब मैं लोगों की नजर में पड़ जाता हूँ, तो वे इस तरह मेरी ओर देखते हैं, मानों मैं कोई खूँखार जानवर हूँ! कुछ लोगों की बातें सुनता हूँ तो लगता है सात तालाबों में स्नान करूँ, तब भी बदन की बदबू न छूटेगी!

केशवन नायर : तो तू भी जा—उन सब के पीछे! जो भी हो, मैंने बिस्तर समेट कर यहाँ से कहीं जाने का फैसला नहीं किया है!

वेलु : वेलु नमकहराम नहीं है। (इस अभिप्राय से खड़ा है, मानो बहुत ही काम करने वाला है।)

केशवन नायर : (एकदम निराश होकर) अरे, तुम्हारी कोशिश करने पर इस इलाके में दस जने भी नहीं मिल सकते ? पैसा जितना भी चाहें, मैं खर्च करने को तैयार हूँ।

वेलु : (निस्सहाय होकर) हुजूर, मैं क्या करूँ ? उस गोपालन को पीटने के लिए आये हुए लोगों को क्या मैं बुलाकर नहीं लाया था ! वे अब उलटे मुझे पीटने पर तुले हुए हैं। वे कहते हैं कि आइन्दा ऐसे काम के लिए मैं बुलाने गया, तो वे मेरी कमर तोड देंगे। उस पाच्चू और कम्यु निस्ट-विरोधी-मोर्चे के जोसेफ को मैंने जाकर बुलाया नहीं था क्या ? आप जानते हैं न कि विरोधी-मोर्चे का जोसेफ कौन है ?

केशवन नायर : (गुस्से मे) तुम्हारा बाप है !—

वेलु : नहीं—आधा प्याला शराब के लिए कुछ भी करने के लिए सकोच न करनेवाला है वह। अब वह भी आने से इनकार करता है !

केशवन नायर. अरे, इस बिगडे इलाके में ही तुम्हें आदमी नहीं मिलता ! बाहर से चाहो तो क्या दस आदमी भी नहीं ला सकते ?

वेलु · अब बस यही देखना है। (एकाएक निराश भाव से) नहीं हुजूर, लोग कहते हैं कि सभी जगह ऐसी ही हालत है।

केशवन नायर : कौन कहता है ?

वेलु : सभी लोग कहते हैं। इस कमबख्त चुनाव के आने के साथ-साथ पाजी लोगों का दिमाग चढ गया है।

केशवन नायर : उन सब को मैं ठीक कर दूँगा ! अरे—तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं। तुम उनके हाथों मार खा सकते हो ! खैर, अब सब मैं ही देख लूँगा।

वेलु · (कठिनाई से) उसके लिए वे मुझे पीटें भी, तब न ! मैं हमेशा उन्हीं के साथ घूमता फिरता रहता हूँ न ! उस दिन मैं महमूद की चाय की दूकान के सामने से गुजर रहा था, उस वक्त दूकान के अन्दर बैठा हुआ एक शख्स—हुजूर (केशवन नायर की ओर

घूम कर) कहने लगा 'अरे हरामी—तेरा तो सिर पकड़ कर सड़क पर रगड़ना चाहिए—फिर भी तेरे साथ कुछ करने के बजाय कुत्ते के साथ कुछ करना बहतर होगा—' मैं क्या करूँ हुजूर ?

केशवन नायर : (निराशा से) इससे कोई काम करने के लिए कहूँ और यह न समझे, तो ! (दूसरी किसी बात का स्मरण करके) अच्छा, —तुमने उस पप्पु से जमीन खाली करने की बात कही थी ?

वेलु : जी, कही थी।

केशवन नायर : तब उसने क्या कहा ?

वेलु : (जरा असमंजस में पड़कर) उसका रुख कुछ ऐसा है कि लगता है वह जमीन खाली करनेवाला नहीं है।

केशवन नायर : (नियंत्रित क्रोध के साथ) उसके खाली करने की जरूरत नहीं !

वेलु : (इस अभिप्राय से कि एक आफत टल गयी) नहीं है !

केशवन नायर : (वेलु की ओर झपटकर) नहीं है !

वेलु : (परेशान होकर) नहीं है...!

केशवन नायर : फौरन उसकी जमीन ले लेनी चाहिए।

वेलु : (डरकर) पप्पु की !

केशवन नायर : सिर्फ पप्पु की ही नहीं—सब की ! भीख माँगने दो उन सबों को !

वेलु : हुजूर—मेरे मन में एक खयाल आया है !

केशवन नायर : हट यहाँ से !—तू और तेरा खयाल !

वेलु : हुजूर, जरा सुन तो लीजिये !—हमें अपने पुआलघर में आग लगा देनी चाहिए, हुजूर !

केशवन नायर : (वेलु की ओर देखकर) हूं ! न सिर्फ मेरे पुआलघर में, बल्कि मेरी कोठी में भी आग लगा देनेवाले हो तुम लोग !

वेलु : आप इस बात को पूरा सुन तो लीजिये !—हम अपने पुआलघर को फूंक दें—कल सबेरे हुजूर जाकर पुलिस को इत्तिला कर दें। साथ ही इस बात का एक मुकदमा भी दायर कर दें

है—वेलु डर के मारे पीछे हटकर श्रोझल हो जाता है।)

(केशवन नायर सुधबुध खोये हुए श्रादमी की तरह 'मुझे कोई नही चाहिए—मुझे कोई नहीं चाहिए—' चिल्लाता हुआ इधर-उधर घुमता है। एकाएक खड़े होकर— 'उसे आज ही इस्तीफा देना होगा' कहकर 'सुमम—सुमम' पुकारआ हुआ अन्दर चले जाता है। कुछ देर के बाद सुमम को धक्के देता हुआ लाता है। सुमम एकदम शिथिल दिखाई देती है। उसके बाल बिखरे हुए हैं, गालो पर आँसू बह रहे हैं। लेकिन उसकी आँखें उज्वल हैं; चेहरे पर चचलता नही है।)

केशवन नायर : (गरजते हुए) अरी—तू इस्तीफा देगी कि नहीं?

सुमम : (हाथ बांधकर खड़ी है, दृढतापूर्वक) नहीं!

केशवन नायर : नहीं—?

सुमम : नहीं!

केशवन नायर : तो अब तेरी जान भी नहीं बचेगी—अपनी मां के पीछे तू भी जायेगी। उसने मेरे फंसले को चुनौती दी थी और इसीलिए उसे सबक सीखता पड़ा था—वह खून थूकती मरी थी।

सुमम : माँ भाग्यवती थी।

केशवन नायर : वह भाग्य तुमे भी अब मिल जायेगा। नहीं तो तुझे इस्तीफा देना होगा!

सुमम : (उसी अवस्था मे, दृढतापूर्वक) नहीं पिताजी, उसकी कोशिश मत कीजियेगा। सो न होगा!

(खुलकर दिये इस जवाब ने केशवन नायर को हताश कर दिया। उसमे क्रोध की जगह क्रमशः दर्द और दुख घर कर लेता है।)

केशवन नायर : तुम्हारे पिता तुमसे कह रहा है!

सुमम : जी हाँ, मेरे पिताजी कह रहे हैं।

केशवन नायर : तुम्हारी मां के मर जाने के बाद तुम्हारा बाप और माँ सब मैं ही रहा हूँ, जानती हो तुम!

सुमम : जी हां, अच्छी तरह--(वह भी दुखी हो जाती है ।)

केशवन नायर : तुम्हारी भलाई के लिए ही मैं यह सब तुमसे कह रहा हूँ !

सुमम : (फिर हिम्मत के साथ) पिताजी, आप मेरी भलाई के लिए नहीं कह रहे हैं।

केशवन नायर : (बढ़े हुए दुःख के साथ) मेरा तो, इस संसार में, तुम्हारे सिवा कोई नहीं है।

(सुमम चुप खडी है।)

केशवन नायर : यदि मैं बीमार पड़ जाऊँ, तो दवादारु के लिए भी कौन है?--

(सुमम उसी तरह चुप खडी है।)

केशवन नायर : बेटी कर्ताव भैया का बेटा तुम्हारा पति होने लायक व्यक्ति है !

सुमम : मुझे पसन्द नहीं है, पिताजी।

केशवन नायर : मैं तुम्हारी बुराई के लिए कह रहा हूँ, क्या?

सुमम : (फिर धैर्य धारण करके) यह तो मेरी बुराई के लिए ही है !

केशवन नायर : फिर मैं मुसीबत उठाकर जो कमा रहा हूँ, वह सब किसके लिए है ?

सुमम : मेरे लिए नहीं है !

केशवन नायर : (ऊँचे स्वर में) मैं किसलिए यह बदनामी मोल ले रहा हूँ कि झूठे दस्तावेज लिखवानेवाला और चोर बाजारी करनेवाला वगैरह ?

सुमम : (उसी स्थिति में, ऊँचे स्वर में) मेरे लिए नहीं। झूठे दस्तावेज लिखवाकर जमीन इकट्ठा करना मेरे लिए नहीं । गरीबों को जमीन-जायदाद छीनना मेरे लिए नहीं। अच्छे लोगों को मरवा डालना मेरे लिए नहीं।

केशवन नायर : (एकाएक रुख बदलकर क्रुद्ध भाव में, दबी हुई आवाज में) हिश, तुम बेवकूफों की तरह बात कर रही हो !

सुमम : मैं अभी तक बेवकूफ थी।

केशवन नायर : अब तुम कुछ ज्यादा होशियार हो गई हो ?

(पप्पु आंगन में प्रवेश करता है।)

केशवन नायर : हूँ, कौन है ?

पप्पु : मैं हूँ !

केशवन नायर : (बढ़े हुए गुस्से में) मैं माने कौन ?

पप्पु : (विनय के साथ) पप्पु !

केशवन नायर : चल हट यहाँ से !

(पप्पु विनयपूर्वक हाथों को छाती पर बांधे, मगर संभल कर खड़ा है।)

केशवन नायर : (सुमम के पास आकर क्रोध में आकर) अरी—आँगन में कौन खड़ा है ?

(सुमम पप्पु की तरफ देखती है।)

केशवन नायर : (उसी स्थिति में बढ़ते हुए क्रोध भाव से) अरी, कौन है यह ?

सुमम : पप्पु !

केशवन नायर : (धीरे-धीरे एक राक्षसी रूप धारण करता है) अरी—वह तुम्हारा कामरेड है क्या ?

सुमम : (बिना परवाह के) जी हाँ !

केशवन नायर : क्या कहा ?

सुमम : जी, हाँ !

केशवन नायर : (गरजते हुए) ठीक है ! तो इतनी जोर से कहो कि वह भी सुने कि तुम पार्टी से इस्तीफा दे दोगी !

सुमम : (केशवन नायर का वर्ताव देखकर डर जाती है, लेकिन बिना परवाह के) जी, नहीं !

केशवन नायर : (चकित कर देनेवाली जोर की आवाज में) नहीं !

सुमम : (बिना केशवन नायर के चेहरे पर दृष्टि डाले ही जोर से) नहीं !

केशवन नायर : (भीषण रूप धारण करके) तुम मरने जा रही हो !

सुनम : मुझे मृत्यु का भय नहीं है।

सुमम : जी हाँ, अच्छी तरह---(वह भी

केशवन नायर : तुम्हारी भलाई के लिए ही मैं यह

सुमम : (फिर हिम्मत के साथ) पिताजी,
कह रहे हैं।

केशवन नायर : (बढ़े हुए दुःख के साथ) मेरा
कोई नहीं है।

(सुमम चुप खड़ी

केशवन नायर : यदि मैं बीमार पड़ जाऊँ, तो

(सुमम उसी तरह चुप

केशवन नायर : बेटी कर्तावि भैया का बेटा
है।

सुमम : मुझे पसन्द नहीं है, पिताजी

केशवन नायर : मैं तुम्हारी बुराई के लिए

सुमम : (फिर धैर्य धारण करके)

केशवन नायर : फिर मैं मुसीबत उठाकर
है?

सुमम : मेरे लिए नहीं है!

केशवन नायर : (ऊँचे स्वर में) मैं किसलि
झूठे दस्तावेज लिखवानेमा
वगैरह?

सुमम : (उसी स्थिति में, ऊँचे स्वर में)
लिखवाकर जमीन इकट्ठा करना
जमीन-जायदाद छीनना मेरे लिए न
डालना मेरे लिए नहीं।

केशवन नायर : (एकाएक रुक उठकर क्रुद्ध भा
हिए, तुम बेवकूफों की तरह बात क

सुमम : मैं अभी तक बेवकूफ थी।

केशवन नायर : छोः—कुतिया ! तू मेरी दुश्मन है। (पासवाली कुर्सी खींचकर) अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा। (गरजता हुआ उसे मारने के लिए कुर्सी तान लेता है।)

(सुमम अपना चेहरा अपने हाथों से ढककर 'हाय' कहकर चिल्ला उठती है। इस बीच में पप्पु दौड़कर चबूतरे पर चढ आता है। 'खबरदार, मारना मत !' कहकर वह कुर्सी पकड लेता है। केशवन नायर पप्पु के निकट आ जाता है। पप्पु कुर्सी छीन कर दूर फेंक देता है और गरज कर कहता है 'हिलो मत, नहीं तो मार डालूँगा !' केशवन नायर डर के मारे, चकित होकर पीछे हट जाता है। पप्पु 'चल—कच्ची—आ' कहकर सुमम को बुलाकर ले चलता है। सुमम रोती हुई पप्पु के साथ चली जाती है। केशवन नायर उसी अवस्था में खड़ा निस्सहाय होकर ताक रहा है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : १४

[परमुपिल्ला का घर। पूरब वाले आँगन में पप्पु और परमुपिल्ला पास-पास आमने-सामने बैठे बातचीत कर रहे हैं। दोनों के बीच में पानदान रखा हुआ है। दोनों उसमें से पान लेकर बनाकर खा रहे हैं। शाम का समय।]

परमु (मानो पप्पु की बातों में विश्वास न हुआ हो) तो भी ! कोई बाप ऐसा कर सकता भी है पप्पु ?

पप्पु ओहो ! वह भी एक पिता जो ठहरे ! (घटना का ज्यादा विस्तृत वर्णन करने के अभिप्राय से) तो पहले वेलु ने आकर इत्तिला दी थी कि मुझे वहाँ जाना होगा ! मैं जानेवाला था नहीं। हमारे कामरेड माध्यु ने कहा कि वहाँ हो आओ। उन्होंने यह भी कहा कि वहाँ जो हो रहा है मैं उसका भी पता लगाऊँ।

परमु (माध्यु की प्रशंसा करते हुए) अच्छे आदमी हैं न ! अनुमान लगा लिया होगा कि कुछ गड़बड़ी होगी, इसीलिए तुम्हें भेज दिया था।

पप्पु मीटिंग के बाद उस बच्ची को बंद करके रखा रहा होगा !

परमु हाँ—तुमने तम्बाकू लिया ?

(माध्यु एक हल्की हँसी के साथ प्रवेश करते हैं।)

माध्यु दोनों मिल कर ! क्या—?

(माध्यु को देखकर पप्पु और परमुपिल्ला उठ खड़े होते हैं।)

परमु (बात काटकर) हम लोग उस छोटी लड़की की बात कर रहे थे !

माध्यु इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं। चाहे माँ हो या बेटी अपनी मर्जी के अनुसार काम न करे तो खतम कर दो ऐसी ही उन सब की सीख है।

परमु (माध्यु से) बेटा—तुम सब इधर चले आओगे तो उस बच्ची के पास कौन रहेगा ? खबरदार रहना !

केशवन नायर : छी —कुतिया ! तू मेरी दुश्मन है। (पासवाली कुर्सी खींचकर) अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा। (गरजता हुआ उसे मारने के लिए कुर्सी तान लेता है।)

(सुमम अपना चेहरा अपने हाथो से ढककर 'हाय' कहकर चिल्ला उठती है। इस बीच मे पप्पु दौडकर चबूतरे पर चढ आता है। 'खबरदार, मारना मत !' कहकर वह कुर्सी पकड लेता है। केशवन नायर पप्पु के निकट आ जाता है। पप्पु कुर्सी छीन कर दूर फेक देता है और गरज कर कहता है 'हिलो मत, नहीं तो मार डालूँगा !' केशवन नायर डर के मारे, चकित होकर पीछे हट जाता है। पप्पु 'चल—बच्ची—आ' कहकर सुमम को बुलाकर ले चलता है। सुमम रोती हुई पप्पु के साथ चली जाती है। केशवन नायर उसी अवस्था मे खड़ा निस्सहाय होकर ताक रहा है।)

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य : १४

[परमुपिल्ला का घर। पूरब वाले आंगन में पप्पु और परमुपिल्ला पास-पास आमने-सामने बैठ बातचीत कर रहे हैं। दोनों के बीच में पानदान रखा हुआ है। दोनों उसमें से पान लेकर बनाकर खा रहे हैं। शाम का समय।]

परमु (*मानो पप्पु की बातों में विश्वास न हुआ हो*) तो भी ! कोई बाप ऐसा कर सकता भी है पप्पु ?

पप्पु ओहो ! वह भी एक पिता जो ठहरे ! (घटना का ज्यादा विस्तृत वर्णन करने के अभिप्राय से) तो पहले वेलु ने आकर इत्तिला दी थी कि मुझे वहाँ जाना होगा ! मैं जानेवाला था नहीं। हमारे कामरेड माथ्यु ने कहा कि वहाँ हो आओ। उन्होंने यह भी कहा कि वहाँ जो हो रहा है, मैं उसका भी पता लगाऊँ।

परमु (माथ्यु की प्रशंसा करते हुए) अच्छे आदमी हैं न ! अनुमान लगा लिया होगा कि कुछ गड़बड़ी होगी, इसीलिए तुम्हें भेज दिया था।

पप्पु मीटिंग के बाद उस बच्ची को बंद करके रखा रहा होगा !

परमु हाँ—तुमने तम्बाकू लिया ?

(माथ्यु एक हल्की हँसी के साथ प्रवेश करते हैं।)

माथ्यु दोनों मिल कर ! क्या—?

(माथ्यु को देखकर पप्पु और परमुपिल्ला उठ खड़े होते हैं।)

परमु (बात काटकर) हम लोग उस छोटी लड़की की बात कर रहे थे !

माथ्यु इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं। चाहे माँ हो या बेटी, अपनी मर्जी के अनुसार काम न करे तो खत्म कर दो ऐसी ही उन सब की सीख है।

परमु (माथ्यु से) बेटा,—तुम सब इधर चले आओगे, तो उस बच्ची के पास कौन रहेगा ? खबरदार रहना !

पप्पु : बच्चों के साथ ?—मीना है—मीना की माँ है—गोपालन कामरेड है ! आप क्या समझे ! सुमम पप्पु के घर पर है। ये लोग बेशक पप्पु को ठीक तरह से नहीं जानते ! लेकिन आज कुछ जान गये हैं !

माध्यु : कुछ जान गये—है न ? तो आज ही तो वह दिन है न, जब वे तुम्हारी जमीन जब्त करने के लिए आनेवाले थे ?

पप्पु : (खूब हुआ, इस अभिप्राय से सिर हिलाकर) पप्पु की जमीन जब्त करने के लिए न ! घमण्ड भरी बातें करके अब वे सड़क पर नहीं निकलेंगे !

परमु : उनमें अब बेदखल वगैरह करने की हिम्मत नहीं रही है। (पप्पु से) तुम्हें अब वे बेदखल नहीं कर सकते हैं। गिलहरी के हिलाने से कहीं फल गिरता है पप्पु ! फिर भी ये गड़बड़ी करने के लिए कोशिशें कर ही रहे हैं !

माध्यु : सुमम से पता चला कि वे लोग अब भी पट्टे की जमीन काश्तकारों से छीनने और बेदखल कराने वगैरह की सोच रहे हैं।

परमु : वह लड़की तो बड़ी नेक और ईमानदार है !

(माध्यु और पप्पु हँसते हैं।)

माध्यु : हमारे कामरेडों की कद्र करने और आन्दोलन से प्रेम करने के लिए वह तैयार हो गयी है न ! उसने क्या-क्या मुसीबतें झेलीं !

पप्पु : गोपालन कामरेड उसको जान की तरह प्यारा है।

परमु : (एक शक दूर करने के अभिप्राय से) हाँ, क्या है पप्पु ?—ऐसी ही कुछ बातें सुनाई दे रही हैं !

माध्यु : (खुलकर) उसमें सुनने के लिए क्या है ! वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं ! बस, हमें यह शादी जहाँ तक हो सके जल्दी कर देनी चाहिए।

पप्पु : हाँ, यह शादी जल्दी ही कर देनी चाहिए।

परमु : हट ! शादी-शादी कहने से होगा ? उसके लिए कितनी ही चीजें सोचनी होती हैं ! तुम क्या जानो—तुमने कोई शादी कराई भी है ! (गंभीरतापूर्वक) अरे पप्पु,—कल्याणी और मेरी शादी पक्की होने में साढ़े सात महीने लगे थे !

माध्यु : (हँसते हुए) आजकल तो वह जमाना नहीं है न !

परमु : तब भी मेरे बच्चे, समय-मुहूर्त्त देखकर कोई अच्छा मुहूर्त्त वगैरह तो निकालना ही है, न ?

पप्पु : इस समय में क्या बुराई है !

माध्यु : ऐसी बात नहीं, पप्पु ! शुभ अवसर निकालने में वैसे खास कोई दोष होनेवाला भी नहीं है। इस शादी विवाह के मसले पर कितने परिवार बरबाद होते हैं, यह मालूम है ! उनके लिए यह शादी एक आदर्श शादी होनी चाहिए।

पप्पु (माध्यु की बात काट कर) ठहरो--ठहरो ! यहाँ की बात मैं कहूँगा। शादी तो जोरदार ढग से करेंगे ! लेकिन--लडकी के घर से निकलने पर कर्जे से तबाह हो जायेंगे !

परमु : तो तुम दोनो के कहने का तात्पर्य यह है क्या कि इस शादी में भी कम्युनिज्म होना चाहिए !

माध्यु (हँसत हुए) नहीं, यह तो हम वैसे ही करेंगे जैसे आप तय करेंगे।

परमु अरे, अब मुझे इसमें कौन-सी बात कहनी है ! जैसे तुम सब लोग फैसला करोगे, वैसा ही चलने दो। हाँ, जो भी हो, उसकी बीमारी दूर होने के बाद होना चाहिए ! (माध्यु से) आज उसकी तबीयत कैसी है, बेटा ?

माध्यु : उसे कोई तकलीफ नहीं है।

परमु वह जरा सुस्त था, अब ठीक है ?

माध्यु सो तो सुमम की बात को सोचकर हुई तकलीफ थी। वह दूर हो गई।

पप्पु कल रात को सुबह होने तक मैने माध्यु कामरेड को उन्हें काफी समझाते-बुझाते देखा था ! आज सबेरे से चुस्त हो गये !

(अन्दर से करम्बन आवाज देता है--'कामरेड-कामरेड')

परमु : (ध्यान से सुनकर) कौन है ?

(अन्दर से करम्बन--' मैं, हूँ करम्बन !')

परमु : (खुशी से) इधर आ जाओ करम्बन, भीतर आ जाना !

(करम्बन हँसता हुआ और परमुपिल्ला के प्रति विनय भाव प्रकट करता हुआ आता है। परमुपिल्ला करम्बन के पास जाकर स्नेहपूर्वक उसकी पीठ थपथपाते हैं।)

परमु : (प्रसन्नतापूर्वक हँसते हुए) क्या खबर है, करम्बन ?

करम्बन : (कुछ दुख के साथ) सुना है कि बेदखल करने के लिए आयेंगे। माला अभी आई नहीं है। जुलूस के लिए लोगों को इकट्ठा करने गई थी।

माध्यु : वे लोग अब झोंपडी वगैरह गिरायेंगे नहीं, करम्बन ! (पलभर सोचकर) हो सकता है हमारा प्रदर्शन न होने पाये इसकी वे कोशिश कर रहे हों !

परमु : (एकाएक ताव में आकर) नहीं होने देंगे ! —उसके हाथ-पैर हिलेंगे भी ! पप्पु ! (भावावेश से कुछ बेचैन सा होकर तेजी से टहलने लगते हैं।)

करम्बन : कामरेड के कहने के मुताबिक अपना जुलूस निकलने दीजिये।

पप्पु : आज का दिन जरा गुजरने दीजिये।

माध्यु : वे लोग अब सिर उठायेंगे ही नहीं करम्बन ! —पूरा देश हमारे साथ है। वे सब पागल हो गये हैं।

परमु : (एकाएक आगे बढकर दोष देने के अभिप्राय से) तुम लोग यहाँ खडे बातें ही बनाते रहोगे और वे अपना काम कर बैठेंगे !

माध्यु : उसकी हिम्मत अब उनमें नहीं है।

पप्पु : फिर भी बातें करते-करते इतना वक्त हो गया है न ! जुलूस निकलने का समय नहीं हुआ है क्या ?

माध्यु : हो गया, हमें फौरन चलना चाहिए।

पप्पु : मुझे एक बात कहनी है।

माध्यु : क्या ?

पप्पु : हमारे आज के जुलूस के आगे झण्डा लेकर (परमुपिल्ला की ओर इशारा करके) आपको चलना चाहिए।

(करम्बन सिर हिलाकर उसका समर्थन करता है। माथ्यु हँसकर अपनी सहमति प्रकट करते हैं।)

परमु : (कुछ सोचकर) मैं भी साथ चलूँगा। पानी में पैठने के बाद फिर तैरे बिना काम नहीं चलेगा। लेकिन आगे तुम लोगों में से किसी को रहना चाहिये जो चीजों को समझता हो। (करम्बन और पप्पु चुपके में कहते हैं कि वह नहीं होगा) जो भी हो, तुम सब लोगों ने मिलकर मुझे कम्युनिस्ट बना ही लिया है!!

माथ्यु : हम लोगों ने नहीं, आपकी जिन्दगी के तजुर्बों ने!

परमु : (भावावेश में आकर) जिस किसी ने भी हो, मैं तो अब वही हूँ!

पप्पु : यदि इसका पता चल जाये तो—वे सब लोग भी इधर चले आयेंगे।

परमु : (उसी हालत में) इधर—तो फिर वे और कहीं नहीं जायेंगे!

करम्बन : अब वे पुलिस को लेकर ही आयेंगे।

परमु : (बढ़े हुए आवेश में) किसी को भी ले आयें! हो सकता है कि गोली भी चला दें! आगे मैं रहूँगा! आगे मैं रहूँगा!! आगे मुझे रहना है!!!

गोपालन : (एकाएक प्रवेश करके माथ्यु से) जलूस का समय हो गया!

परमु : (अपने पुत्र के पास जाकर उसके अभी ठीक से न सूखे घावों पर हाथ फेरते हुए) जलूस वगैरह हम लोग चला लेंगे, बेटा! तुम्हें अब ये घाव सूखने के बाद ही निकलना चाहिए।

गोपालन : (प्रसन्न होकर) मेरे घाव सूख रहे हैं, पिताजी। हम सब लोगों के घाव सूख रहे हैं। उसकी दवा पिताजी पा गये हैं!

(माला एक लाल झण्डा लिये हुए प्रवेश करती है। परमुपिल्ला और करम्बन सबको एक साथ देखकर वह आनन्द से मुस्कुराती है।)

माला : जलूस आ गया है।

माथ्यु : उस झण्डे को जरा ऊपर करके पकड़े रहो माला—वह तुम्हारा झण्डा है!—तुम्हारे वर्ग का झण्डा है!!

गोपालन वह झंडा इस देश भर में लहराने जा रहा है !

(परमुपिल्ला चण्ड की ओर टकटकी लगाये आवेशपूवक देख रहे हैं।)

परमु (उसी आवेश म) बेटा, इस झण्डे को जरा इधर ला मेरे बेटे (माला के पास जाकर) वह झण्डा जरा मुझे दे, बेटी !—उसे मैं जरा अपने हाथ में पकडूँगा !—(दोनों हाथ बढ़ाकर माला से झण्डा लेकर उसे ऊँचा करके) इसे मुझे पकडना है !! इसे मुझे ऊँचा और ऊँचा करके पकडना है !!!

(बाहर जोरदार नारे लगाकर बढ़ते आनेवाले जुलूस की गूज ! माथ्यु पप्पु करम्बन गोपालन माला सब के सब उन नारों को बुलन्द करते है।)

(पर्दा गिरता है ।)

तोप्पिल भासी

जन्म— १९२३, वल्लिकुन्नम (त्रावनकूर)

सन् ४८ से साढ़े चार वर्ष तक फरार रहे। शूरनाड कांड के अभियुक्त के रूप में, १००० का पुरस्कार इनके लिए घोषित था। छ महीने जेल रहे। १९५४ और ५७ के चुनावों में केरल विधान-सभा के सदस्य चुने गये।

'एक कम्युनिस्ट का जन्म' (तुमने मुझे कम्युनिस्ट बनाया) नाटक ५२ में लिखा गया। ५९ तक 'मूलधन', 'पैमाइशी पत्थर', 'बिगडा लडका' इत्यादि नाटक छपे। ४००० बार से अधिक उनके नाटकों का अभिनय हुआ है। १९५९ में केरल साहित्य-अकादमी का पुरस्कार प्राप्त

एक रोचक आत्मकथा भी प्रकाशित